



MICROFINANCE INSTITUTIONS NETWORK

Consolidated Media Coverage Report

**Article_Microfinance Sector: a great support for low-income women
borrowers in uncertain times**

Date of Dissemination: September 29, 2020

Media Coverage Index

S. No.	Date	Publication Name	Edition
Madhya Pradesh			
1.	04.10.2020	Pradesh Times	Madhya Pradesh [All Editions]
2.	03.10.2020	Samay Jagat	Madhya Pradesh [All Editions]
3.	03.10.2020	Sandhya Prakash	Madhya Pradesh [All Editions]
4.	03.10.2020	Dainik Kausar	Madhya Pradesh [All Editions]
5.	03.10.2020	Fine Times	Madhya Pradesh [All Editions]
6.	02.10.2020	LN Star	Madhya Pradesh [All Editions]
7.	02.10.2020	Dabang Dunia	Madhya Pradesh [All Editions]
8.	01.10.2020	Dainik Jagran	Madhya Pradesh [All Editions]
9.	01.10.2020	Yug Pradesh	Madhya Pradesh [All Editions]
10.	01.10.2020	Swadesh	Shahdol & Jabalpur Edition
11.	30.09.2020	Haribhoomi	Madhya Pradesh [All Editions]
12.	30.09.2020	Peoples Samachar	Madhya Pradesh [All Editions]
Orissa			
1.	05.10.2020	Dharitri	All Editions
2.	04.10.2020	Amruta Dunia	Berhampur
3.	04.10.2020	Around Odisha	Bhubaneswar/Khorda
4.	04.10.2020	Biswabani	Bhubaneswar/Khorda
5.	04.10.2020	Dunia Khabar	Bhubaneswar/Khorda
6.	04.10.2020	Kalinga Jyoti	Puri
7.	04.10.2020	Kalinga Mail	Puri
8.	04.10.2020	Political & Business Daily	All Editions
9.	03.10.2020	Darsanna	Balasore
10.	03.10.2020	Utkal Samaj	Puri
11.	02.10.2020	Hiranchal	Sambalpur
12.	02.10.2020	Suryaparva	All Editions
13.	01.10.2020	Pramad	Cuttack

14.	01.10.2020	Samaja	All Editions
15.	30.09.2020	Manthan	Balasore
Punjab			
1.	30.09.2020	Akali Patrika	Bhatinda
2.	30.09.2020	Arth Prakash	Bhatinda
3.	30.09.2020	Dainik Bhaskar	Faridkot
4.	01.10.2020	Dainik Tribune	Faridkot
5.	30.09.2020	Fast Media	Moga
6.	30.09.2020	Jagbani	Moga
7.	30.09.2020	Jagmarg	Bhatinda
8.	30.09.2020	Punjab Times	Sangroor
Maharashtra			
1.	15.10.2020	Vartashakti	Kolhapur
2.	15.10.2020	Dainik Bandhuprem	Solapur
3.	15.10.2020	Dainik Janmat	Solapur
4.	15.10.2020	Dainik Jansathya	Solapur
5.	15.10.2020	Dainik Swabhimani Shahar	Solapur
6.	15.10.2020	Batmidar	Dhule
7.	15.10.2020	Lokshahi	Dhule
8.	15.10.2020	Sehmat	Dhule
9.	17.10.2020	Solapur Tarun Bhushan	Solapur
10.	20.10.2020	Kesari	Kolhapur
Assam			
1.	13.10.2020	The Assam Post	Assam[All Editions]
2.	13.10.2020	Dainik Batori Kakat	Assam[All Editions]
3.	13.10.2020	Asom Aditya	Assam[All Editions]
4.	13.10.2020	Gana Adhikar	Assam[All Editions]
5.	13.10.2020	Niyamiya Barta	Assam[All Editions]
6.	13.10.2020	Meghalaya Guardian	Assam[All Editions]
7.	13.10.2020	The North East Times	Assam[All Editions]

8.	19.10.2020	Hills Times	Assam[All Editions]
Jharkhand			
1.	03.10.2020	Chamakta Aina	Ranchi/Kodarma
2.	02.10.2020	Dabang Hindi	Ranchi/Kodarma/Dumka
3.	30.09.2020	Dainik Aaj	Ranchi/Kodarma/Dumka
4.	03.10.2020	Dainik Punch	Ranchi/Kodarma/Dumka
5.	30.09.2020	Khabar Mantra	Ranchi/Kodarma/Dumka
Chhattisgarh			
1.	02.10.2020	Amanpath	Bilaspur/Ambikapur/Mahasamund
2.	30.09.2020	Ispat Times	Raipur/Bilaspur/Ambikapur/Mahasamund
3.	01.10.2020	Pratidin Rajdhani	Bilaspur/Ambikapur/Mahasamund
4.	30.09.2020	Rashtriya Hindi Mail	Raipur/Bilaspur/Ambikapur/Mahasamund
5.	02.10.2020	Samvet Shikhar	Bilaspur/Ambikapur/Mahasamund
6.	15.10.2020	Chronicle Today	Raipur/Bilaspur/Ambikapur/Mahasamund
7.	15.10.2020	Pratidin Rajdhani	Raipur/Bilaspur/Ambikapur/Mahasamund
8.	16.10.2020	Dainandini	Raipur/Bilaspur/Ambikapur/Mahasamund
Bihar			
1.	08.10.2020	Media Darshan Live	Patna/Gaya/Samastipur/Jahanabad
2.	06.09.2020	Nav Bihar Times	Patna/Gaya/Samastipur/Jahanabad
3.	05.10.2020	Manus Khabar	Patna/Gaya/Samastipur/Jahanabad
4.	09.10.2020	Dainik Aaj Patna	Gaya/Samastipur/Jahanabad
5.	09.10.2020	Nav Bihar	Gaya/Samastipur/Jahanabad
Karnataka			
1.	10.10.2020	Hosadigantha	Mangalore
2.	10.09.2020	Vijay Karnataka	Mangalore
3.	09.10.2020	Samyukta Karnataka	Mangalore
4.	09.10.2020	Sanjevani	Mangalore
5.	09.10.2020	Vishwavani	Mangalore
6.	15.10.2020	Indu Sanje	Bangalore
7.	15.10.2020	Sanje Prabha	Bangalore

West Bengal			
1.	15.10.2020	Arthiklipi	Kolkata
2.	15.10.2020	Morning India	Kolkata
3.	15.10.2020	Echo of India	Kolkata
4.	16.10.2020	Dainik Statesman	Kolkata
5.	16.10.2020	Dainik Vishwamitra	Kolkata
6.	17.10.2020	Samay Paribartan	Kolkata
7.	17.10.2020	Sambad Prabha	Kolkata
8.	19.10.2020	News Mania	Kolkata
Tamil Nadu			
1.	16.10.2020	Dinathodar	Chennai
2.	19.10.2020	Makkalkural	Chennai
3.	17.10.2020	Malaimalar	Chennai
4.	29.10.2020	Porputhiya Murasu	Chennai
5.	18.10.2020	Malaimurasu	Chennai

Madhya Pradesh

Publication	Pradesh Times
Edition	Madhya Pradesh [All Editions]
Date	October 4, 2020
Page No.	5

माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र : मुश्किल वक्त में कम आमदनी वाली महिला कर्जदारों के लिए एक बड़ा सहारा

दो दशक से भी ज्यादा समय से माइक्रोफाइनेंस उद्योग कम आमदनी वाली और वंचित समूहों की महिलाओं की आर्थिक आजादी पाने में मदद कर रहा है। इससे महिलाएं सही वित्तीय निर्णय लेने के लिए सशक्त होती हैं।

भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर एनबीएफसी-एमएफआई, बैंक, स्मॉल फाइनेंस बैंक या केवल एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं द्वारा 30 जून 2020 तक 5.80 करोड़ से ज्यादा ग्राहकों को सेवाएं दे रहा है। खासकर कोविड-19 के इस अभूतपूर्व समय में भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर में निश्चित रूप से बदलाव हो रहा है।

नवंबर 2016 की नोटबंदी हो या फिर 2020 में पूरी दुनिया पर छड़ी वैश्विक महामारी माइक्रोफाइनेंस उद्योग वित्तीय समावेशन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

वर्तमान स्थिति में, जहां ऋण का वितरण आर्थिक गतिविधियों के कम हो जाने की वजह से अपेक्षाकृत कम हो गया है। लेकिन इस बात की पूरी संभावना है कि एक बार फिर से मांग में वृद्धि होगी, और माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र वंचित महिला कर्जदारों की सेवा करना जारी रखेगा। इससे उन्हें आर्थिक के साथ ही भावनात्मक रूप से भी जोरदार वापसी करने में मदद मिलेगी। माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र से जो उधार मिलता है, वह जरूरतमंद महिलाओं को पैसा उपलब्ध कराने का औपचारिक जरिया है। यह न केवल कोलेटरल ढंग से निःशुल्क है, बल्कि पूरी तरह से आरबीआई के निरीक्षण में है। इसमें जो ब्याज लगता है, वह भी बैलेंस कम

होने के आधार पर लगता है। यह क्षेत्र अब नकद रहित बनने के लिए प्रयासरत है और इसके लिए यह तेजी से डिजिटल तकनीक अपना रहा है। अनौपचारिक ढंग से पैसा मुहैया कराना इसके ठीक विपरीत है, जिसमें उधार लेने वाली महिलाओं को महाजन से मिलने वाले कर्ज पर ब्याज चुकाते रहना पड़ता है और जीवन भर तक कर्ज की चक्की में पिसते रहना होता है। माइक्रोफाइनेंस लोन अल्पकालिक लोन होते हैं। यह महाजनों (मनी लेंडर्स) से मिलने वाले लंबी अवधि वाले लोन के विपरीत होते हैं, जिनमें कोलेटरल के साथ ही 40 से 60 प्रतिशत के बीच ऊंचा ब्याज चुकाना पड़ता है। महिला उधारकर्ताओं के लिए एक महत्वपूर्ण बात यह भी है कि एमएफआईएन, आरबीआई द्वारा मान्यता प्राप्त एक स्व-नियामक संगठन है, जिसके पास ग्राहक शिकायत निवारण तंत्र (सीजीआरएम) है। इसके सदस्य संगठनों की महिला उधारकर्ता टोल-फ्री संख्या 1800 102 1080 पर अपनी शिकायत दर्ज करा सकती हैं। एमएफआईएन सीजीआरएम 12 भाषाओं में उपलब्ध है, और किसी भी राज्य की महिला ग्राहक, देश में कहीं भी टोल-फ्री नंबर पर वीकडेज में सुबह 9:30 से शाम 5:30 के बीच कॉल कर सकती हैं। अनौपचारिक स्रोतों से लोन लेने पर महिला उधारकर्ताओं के लिए यह अनूठी सुविधा उपलब्ध नहीं है और वहां अनियमित और अनौपचारिक उधार का संचालन करने वालों की दया पर लोन की सुविधा मिल पाती है।

Publication	Samay Jagat
Edition	Madhya Pradesh [All Editions]
Date	October 3, 2020
Page No.	8

माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र में कम आमदनी वाली महिला कर्जदारों के लिए एक बड़ा सहारा

नई दिल्ली। दो दशक से भी ज्यादा समय से माइक्रोफाइनेंस उद्योग कम आमदनी वाली और वंचित समूहों की महिलाओं की आर्थिक आजादी पाने में मदद कर रहा है। इससे महिलाएं सही वित्तीय निर्णय लेने के लिए सशक्त होती हैं। भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर एनबीएफसी-एमएफआई, बैंक, स्मॉइल फाइनेंस बैंक या केवल एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं द्वारा 30 जून 2020 तक 5.80 करोड़ से ज्यादा ग्राहकों को सेवाएं दे रहा है। खासकर कोविड-19 के इस अभूतपूर्व समय में भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर में निश्चित रूप से बदलाव हो रहा है। नवंबर 2016 की नोटबंदी हो या फिर 2020 में पूरी दुनिया पर छाई वैश्विक महामारी माइक्रोफाइनेंस उद्योग वित्तीय समावेशन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। वर्तमान स्थिति में, जहां ऋण का वितरण आर्थिक गतिविधियों के कम हो जाने की वजह से अपेक्षाकृत कम हो गया है।

Publication	Sandhya Prakash
Edition	Madhya Pradesh [All Editions]
Date	October 3, 2020
Page No.	7

माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र: मुश्किल वक्त में कम आमदनी वाली महिला कर्जदारों के लिए एक बड़ा सहारा

सांध्य प्रकाश संवाददाता ● भोपाल

दो दशक से भी ज्यादा समय से माइक्रोफाइनेंस उद्योग कम आमदनी वाली और वंचित समूहों की महिलाओं की आर्थिक आजादी पाने में मदद कर रहा है। इससे महिलाएं सही वित्तीय निर्णय लेने के लिए सशक्त होती हैं।

भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर एनबीएफसी-एमएफआई, बैंक, स्मॉल फाइनेंस बैंक या केवल एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं द्वारा 30 जून 2020 तक 5.80 करोड़ से ज्यादा ग्राहकों को सेवाएं दे रहा है। खासकर कोविड-19 के इस अभूतपूर्व समय में भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर में निश्चित रूप से बदलाव हो रहा है।

नवंबर 2016 को नोटबंदी हो या फिर 2020 में पूरी दुनिया पर छाई वैश्विक महामारी माइक्रोफाइनेंस उद्योग वित्तीय समावेशन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। वर्तमान स्थिति में, जहां ऋण का

वितरण आर्थिक गतिविधियों के कम हो जाने की खबर से अपेक्षाकृत कम हो गया है। लेकिन इस बात की पूरी संभावना है कि एक बार फिर से मांग में वृद्धि होगी, और माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र वंचित महिला कर्जदारों की सेवा करना जारी रखेगा। इससे उन्हें आर्थिक के साथ ही भावनात्मक रूप से भी जोरदार वापसी करने में मदद मिलेगी।

माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र से जो उधार मिलता है, वह जरूरतमंद महिलाओं को पैसा उपलब्ध कराने का औपचारिक जरिया है। यह न केवल कोलेटरल डंग से निःशुल्क है, बल्कि पूरी तरह से आरबीआई के निरीक्षण में है। इसमें जो ब्याज लगता है, वह भी बेलेंस कम होने के आधार पर लगता है। यह क्षेत्र अब नकद रहित बनने के लिए प्रयासरत है और इसके लिए यह तेजी से डिजिटल तकनीक अपना रहा है। अनौपचारिक ढंग से पैसा मुहैया कराना इसके ठीक विपरीत है, जिसमें उधार लेने वाली महिलाओं को महाजन से मिलने वाले कर्ज पर

ब्याज चुकाते रहना पड़ता है और जीवन भर त कर्ज की चक्की में पिसते रहना होता है। माइक्रोफाइनेंस लोन अल्पकालिक लोन होते हैं। यह महाजनों (मनी लेंडर्स) से मिलने वाले लोन अवधि वाले लोन के विपरीत होते हैं, जिन कोलेटरल के साथ ही 40 से 60 प्रतिशत के बीच ऊंचा ब्याज चुकाना पड़ता है। महिला उधारकर्ताओं के लिए एक महत्वपूर्ण बात यह है कि एमएफआईएन, आरबीआई द्वारा मान्य प्राप्त एक स्व-नियामक संगठन है, जिसके पास ग्राहक शिकायत निवारण तंत्र (सीजीआरएम) है। इसके सदस्य संगठनों की महिला उधारकर्ता टोल-फ्री संख्या 1800 102 1080 पर अपनी शिकायत दर्ज करा सकती हैं। एमएफआईएन सीजीआरएम 12 भाषाओं में उपलब्ध है, और किसी भी राज्य की महिला ग्राहक, देश में कहीं टोल-फ्री नंबर पर वीकडेज में सुबह 9:30 से शाम 5:30 के बीच कॉल कर सकती हैं।

Publication	Dainik Kausar
Edition	Madhya Pradesh [All Editions]
Date	October 3, 2020
Page No.	6

माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र मुश्किल वक्त में कम आमदनी वाली महिला कर्जदारों के लिए एक बड़ा सहारा

नई दिल्ली। दो दशक से भी ज्यादा समय से माइक्रोफाइनेंस उद्योग कम आमदनी वाली और वंचित समूहों की महिलाओं की आर्थिक आजादी पाने में मदद कर रहा है। इससे महिलाएं सही वित्तीय निर्णय लेने के लिए सशक्त होती हैं।

भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर एनबीएफसी-एमएफआई, बैंक, स्मॉल फाइनेंस बैंक या केवल एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं द्वारा 30 जून 2020 तक 5.80 करोड़ से ज्यादा ग्राहकों को सेवाएं दे रहा है। खासकर कोविड-19 के इस अभूतपूर्व समय में भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर में निहित रूप से बदलाव हो रहा है। नवंबर 2016 की मोटबंदी हो या फिर 2020 में पूरी दुनिया पर

छाई वैश्विक महामारी माइक्रोफाइनेंस उद्योग वित्तीय समावेशन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। वर्तमान स्थिति में, जहां रूढ़िवादी वितरण आर्थिक गतिविधियों के कम हो जाने की वजह से अपेक्षाकृत कम हो गया है। लेकिन इस बात की पूरी संभावना है कि एक बार फिर से मांग में वृद्धि होगी, और माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र वंचित महिला कर्जदारों की सेवा करना जारी रखेगा। इससे उन्हें आर्थिक के साथ ही भावनात्मक रूप से भी जोरदार वापसी करने में मदद मिलेगी। माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र से जो उधार मिलता है, वह जरूरतमंद महिलाओं को पैसा उपलब्ध कराने का औपचारिक जरिया है। यह न केवल कोलेटरल डेंग से निशुल्क है, बल्कि पूरी तरह से

आरबीआई के निरीक्षण में है। इसमें जो खर्च लगता है, वह भी बैंक से कम होने के आधार पर लगता है। यह क्षेत्र अब नकद रहित बनने के लिए प्रयासरत है और इसके लिए यह क्षेत्र से डिजिटल तकनीक अपना रहा है। अनौपचारिक ढंग से पैसा मुहैया कराना इसके ठीक विपरीत है, जिसमें उधार लेने वाली महिलाओं को महाजन से मिलने वाले कर्ज पर खर्च चुकाते रहना पड़ता है और जोकन भर तक कर्ज को चक्की में पिंमते रहना होता है। माइक्रोफाइनेंस लोन अल्पकालिक लोन होते हैं। यह महाजनों (मनी लेंडर्स) से मिलने वाले लंबी अवधि वाले लोन के विपरीत होते हैं, जिनमें कोलेटरल के साथ ही 40 से 60 प्रतिशत के बीच उच्च खर्च चुकाना पड़ता है।

Publication	Fine Times
Edition	Madhya Pradesh [All Editions]
Date	October 3, 2020
Page No.	4

माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र रु मुश्किल वक्त में कम आमदनी वाली महिला कर्जदारों के लिए एक बड़ा सहारा

दो दशक से भी ज्यादा समय से माइक्रोफाइनेंस उद्योग कम आमदनी वाली और वंचित समूहों की महिलाओं की आर्थिक आजादी पाने में मदद कर रहा है। इससे महिलाएं सही वित्तीय निर्णय लेने के लिए सशक्त होती हैं। भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर एनबीएफसी.एमएफआईए बैंक ए स्मॉइल फाइनेंस बैंक या केवल एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं द्वारा 30 जून 2020 तक 5८80 करोड़ से ज्यादा ग्राहकों को सेवाएं दे रहा है। खासकर कोविड.19 के इस अभूतपूर्व समय में भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर में निश्चित रूप से बदलाव हो रहा है। नवंबर 2016 की नोटबंदी हो या फिर 2020 में पूरी दुनिया पर छाई वैश्विक महामारी माइक्रोफाइनेंस उद्योग वित्तीय समावेशन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। वर्तमान स्थिति में जहां ऋण का वितरण आर्थिक गतिविधियों के कम हो जाने की वजह से अपेक्षाकृत कम हो गया है। लेकिन इस बात की पूरी संभावना है कि एक बार फिर से मांग में वृद्धि होगी और माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र वंचित महिला कर्जदारों की सेवा करना जारी रखेगा। इससे उन्हें आर्थिक के साथ ही भावनात्मक रूप से भी जोरदार वापसी करने में मदद मिलेगी। माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र से जो उधार मिलता है वह जरूरतमंद महिलाओं को पैसा उपलब्ध कराने का औपचारिक जरिया है। यह न केवल कोलेटरल ढंग से निरुशुल्क है बल्कि पूरी तरह से आरबीआई के निरीक्षण में है। इसमें जो ब्याज लगता है वह भी बैलेंस कम होने के आधार पर लगता है। यह क्षेत्र अब नकद रहित बनने के लिए प्रयासरत है और इसके लिए यह तेजी से डिजिटल तकनीक अपना रहा है। अनौपचारिक ढंग से पैसा मुहैया कराना इसके ठीक विपरीत है जिसमें उधार लेने वाली महिलाओं को महाजन से मिलने वाले कर्ज पर ब्याज चुकाते रहना पड़ता है और जीवन भर तक कर्ज की चक्की में पिसते रहना होता है।

Publication	LN Star
Edition	Madhya Pradesh [All Editions]
Date	October 2, 2020
Page No.	7

मुश्किल वक्त में कम आमदनी वाली महिला कर्जदारों के लिए

एक बड़ा सहारा

नई दिल्ली, एजेंसी। दो दशक से भी ज्यादा समय से माइक्रोफाइनेंस उद्योग कम आमदनी वाली और वंचित समूहों की महिलाओं की आर्थिक आजादी पाने में मदद कर रहा है। इससे महिलाएं सही वित्तीय निर्णय लेने के लिए सशक्त होती हैं। भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर एनबीएफसी-एमएफआई, बैंक, स्मॉल फाइनेंस बैंक या केवल एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं द्वारा 30 जून 2020 तक 5.80 करोड़ से ज्यादा ग्राहकों को सेवाएं दे रहा है। खासकर कोविड-19 के इस अभूतपूर्व समय में भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर में निश्चित रूप से बदलाव हो रहा है। नवंबर 2016 की नोटबंदी हो या फिर 2020 में पूरी दुनिया पर छाई वैश्विक महामारी माइक्रोफाइनेंस उद्योग वित्तीय समावेशन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। वर्तमान स्थिति में, जहां ऋण का वितरण आर्थिक गतिविधियों के कम हो जाने की वजह से अपेक्षाकृत कम हो गया है। लेकिन इस बात की पूरी संभावना है कि एक बार फिर से मांग में वृद्धि होगी, और माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र वंचित महिला कर्जदारों की सेवा करना जारी रखेगा। इससे उन्हें आर्थिक के साथ ही भावनात्मक रूप से भी जोरदार वापसी करने में मदद मिलेगी। माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र से जो उधार मिलता है, वह जरूरतमंद महिलाओं को पैसा उपलब्ध कराने का औपचारिक जरिया है। यह न केवल कोलेटरल ढंग से निःशुल्क है, बल्कि पूरी तरह से आरबीआई के निरीक्षण में है। इसमें जो ब्याज लगता है, वह भी बैलेंस कम होने के आधार पर लगता है। यह क्षेत्र अब नकद रहित बनने के लिए प्रयासरत है और इसके लिए यह तेजी से डिजिटल तकनीक अपना रहा है। अनौपचारिक ढंग से पैसा मुहैया कराना इसके ठीक विपरीत है, जिसमें उधार लेने वाली महिलाओं को महज्जन से मिलने वाले कर्ज पर ब्याज चुकाते रहना पड़ता है और जीवन भर तक कर्ज की चक्की में पिसते रहना होता है। माइक्रोफाइनेंस लोन अल्पकालिक लोन होते हैं। यह महाजनों (मनी लेंडर्स) से मिलने वाले लंबी अवधि वाले लोन के विपरीत होते हैं, जिनमें कोलेटरल के साथ ही 40 से 60 प्रतिशत के बीच ऊंचा ब्याज चुकाना पड़ता है।

Publication	Dabang Dunia
Edition	Madhya Pradesh [All Editions]
Date	October 2, 2020
Page No.	4

माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र महिला कर्जदारों के लिए एक बड़ा सहाय

मुंबई। दो दशक से भी ज्यादा समय से माइक्रोफाइनेंस उद्योग कम आमदनी वाली और वंचित समूहों की महिलाओं की आर्थिक आजादी पाने में मदद कर रहा है। इससे महिलाएं सही वित्तीय निर्णय लेने के लिए सशक्त होती है। भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर एनबीएफसी-एमएफआई, बैंक, स्मॉल फाइनेंस बैंक या केवल एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं द्वारा 30 जून 2020 तक 5.80 करोड़ से ज्यादा ग्राहकों को सेवाएं दे रहा है। खासकर कोविड-19 के इस अभूतपूर्व समय में भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर में निश्चित रूप से बदलाव हो रहा है। नवंबर 2016 की नोटबंदी हो या फिर 2020 में पूरी दुनिया पर छाई वैश्विक महामारी माइक्रोफाइनेंस उद्योग वित्तीय समावेशन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र से जो उधार मिलता है, वह जरूरतमंद महिलाओं को पैसा उपलब्ध कराने का औपचारिक जरिया है।

Publication	Dainik Jagran
Edition	Madhya Pradesh [All Editions]
Date	October 1, 2020
Page No.	11

माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र महिला कर्जदारों के लिए एक बड़ा सहारा

मुंबई, जेएनएन। दो दशक से भी ज्यादा समय से माइक्रोफाइनेंस उद्योग कम आमदनी वाली और वंचित समूहों की महिलाओं की आर्थिक आजादी पाने में मदद कर रहा है। इससे महिलाएं सही वित्तीय निर्णय लेने के लिए सशक्त होती हैं। भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर एनबीएफसी-एमएफआई, बैंक, स्मॉइल फाइनेंस बैंक या केवल एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं द्वारा 30 जून 2020 तक 5.80 करोड़ से ज्यादा ग्राहकों को सेवाएं दे रहा है। खासकर कोविड-19 के इस अभूतपूर्व समय में भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर में निश्चित रूप से बदलाव हो रहा है। नवंबर 2016 की नोटबंदी हो या फिर 2020 में पूरी दुनिया पर छाई वैश्विक महामारी माइक्रोफाइनेंस उद्योग वित्तीय समावेशन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र से जो उधार मिलता है, वह जरूरतमंद महिलाओं को पैसा उपलब्ध कराने का औपचारिक जरिया है। यह न केवल कोलेटरल ढंग से निःशुल्क है, बल्कि पूरी तरह से आरबीआई के निरीक्षण में है।

Publication	Yug Pradesh
Edition	Madhya Pradesh [All Editions]
Date	October 1, 2020
Page No.	9

माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र : मुश्किल वक्त में कम आमदनी वाली महिला कर्जदारों के लिए एक बड़ा सहारा

दो दशक से भी ज्यादा समय से माइक्रोफाइनेंस उद्योग कम आमदनी वाली और वंचित समूहों की महिलाओं की आर्थिक आजादी पाने में मदद कर रहा है। इससे महिलाएं सही वित्तीय निर्णय लेने के लिए सशक्ता होती हैं। भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर एनबीएफसी-एमएफआई, बैंक, स्मॉइल फाइनेंस बैंक या केवल एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं द्वारा 30 जून 2020 तक 5.80 करोड़ से ज्यादा ग्राहकों को सेवाएं दे रहा है। खासकर कोविड-19 के इस अभूतपूर्व समय में भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर में निश्चित रूप से बदलाव हो रहा है। नवंबर 2016 की नोटबंदी हो या फिर 2020 में पूरी दुनिया पर छाई वैश्विक महामारी माइक्रोफाइनेंस उद्योग वित्तीय समावेशन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। वर्तमान स्थिति में, जहां ऋण का वितरण आर्थिक गतिविधियों के कम हो जाने की वजह से अपेक्षाकृत कम हो गया है। लेकिन इस बात की पूरी संभावना है कि एक बार फिर से मांग में वृद्धि होगी, और माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र वंचित महिला कर्जदारों की सेवा करना जारी रखेगा। इससे उन्हें आर्थिक के साथ ही भावनात्मक रूप से भी जोरदार वापसी करने में मदद मिलेगी।

Publication	Swadesh
Edition	Shahdol & Jabalpur Edition
Date	October 1, 2020
Page No.	2

स्वदेश

माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र : मुश्किल वक़्त में कम आमदनी वाली महिला कर्जदारों के लिए एक बड़ा सहारा

स्वदेश संवाददाता, भोपाल

दो दशक से भी ज्यादा समय से माइक्रोफाइनेंस उद्योग कम आमदनी वाली और वंचित समूहों की महिलाओं की आर्थिक आजादी पाने में मदद कर रहा है। इससे महिलाएं सही वित्तीय निर्णय लेने के लिए सशक्त होती हैं। भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर एनबीएफसी-एमएफआई, बैंक, स्मॉइल फाइनेंस बैंक या केवल एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं द्वारा 30 जून 2020 तक 5.80 करोड़ से ज्यादा ग्राहकों को सेवाएं दे रहा है। खासकर कोविड-19 के इस अभूतपूर्व समय में भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर में निश्चित रूप से बदलाव हो रहा है। नवंबर 2016 की नोटबंदी हो या फिर 2020 में पूरी दुनिया पर छाई वैश्विक महामारी माइक्रोफाइनेंस उद्योग वित्तीय समावेशन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। वर्तमान स्थिति में, जहां ऋण का वितरण आर्थिक गतिविधियों के कम हो जाने की वजह से अपेक्षाकृत कम हो गया

है। लेकिन इस बात की पूरी संभावना है कि एक बार फिर से मांग में वृद्धि होगी, और माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र वंचित महिला कर्जदारों की सेवा करना जारी रखेगा। इससे उन्हें आर्थिक के साथ ही भावनात्मक रूप से भी जोरदार वापसी करने में मदद मिलेगी। माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र से जो उधार मिलता है, वह जरूरतमंद महिलाओं को पैसा उपलब्ध कराने का औपचारिक जरिया है। यह न केवल कोलेटरल ढंग से निःशुल्क है, बल्कि पूरी तरह से आरबीआई के निरीक्षण में है। इसमें जो ब्याज लगता है, वह भी बैलेंस कम होने के आधार पर लगता है। यह क्षेत्र अब नकद रहित बनने के लिए प्रयासरत है और इसके लिए यह तेजी से डिजिटल तकनीक अपना रहा है। अनौपचारिक ढंग से पैसा मुहैया कराना इसके ठीक विपरीत है, जिसमें उधार लेने वाली महिलाओं को महाजन से मिलने वाले कर्ज पर ब्याज चुकाते रहना पड़ता है और जीवन भर तक कर्ज की चक्की में पिसते रहना होता है। माइक्रोफाइनेंस लोन अल्पकालिक लोन होते हैं।

Publication	Haribhoomi
Edition	Madhya Pradesh [All Editions]
Date	September 30, 2020
Page No.	7

माइक्रोफाइनेंस: मुश्किल वक़्त में महिला कर्जदारों के लिए बड़ा सहारा

इंदौर। दो दशक से भी ज्यादा समय से माइक्रोफाइनेंस उद्योग कम आमदनी वाली और वंचित समूहों की महिलाओं की आर्थिक आजादी पाने में मदद कर रहा है। इससे महिलाएं सही वित्तीय निर्णय लेने के लिए सशक्तर होती हैं। भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर एनबीएफसी-एमएफआई, बैंक, स्मॉल फाइनेंस बैंक या केवल एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं द्वारा 30 जून 2020 तक 5.80 करोड़ से ज्यादा ग्राहकों को सेवाएं दे रहा है। खासकर कोविड 19 के इस अभूतपूर्व समय में भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर में निश्चित रूप से बदलाव हो रहा है। नवंबर 2016 की नोटबंदी हो या फिर 2020 में पूरी दुनिया पर छाई वैश्विक महामारी माइक्रोफाइनेंस उद्योग वित्तीय समावेशन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। वर्तमान स्थिति में, जहां ऋण का वितरण आर्थिक गतिविधियों के कम हो जाने की वजह से अपेक्षाकृत कम हो गया है। लेकिन इस बात की पूरी संभावना है कि एक बार फिर से मांग में वृद्धि होगी और माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र वंचित महिला कर्जदारों की सेवा करना जारी रखेगा। इससे उन्हें आर्थिक के साथ ही भावनात्मक रूप से भी जोरदार वापसी करने में मदद मिलेगी। माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र से जो उधार मिलता है, वह जरूरतमंद महिलाओं को पैसा उपलब्ध कराने का औपचारिक जरिया है। यह न केवल कोलेटरल दंग से निःशुल्क है, बल्कि पूरी तरह से आरबीआई के निरीक्षण में है।

Publication	Peoples Samachar
Edition	Madhya Pradesh [All Editions]
Date	September 30, 2020
Page No.	8

महिला कजर्दारों के लिए एक बड़ा सहारा माइक्रोफाइनेंस

नई दिल्ली। दो दशक से भी ज्यादा समय से माइक्रोफाइनेंस उद्योग कम आमदनी वाली और



वंचित समूहों की महिलाओं की आर्थिक आजादी पाने में मदद कर रहा है। इससे महिलाएं सही वित्तीय निर्णय लेने के लिए सशक्त होती हैं।

भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर एनबीएफसी एमएफआईए बैंक, स्मॉल फाइनेंस बैंक या केवल एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं द्वारा 30 जून 2020 तक 5.80 करोड़ से ज्यादा ग्राहकों को सेवाएं दे रहा है। खासकर कोविड-19 के इस अभूतपूर्व समय में भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर में निश्चित रूप से बदलाव हो रहा है। नवंबर 2016 की नोटबंदी हो या फिर 2020 में पूरी दुनिया पर छाई वैश्विक महामारी माइक्रोफाइनेंस उद्योग वित्तीय समावेशन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

Orissa

Publication	Dharitri
Edition	All Editions
Date	October 5, 2020
Page No.	7

ମାଲକୋପାଳନାମ୍ବରେ ନିମ୍ନ ଆୟକାରୀ ମହିଳାଙ୍କୁ ଗୁରୁତ୍ୱ

ଭୁବନେଶ୍ୱର, ୪।୧୦

ଗତ ଦୁଇ ଦଶନ୍ଧିରୁ ଗର୍ଭ ସମୟ ଧରି ମାଲକୋପାଳନାମ୍ବ ଶିଳ୍ପ ସଂସ୍ଥା ପକ୍ଷରୁ ନିମ୍ନ ଆୟକାରୀ ବର୍ଗ ଏବଂ ଅବହେଳିତ ବର୍ଗ ମହିଳାମାନଙ୍କୁ ଗୁରୁତ୍ୱ ପ୍ରଦାନ କରୁଛି। ମହିଳାଙ୍କ ଆର୍ଥିକ ସ୍ୱାଧୀନତା ହାସଲ କରିବା ଦିଗରେ ସଂସ୍ଥା ବ୍ୟାପକ ସହଯୋଗ ପ୍ରଦାନ କରିଆସୁଛି। ଠିକ୍ ସମୟରେ ଆବଶ୍ୟକ ଆର୍ଥିକ ସହାୟତା ସହ ଆର୍ଥିକ ନିଷ୍ପତ୍ତି ଗ୍ରହଣ କରିବା ନିମନ୍ତେ ଏକକି ପଦକ୍ଷେପ ମହିଳାଙ୍କୁ ଗଣତ୍ୱ କରୁଛି। ୨୦୨୦



କ୍ରମେ ୩୦ ପୁଣ୍ୟ ୫.୮୦ କୋଟିରୁ ଗର୍ଭ ସ୍ୱତନ୍ତ୍ର ଗ୍ରାହକଙ୍କୁ ଉନ୍ନତ ଏନ୍‌ସିଏଫ‌ଆଇ-ଏମ୍‌ଏଫ‌ଆଇ, ବ୍ୟାଙ୍କ ସମୂହ,

କ୍ଷୁଦ୍ର ଆର୍ଥିକ ଲଗାଣାକାରୀ ବ୍ୟାଙ୍କ ସମୂହ ଆଦି ସ୍ୱତନ୍ତ୍ର ଏନ୍‌ସିଏଫ‌ଆଇ ଗୁଡିକୁ ସେବା ଯୋଗାଇ ଦେଇ ଆସୁଛନ୍ତି। ଭାରତର ମାଲକୋପାଳନାମ୍ବ କ୍ଷେତ୍ର ନିଃସହେତରେ ବଦଳିବାରେ ଲାଗିଛି। ବିଶେଷକରି ଏହି ଅପ୍ରତ୍ୟାଶିତ କୋଭିଡ୍-୧୯ ସମୟରେ ମଧ୍ୟ ଏହା ଅନେକଙ୍କ ପାଇଁ ସହାୟତାର ହାତ ବଢାଇଛି। ୨୦୧୬ ନଭେମ୍ବରରେ କରାଯାଇଥିବା ବିପ୍ଳବୀକରଣ ହେଉ ଆମ୍ଭ ୨୦୨୦ରେ ବର୍ତ୍ତମାନ ଦେଖାଦେଇଥିବା କରୋନା ମହାମାରୀ ସବୁ ସମୟରେ ମାଲକୋପାଳନାମ୍ବ ଶିଳ୍ପ ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥିତିରେ ପ୍ରମୁଖ ଭୂମିକା ଗ୍ରହଣ କରିଛି।

Publication	Amruta Dunia
Edition	Berhampur
Date	October 4, 2020
Page No.	10

ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ ସମୟରେ ନିମ୍ନ ଆୟକାରୀ ମହିଳା ରଣୀଙ୍କ ପାଇଁ ସୁବର୍ଣ୍ଣ ସୁଯୋଗ

ଦୁହସୁଦ(ଅମୃତ ମିଠିଆ): ଦୁଧ
କଣ୍ଠରୁ ଅଧିକ ସମୟ ଧରି
ମଳକ୍ରୋମାଳନକୁ ଟେକି ନିମ୍ନ ଆଇନବା ବର
ଏବଂ ଅବରୋଧି ଗୋଷାଳ ମୂଳମାନଙ୍କୁ
ଆର୍ଥିକ ସୁଧାନରା ସାହାଜ କରିବା ଦିଗରେ
ସମାପ୍ତର କରିଆସୁଛି ଏବଂ ସେମାନଙ୍କୁ
ଫଳିତ ଆର୍ଥିକ ନିଷିଦ୍ଧ ଗ୍ରହଣ କରିବା ନିମନ୍ତେ
ସତର୍କ କରୁଛି। ୨୦୨୦ ଜୁନ ୩୦ ପୂର୍ବା
୫.୮୦ କେଟିରୁ ଅଧିକ ସୁପର ଗ୍ରାହକଙ୍କୁ
ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ଏନର୍ଜି ଏଫସି-ଏନଏଫଆଇ,
ବ୍ୟାଙ୍କସମୂହ, ଶୁଦ୍ଧ ଆର୍ଥିକଗଣକାର

ଦୋଳାସମୂହ ଅର୍ଥକା ଦୂର
ଏକଦିଏପ୍ରତିଷ୍ଠିତ ସେବା ଯୋଗାଇ
ଆସୁଛି । କାରଣ ମାଲକୋଫାଲାନା
କ୍ଷେତ୍ର ନିଶ୍ଚୟରେ କବିକାରେ ଭାରି
ଏକ ବିଶେଷତା ଏହି ଅପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷ
କୋରିଡ଼-୧୯ ସମୟରେ ଏହି ଅନେକ
ପାଇଁ ଆମର ଦୃଷ୍ଟି ଦେଇଛି । ୨୦୧୬
ନଭେମ୍ବରରେ କରାଯାଇଥିବା ବିମୁକ୍ତକରଣ
ହେଉ ଅର୍ଥକା ୨୦୨୦ରେ ବର୍ଷମାନ
ଦେଖାଦେଖିବା ମହାମାରୀ ସମ୍ପ୍ରତି ବିଶ୍ୱ
କବିତା କବିତା ଦେଖି, ମାଲକୋଫାଲାନା

ଶିବ ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥିତିରେ ପ୍ରସ୍ତୁତ ରୁମ୍ମା
ଭାଷା କରୁଛି । ଆର୍ଥିକ ପରିସ୍ଥିତିରେ ମନ୍ତ୍ରଣ
ଆର୍ଥିକେଟିକ କାର୍ଯ୍ୟକାରୀ ଯୋଗୁଁ ରଖି
ପ୍ରଦାନ ପ୍ରଦାନମୂଳ ଭାବେ କମି
ରହିଥିବାବେଳେ ମନ ମଧ୍ୟରେ
ବିଦ୍ୟାଭ୍ୟାସ ବଢ଼ିବା ପ୍ରତି ପରିଣତି ହେବ
ଏବଂ ମାଲକୋପାଳନାଦ ମିଳିବା ଲୋଭ
ହେବା ପ୍ରଦାନ କରି ରଖିବ, ଆର୍ଥିକ ଏବଂ
ଭବନର ଦୃଷ୍ଟି ସମ୍ଭାଷଣର ଯାବତ ବ୍ୟାପକ
ପରିସ୍ଥିତି ଫେରିଆସିବ । ମିଳିବା ରଖାଣି ପାଇଁ
ମାଲକୋପାଳନାଦ ରଖି ପ୍ରଦାନ ଏକ

ଆନ୍ଧ୍ରଧାନ ଅର୍ଥନୀତିର ଚ୍ୟାନ୍ସ, ଯାହା ଯେତେବେଳେ ବଞ୍ଚେବୁଝି ଚାହେଁ, ତାହାହିଁ ଏହା ଉପରେ ଭାରତୀୟ ଚିକିତ୍ସା ବ୍ୟାଙ୍କ ପଞ୍ଜରୀ ପ୍ରତି ନିୟନ୍ତ୍ରଣ ବୁଝି ରହିଛି । ତାହାହିଁ ଏହା ଅବଶିଷ୍ଟ ରହୁଥିବା ମୁଖ୍ୟତମ ଉପରେ ଉତ୍ପାଦନା ଚିକିତ୍ସା ସ୍ଥଳ ଲାଗୁ କରିବା ଉପରେ ମଧ୍ୟ ଆବଶ୍ୟକତା ନିଶ୍ଚୟ ରହିଛି । ଏହି କ୍ଷେତ୍ର ପ୍ରତି ନିଶ୍ଚୟ ଭାରତୀୟ ବିଦ୍ୟାଳୟ ଯୋଗୁ ପ୍ରାୟତଃ କରୁଛି ଏବଂ ଏହା ତାହାକି କର୍ତ୍ତାବ୍ୟ ନିମନ୍ତେ ହିଁ ଉପଯୋଗୀ ଚିକିତ୍ସା ପ୍ରଦାନ କରିବାକୁ ଲାଗୁ କରୁଛି ।

Publication	Around Odisha
Edition	Bhubaneswar/Khorda
Date	October 4, 2020
Page No.	3

Microfinance Sector: a great support for low-income women borrowers in uncertain times

(A.O. Bureau)
Bhubaneswar, Oct 3: It has now been over two decades that the Microfinance industry has been helping women from the low income and under-served group, achieve financial independence, empowering them to take the right financial decisions. With over 5.80 Crore unique customers as on June 30, 2020, being now served by different entities including the NBFC-MFIs, Banks, the Small Finance Banks or the stand-alone NBFCs, the Indian microfinance sec-

tor is undoubtedly changing, especially in these unprecedented Covid-19 times. Be it the November 2016 Demonetisation and now the 2020 Global Pandemic engulfing the world, the microfinance industry has been playing a stellar role in financial inclusion. In the current situation, where the disbursement of loans has been relatively lower owing to subdued economic activity, most feel there will be a pent-up demand that will be witnessed, and microfinance would continue to serve the

women borrowers, giving a helping hand to bounce back, financially, as well as emotionally. Microfinance lending is a formal form of financing for women borrowers, which is not only collateral free, but also there is complete Regulatory oversight by RBI, including on the interest charged which is on a reducing balance basis. The sector is now striving to become cashless and rapidly adopting digital technology to achieve this. In contrast is the informal Financing where on the loans availed from

money lenders, the women borrower keeps on paying interest only and remains obligated for life. Microfinance loans are shorter-term loans, unlike from money lenders which are of far longer duration, with collateral and levied with high interest ranging between 40 to 60 per cent. One important aspect for women borrowers is MFIN, an RBI-recognised self-regulatory organisation that has a Customer Grievance Redressal Mechanism (CGRM) in place where women borrow-

ers of its Member organisations can place their grievance on its toll-free number 1800 102 1080. MFIN CGRM is available in 12 languages, and women customers from any state, anywhere in the country can call on the toll-free number between 9:30 am to 5:30 pm on weekdays. This unique facility is not available for women borrowers if they take a loan from informal sources; in fact, they are at the mercy of those who operate this unregulated and informal lending.

Publication	Biswabani
Edition	Bhubaneswar/Khorda
Date	October 4, 2020
Page No.	4

Microfinance Sector: a great support for low-income women borrowers in uncertain times

Bhubaneswar : It has now been over two decades that the Microfinance industry has been helping women from the low-income and under-served group, achieve financial independence, empowering them to take the right financial decisions. With over 5.80 Crore unique customers as on June 30, 2020, being now served by different entities including

the NBFC-MFIs, Banks, the Small Finance Banks or the stand-alone NBFCs, the Indian microfinance sector is undoubtedly changing, especially in these unprecedented Covid-19 times. Be it the November 2016 Demonetisation and now the 2020 Global Pandemic engulfing the world, the microfinance industry has been playing a stellar role in

financial inclusion. In the current situation, where the disbursement of loans has been relatively lower owing to subdued economic activity, most feel there will be a pent-up demand that will be witnessed, and microfinance would continue to serve the women borrowers, giving a helping hand to bounce back, financially, as well as emotionally. Microfinance

lending is a formal form of financing for women borrowers, which is not only collateral free, but also there is complete Regulatory oversight by RBI including on the interest charged which is on a reducing balance basis. The sector is now striving to become cashless and rapidly adopting digital technology to achieve this. In contrast to the

informal Financing where on the loans availed from money lenders, the women borrower keeps on paying interest only and remains obligated. For life. Microfinance loans are shorter-term loans, unlike from money lenders which are of far longer duration, with collateral and levied with high interest ranging between 40 to 60 per

cent. One important aspect for women borrowers is MFIN, an RBI-recognised self-regulatory organisation that has a Customer Grievance Redressal Mechanism (CGRM) in place where women borrowers of its Member organisations can place their grievance on its toll-free number 1800 102 1080. MFIN CGRM is available in 12 languages,

and women customers from any state, anywhere in the country can call on the toll-free number between 9.30 am to 5.30 pm on weekdays. This unique facility is not available for women borrowers if they take a loan from informal sources; in fact, they are at the mercy of those who operate this unregulated and informal lending.

Publication	Dunia Khabar
Edition	Bhubaneswar/Khorda
Date	October 4, 2020
Page No.	7

Microfinance Sector: a great support for low-income women borrowers in uncertain times

Bhubaneswar : It has now been over two decades that the Microfinance industry has been helping women from the low income and under-served group, achieve financial independence, empowering them to take the right financial decisions.

With over 5.80 Crore unique customers as on June 30, 2020, being now served by different entities including the NBFC-MFIs, Banks, the Small Finance Banks or the stand-alone NBFCs, the Indian microfinance sector is undoubtedly changing, especially in these unprecedented Covid-19 times.

Be it the November 2016 Demonetisation and now the 2020 Global Pandemic engulfing the world, the microfinance industry has been playing a stellar role in financial inclusion.

In the current situation, where the disbursal of loans has been relatively

lower owing to subdued economic activity, most feel there will be a pent-up demand that will be witnessed, and microfinance would continue to serve the women borrowers, giving a helping hand to bounce back, financially, as well as emotionally.

Microfinance lending is a formal form of financing for women borrowers, which is not only collateral free, but also there is complete Regulatory oversight by RBI, including on the interest charged which is on a reducing balance basis. The sector is now striving to become cashless and rapidly adopting digital technology to achieve this. In contrast is the informal Financing where on the loans availed from money lenders, the women borrower keeps on paying interest only and remains obligated for life.

Microfinance loans are shorter-term loans, unlike

from money lenders which are of far longer duration, with collateral and levied with high interest ranging between 40 to 60 per cent. One important aspect for women borrowers is MFIN, an RBI-recognised self-regulatory organisation that has a Customer Grievance Redressal Mechanism (CGRM) in place where women borrowers of its Member organisations can place their grievance on its toll-free number 1800 102 1080. MFIN CGRM is available in 12 languages, and women customers from any state, anywhere in the country can call on the toll-free number between 9:30 am to 5:30 pm on weekdays. This unique facility is not available for women borrowers if they take a loan from informal sources; in fact, they are at the mercy of those who operate this unregulated and informal lending.

Publication	Kalinga Jyoti
Edition	Puri
Date	October 4, 2020
Page No.	4

ମାଲକୋପାଲନାନ୍ତୁ କ୍ଷେତ୍ର:
 ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ ସମୟରେ ନିମ୍ନ ଆୟକାରୀ ମହିଳା
 ରଣୀଙ୍କ ପାଇଁ ଏକ ବିରାଟ ସହଯୋଗ

[illegible][illegible]

ମନ୍ଦିର। ଉତ୍ତମ ପାଇଁ
ମାଲକୋଟାସନକୁ ଗଣ ପ୍ରଦାନ ଏବଂ
ଆନୁଷ୍ଠାନିକ ଅର୍ଥକ୍ରମର ବ୍ୟବସ୍ଥା, ଯାହା
ଦେବଦ ବନ୍ଧନକୁ ଚ୍ୟୁତି, ଚାଲାଇଛି
ଏବଂ ଉପରେ ଗାନ୍ଧୀଜୀ ଚିନ୍ତନ ବ୍ୟାପ
ପକ୍ଷରୁ ପୂର୍ବ ନିୟାମକ ବୃଦ୍ଧି ଗଢ଼ିଛି ।
ଚାନ୍ଦିନୀଙ୍କ ଏହା ଅବଶିଷ୍ଟ ରହୁଥିବା
ମୁଦ୍ରାଙ୍କ ଉପରେ ଲୁଗାପିନ୍ଧା ଶିଳିକ
ସୂତ୍ର ଲାଗୁ କରିବା ଉପରେ ମଧ୍ୟ
ଆବଶ୍ୟକତା ଦେଉ ଗଢ଼ିଛି । ଏହି
କ୍ଷେତ୍ର ସମ୍ପର୍କ ନିଗଦ କାଳକାର
ବିହୀନ ହେବାକୁ ପ୍ରୟାସ କରୁଛି
ଏବଂ ଏହା ବାସ୍ତବ କରିବା ନିମନ୍ତେ
ତୁଳନାତ୍ମକ ବିବିଧତା ପ୍ରସ୍ତୁତିକୁ ଲାଗୁ
କରୁଛି । ଅନ୍ୟପକ୍ଷରେ ଅଣଆନୁଷ୍ଠାନିକ
ଅର୍ଥକ୍ରମର କ୍ଷେତ୍ରରେ ସାବଧାନତା
ପାଇଁ ନିଆଯାଉଥିବା ଗଣ କ୍ଷେତ୍ରରେ
ମନ୍ଦିର ଉପାଦାନ ଦେବଦ ସମ୍ପର୍କ

ଦେଶରୁହଣି ଏବଂ ଆଗାତାଦନ
ନିରୁପାନ୍ନ ରହୁଛି ।

ମାଲକୋଟାଜନାନ୍ତ ରଥ ଦେଉଳି
ସୁଖ ଅବଧୂର ରଥ, ଯାଗା ସାଲଗର
ଭର୍ତ୍ତନୁହେଁ ଯେଉଁଠୁଟିଏ ଅତି
ଦୀର୍ଘବାନ ଚିଠିଟି, ଯେଉଁଥିରେ ଚଢ଼
ଦ୍ୟବସ୍ଥା ସହିତ ୪୦ରୁ ୬୦ ପ୍ରତିଶତ
ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ମାତ୍ରାଧିକ ସୁଧ ଲାଗୁ
କରାଯାଇଛି ।

ଏମାନଙ୍କୁ ଆଇନରେ ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ
ପଦବୀ ଦିନକେ ଏକ ପୁରୁଷରୂପେ ବି
ଦେଖିଛି, ଏହା ଆଇନର ଅଭାବ
ସ୍ୱାଭାବିକତା ଏବଂ ଆମ ନିୟମ
ସଂଗ୍ରହର ଯାହା ଏକ ଭାବ
ଅଭିବ୍ୟକ୍ତିର ସମାଧାନ ଦେଇଛି
(ବିଶ୍ୱାସର) ଉପରେ ଯୋଗାଯୋଗ
ଏହା ଏହା ସଂସ୍କୃତିର ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ
ପଦାବଳୀ ଏହା ନିଶ୍ଚୟ ନୁହେଁ

୧୮୦୦ ୧୦୨ ୧୦୮୦ରେ
ସେମାନଙ୍କର ଅଭିଯୋଗ ଉପସ୍ଥାପନ
କରି ପାରିବେ। ଏମିତିଆସାଏଏନ
ସିନିଆରଏମ ୧୨ଟି ଗ୍ରାଣ୍ଟରେ
ରାଜସ୍ୱ ସେବିକ ଏବଂ ଯେକୌଣସି
ରାଜ୍ୟର ମହିଳା ସ୍ୱାଧୀନମାନେ
ସ୍ୱାଧୀନ କାର୍ଯ୍ୟକାରୀସୂଚକରେ
ବିଶ୍ୱବ୍ର ନମରୁ ପୂର୍ଣ୍ଣା ୧.୩୦୦
ଅନୁରୁଦ୍ଧ ୪.୩୦ ମଧ୍ୟରେ କଲ୍
କରିପାରିବେ। ଏହି ଅନୁରୁଦ୍ଧ ସୂଚିଆ
ସେବି ମହିଳା ଗ୍ରାଣ୍ଟ ନିମନ୍ତେ
ଉପକଳ ରୁହେଁ, ଯେକୌଣସି
ଅଣାଆସ୍ତ୍ରାନ୍ତିର ସୁରୁରୁ ଗଣ
ନେଉଥିବେ। ଦାସବଦେ ସେମାନେ
ଏହି ଅନିଶ୍ଚିତ ଏବଂ
ଅଣାଆସ୍ତ୍ରାନ୍ତିର ଗଣସ୍ଥାନ କେନ୍ଦ୍ରରେ
କାର୍ଯ୍ୟକାରୀ ଦାସବଦେଶର ତଥା
ଗଣନେ ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ।

Publication	Kalinga Mail
Edition	Puri
Date	October 4, 2020
Page No.	7

ମାଲକୋଫାଲନାନ୍ତୁ କ୍ଷେତ୍ର: ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ ସମୟରେ ନିମ୍ନ ଆୟକାରୀ ମହିଳା ରଣୀଙ୍କ ପାଇଁ ଏକ ବିରାଟ ସହଯୋଗ

ପୁରୀ ୦୨/୦୯(ବୁଧ.ସ.): ଦୁଇ ଦଶନ୍ଧିରୁ ଅଧିକ ସମୟ ଧରି ମାଲକୋଫାଲନାନ୍ତୁ ଶିଳ୍ପ ନିମ୍ନ ଆୟକାରୀ ବର୍ଗ ଏବଂ ଅବହେଳିତ ଗୋଷ୍ଠୀର ମହିଳାମାନଙ୍କୁ ଆର୍ଥିକ ସୁଧାମତା ହାସଲ କରିବା ଦିଗରେ ସହାୟତା କରିଆସୁଛି ଏବଂ ସେମାନଙ୍କୁ ସଠିକ ଆର୍ଥିକ ନିଷ୍ପତ୍ତି ଗ୍ରହଣ କରିବା ନିମନ୍ତେ ସଶକ୍ତ କରୁଛି। ୨୦୨୦ ଜୁନ ୩୦ ପୁରୀ ୫.୮୦ କୋଟିରୁ ଅଧିକ ସ୍ୱତନ୍ତ୍ର ଗ୍ରାହକଙ୍କୁ ସମ୍ପୃକ୍ତି ଏନର୍ବି ଏଫଏସି - ଏମଏଫଆଇ, ବ୍ୟାଙ୍କସମୂହ, କ୍ଷୁଦ୍ର ଆର୍ଥିକଗଣକାରୀ ବ୍ୟାଙ୍କସମୂହ ଅଥବା ସ୍ୱତନ୍ତ୍ର ଏନର୍ବିଏଫସିଗୁଡ଼ିକ ସେବା ଯୋଗାଇ ଆସୁଛନ୍ତି। ଭାରତର ମାଲକୋଫାଲନାନ୍ତୁ କ୍ଷେତ୍ର ନିଷ୍ପତ୍ତିରେ ବଦଳିବାରେ ଲାଗିଛି ଏବଂ ବିଶେଷକରି ଏହି ଅପ୍ରତ୍ୟାଶିତ କୋଭିଡ-୧୯ ସମୟରେ ଏହା ଅନେକଙ୍କ ପାଇଁ ସହାୟତା ହାତ ବଢାଇଛି। ୨୦୧୬ ନଭେମ୍ବରରେ କରାଯାଇଥିବା ବିମୁଦ୍ରାକରଣ ହେଉ

ଅଥବା ୨୦୨୦ରେ ବର୍ତ୍ତମାନ ଦେଖାଦେଇଥିବା ମହାମାରୀ ସମସ୍ତ ବିଷୟକୁ କବଳିତ କରିବା ହେଉ, ମାଲକୋଫାଲନାନ୍ତୁ ଶିଳ୍ପ ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥାରେ ପ୍ରମୁଖ ଭୂମିକା ଗ୍ରହଣ କରୁଛି। ସମ୍ପୃକ୍ତି ପରିସ୍ଥିତିରେ ମନୁଷ୍ୟ ଆର୍ଥିକ କାର୍ଯ୍ୟକଳାପ ଯୋଗୁଁ ରଣୀ ପ୍ରଦାନ ତୁଳନାତ୍ମକ ଭାବେ କମ୍ ରହିଥିବାବେଳେ ମନ ମଧ୍ୟରେ ବଦଳାଇଥିବା ଚାହିଦା ପୁଣି ପରିଲକ୍ଷିତ ହେବ ଏବଂ ମାଲକୋଫାଲନାନ୍ତୁ ମହିଳା ରଣୀଙ୍କୁ ସେବା ପ୍ରଦାନ କରି ରଖିବ, ଆର୍ଥିକ ଏବଂ ଭାବଗତ ଦୃଷ୍ଟିରୁ ସହାୟତା ହାତ ବଢାଇବା ପରିସ୍ଥିତି ଫେରିଆସିବ। ମହିଳା ରଣୀଙ୍କ ପାଇଁ ମାଲକୋଫାଲନାନ୍ତୁ ରଣୀ ପ୍ରଦାନ ଏକ ଆନୁଷ୍ଠାନିକ ଅର୍ଥକ୍ରମ ଚ୍ୟାପ୍ଟର, ଯାହା କେବଳ ବନ୍ଧନମୁକ୍ତ ନୁହେଁ, ତାହାସହିତ ଏହା ଉପରେ ଭାରତୀୟ ଗିର୍ଜନ ବ୍ୟାଙ୍କ ପକ୍ଷରୁ ପୂର୍ଣ୍ଣ ନିଯୋଗ ଦୃଷ୍ଟି ରହିଛି। ତାହାସହିତ ଏହା ଅବଶିଷ୍ଟ ରହିଥିବା ମୂଳଧନ ଉପରେ

କ୍ରମସ୍ଥାପନ ଗିର୍ଜନ ସୁଧ ଲାଗୁ କରିବା ଉପରେ ମଧ୍ୟ ଆବଦିଆଇଲ ନଜର ରହିଛି। ଏହି କ୍ଷେତ୍ର ସମ୍ପୃକ୍ତି ନିମନ୍ତେ କାରବାର ବିହୀନ ହେବାକୁ ପ୍ରସ୍ତାବ କରୁଛି ଏବଂ ଏହା ହାସଲ କରିବା ନିମନ୍ତେ ଦୃଢ଼ପତିରେ ତିନିଟି ପ୍ରସ୍ତୁତିକୁ ଲାଗୁ କରୁଛି। ଅନ୍ୟପକ୍ଷରେ ଅଣଆନୁଷ୍ଠାନିକ ଅର୍ଥକ୍ରମ କ୍ଷେତ୍ରରେ ସାଉକାରକ ଠାରୁ ନିଆଯାଇଥିବା ରଣୀ କ୍ଷେତ୍ରରେ ମହିଳା ରଣୀମାନେ କେବଳ ସୁଧ ଦେଇପାରୁଛନ୍ତି ଏବଂ ସାରାଜୀବନ ନିରୁପାୟ ରହୁଛନ୍ତି। ମାଲକୋଫାଲନାନ୍ତୁ ରଣୀ ହେଉଛି ସ୍ୱଳ୍ପ ଅବଧାନ ରଣୀ, ଯାହା ସାଉକାରକ ଭବିଷ୍ୟତ ଯୋଗୁଁ ଅତି ଦୀର୍ଘକାଳ ବିଶିଷ୍ଟ, ଯେଉଁଥିରେ ବନ୍ଧନ ବ୍ୟବସ୍ଥା ସହିତ ୪୦ରୁ ୬୦ ପ୍ରତିଶତ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ମାତ୍ରାଧିକ ସୁଧ ଲାଗୁ କରାଯାଇଛି। ଏମଏଫଆଇଏନରେ ମହିଳା ରଣୀଙ୍କ ନିମନ୍ତେ ଏକ ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ଦିଗ ହେଉଛି, ଏହା ଆବଦିଆଇ ଦ୍ୱାରା ସ୍ୱୀକୃତିପ୍ରାପ୍ତ ଏକ ଆତ୍ମ ନିଯୋଗ

ସଂଗଠନ ଯାହାର ଏକ ଗ୍ରାହକ ଅଭିଯୋଗ ସମାଧାନ କୌଶଳ (ସିଡିଆରଏମ) ରହିଛି ଯେଉଁଠାରେ ଏହାର ସହସ୍ୟ ସଂସ୍ଥାଗୁଡ଼ିକର ମହିଳା ରଣୀମାନେ ଏହାର ନିଷ୍ପତ୍ତି ନମ୍ବର ୧୮୦୦ ୧୦୨ ୧୦୮୦ରେ ସେମାନଙ୍କର ଅଭିଯୋଗ ଉପସ୍ଥାପନ କରି ପାରିବେ। ଏମଏଫଆଇଏନ ସିଡିଆରଏମ ୧୨ଟି ଭାଷାରେ ଉପଲବ୍ଧ ହେଉଛି ଏବଂ ଯେକୌଣସି ଭାଷାରେ ମହିଳା ଗ୍ରାହକମାନେ ସମ୍ପ୍ରାପ୍ତ କାର୍ଯ୍ୟବିବରଣୀଗୁଡ଼ିକରେ ନିଷ୍ପତ୍ତି ନମ୍ବରକୁ ପୂର୍ବରୁ ୯.୩୦ରୁ ଅପରାହ୍ଣ ୫.୩୦ ମଧ୍ୟାହ୍ନ କଲ୍ କରିପାରିବେ। ଏହି ଅନନ୍ୟ ସୁବିଧା ସେହି ମହିଳା ରଣୀଙ୍କ ନିମନ୍ତେ ଉପଲବ୍ଧ ନୁହେଁ, ଯେଉଁମାନେ ଅଣଆନୁଷ୍ଠାନିକ ସ୍ତରରୁ ରଣୀ ନେଇଥିବେ। ବାସ୍ତବରେ ସେମାନେ ଏହି ଅନିୟନ୍ତ୍ରିତ ଏବଂ ଅଣଆନୁଷ୍ଠାନିକ ରଣୀପ୍ରଦାନ କ୍ଷେତ୍ରରେ କାର୍ଯ୍ୟକରୁଥିବା ବ୍ୟକ୍ତିବିଶେଷଙ୍କ ଦୟା ଉପରେ ନିର୍ଭରଶୀଳ।

Publication	Political & Business Daily
Edition	All Editions
Date	October 4, 2020
Page No.	7

Microfinance sector a great support for low-income women borrowers

PBD BUREAU

BHUBANESWAR, OCT 3

It has now been over two decades that the

Microfinance industry has been helping women from the low income and under-served group achieve financial independence, empowering them to take the right financial decisions.

With over 5.80 crore unique customers as on June 30, 2020, being now served by different entities including the NBFC-MFIs, Banks, the Small Finance Banks or the stand-alone NBFCs, the Indian microfinance sector is undoubtedly changing, especially in these unprecedented Covid-19 times.

Be it the November 2016 Demonetisation and now the 2020 global pandemic engulfing the world, the microfinance industry has been playing a stellar role in financial inclusion.

In the current situation, where the disbursal of loans has been relatively lower owing to subdued economic activity, most feel there will be a pent-up demand that will be witnessed, and microfinance would continue to serve the women borrow-

ers, giving a helping hand to bounce back, financially, as well as emotionally.

Microfinance lending is a formal form of financing for women borrowers,



which is not only collateral free, but also there is complete Regulatory oversight by RBI including on the interest charged which is on a reducing balance basis. The sector is now striving to become cashless and rapidly adopting digital technology to achieve this.

One important aspect for women borrowers is MFIN, an RBI-recognised self-regulatory organisation that has a Customer Grievance Redressal Mechanism (CGRM) in place where women borrowers of its Member organisations can place their grievance on its toll-free number 18001021080. MFIN CGRM is available in 12 languages, and women customers from any state, anywhere in the country can call on the toll-free number between 9:30 am and 5:30 pm on weekdays to register their complaints.

Publication	Darsanna
Edition	Balasore
Date	October 3, 2020
Page No.	5

ମାଲକୋଟାଲନାନ୍ତୁ କ୍ଷେତ୍ର : ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ ସମୟରେ ନିମ୍ନ ଆୟକାରୀ ମହିଳା ରଣାଙ୍କ ପାଇଁ ଏକ ବିରାଟ ସହଯୋଗ

ବାଲେଶ୍ୱର: ପୁର ଦଶର୍ଷିରୁ ଅଧିକ ସମୟ ଧରି ମାଲକୋଟାଲନାନ୍ତୁ କ୍ଷେତ୍ର ନିମ୍ନ ଆୟକାରୀ ବର୍ଗ ଏବଂ ଅବହେଳି ଶେଷର ମହିଳାମାନଙ୍କୁ ଆର୍ଥିକ ସୁଧାମତା ହାସଲ କରିବା ଦିଗରେ ସହାୟତା କରିଆସୁଛି ଏବଂ ସେମାନଙ୍କୁ ସଠିକ ଆର୍ଥିକ ନିଷ୍ପତ୍ତି ଗ୍ରହଣ କରିବା ନିମନ୍ତେ ପ୍ରସ୍ତୁତ କରୁଛି । ୨୦୨୦ ଜୁନ ୩୦ ପୂର୍ବା ୫.୮୦ ବୋରିରୁ ଅଧିକ ସ୍ୱତନ୍ତ୍ର ଗ୍ରହଣକୁ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ଏନବିଏପସି-ଏମଏପଆର, ବ୍ୟାଙ୍କସମୂହ, କ୍ଷୁଦ୍ର ଆର୍ଥିକଶାସକାଳୀ ବ୍ୟାଙ୍କସମୂହ ଆଦି ଦ୍ୱାରା ଏନବିଏପସିକୁ ନିୟମିତ ସେବା ଯୋଗାଇ ଆସୁଅଛି । ବାଲେଶ୍ୱର ମାଲକୋଟାଲନାନ୍ତୁ କ୍ଷେତ୍ର ନିୟମବେଳେ ବଦଳିବାରେ ଲାଗିଛି ଏବଂ ବିଶେଷକରି ଏହି ଅସ୍ତ୍ରୋତ୍ତର କୋଭିଡ-୧୯ ସମୟରେ ଏହା ଅନେକକ ପାଇଁ ସହାୟତା ହୋଇ ଚଳାଇଛି । ୨୦୧୬ ମସିହାରେ କରାଯାଇଥିବା ବିପ୍ଳବକରଣ ସେବା ଆୟତା ୨୦୨୦ରେ ବର୍ଦ୍ଧିତ ଦେଖାଦେଇଥିବା ମାତ୍ରାମା ସମସ୍ତ ବିଶ୍ୱକୁ କବଚିତ କରିବା ସେବା, ମାଲକୋଟାଲନାନ୍ତୁ କ୍ଷେତ୍ର ଆର୍ଥିକ ଅବହେଳାରେ ପ୍ରମୁଖ ଭୂମିକା ଗ୍ରହଣ କରୁଛି । ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ପରିସ୍ଥିତିରେ ମଜୁର ଅର୍ଥନୈତିକ କାର୍ଯ୍ୟକଳାପ ଯୋଗୁଁ ଗଣ ପ୍ରଦାନ ପ୍ରଦାନମୂଳକ ଭାବେ କମ୍ ରହିଥିବାବେଳେ ମନ ମଧ୍ୟରେ ବଢିଯାଇଥିବା ଗଣିତା ପୁଣି ପରିଲକ୍ଷିତ ହେବ ଏବଂ ମାଲକୋଟାଲନାନ୍ତୁ ମହିଳା ରଣାଙ୍କୁ ସେବା ପ୍ରଦାନ କରି ରଖିବ, ଆର୍ଥିକ ଏବଂ ଲାଭପ୍ରାପ୍ତି ଦୃଷ୍ଟିରୁ ସହାୟତା ହୋଇ ଚଳାଇବା ପରିସ୍ଥିତି ଯୋଗିଆସିବ । ମହିଳା ରଣାଙ୍କ ପାଇଁ ମାଲକୋଟାଲନାନ୍ତୁ ଗଣ ପ୍ରଦାନ ଏବଂ ଆନୁଷ୍ଠାନିକ ଅର୍ଥକ୍ଷେତ୍ର ବ୍ୟବସ୍ଥା, ଯାହା କେବଳ ବହୁମୁଖୀ ନୁହେଁ, ଚାହାଣ୍ଡିତ ଏହା ଉପରେ ଲାଭରାଶି ଚିକିତ୍ସା ବ୍ୟାଙ୍କ ପ୍ରସ୍ତୁତ ପୂର୍ବ ନିୟମନ ଦୃଷ୍ଟି ରହିଛି । ଚାହାଣ୍ଡିତ ଏହା ଅବଶିଷ୍ଟ ରହିଥିବା ମୁକାବଲ ଉପରେ

ସମାପ୍ତାବ ଶିକ୍ଷିତ ସୁଧା ଲାଭ କରିବା ଉପରେ ମଧ୍ୟ ଆବଦିଆଇଲ ନିୟମ ରହିଛି । ଏହି କ୍ଷେତ୍ର ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ନିୟମ ବାଲେଶ୍ୱର ଦିହାତ ହେବାକୁ ପ୍ରସ୍ତାବ କରୁଛି ଏବଂ ଏହା ହାସଲ କରିବା ନିମନ୍ତେ ପ୍ରତ୍ୟେକରେ ଚିକିତ୍ସା ପ୍ରମୁଖକୁ ଲାଭ କରୁଛି । ଅନ୍ୟପକ୍ଷରେ ଆନୁଷ୍ଠାନିକ ଅର୍ଥକ୍ଷେତ୍ର କ୍ଷେତ୍ରରେ ସାଧନାକାର ଠାରୁ ନିଆଯାଇଥିବା ଗଣ କ୍ଷେତ୍ରରେ ମହିଳା ରଣାମାନେ କେବଳ ସୁଧ ଦେଇନାସୁଅନ୍ତି ଏବଂ ସାଧନାକାର ନିୟମାବଳୀ ରଖିଛନ୍ତି । ମାଲକୋଟାଲନାନ୍ତୁ ଗଣ ସେବା ପ୍ରତି ଅବଧାନ ରଖି, ଯାହା ସାଧନାକାର ଭବିଷ୍ୟତେ ଯୋଗୁଥିବା ଅତି ବାଣିଜ୍ୟ ଦିଶିବ, ଯେଉଁଥିରେ ବହଳ ବ୍ୟବସ୍ଥା ସହିତ ୪୦ରୁ ୬୦ ପ୍ରତିଶତ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ମାଧ୍ୟମିକ ସୁଧ ଲାଭ କରାଯାଇଛି । ଏମଏପଆର-ଏମଏପ ମହିଳା ରଣାଙ୍କ ନିମନ୍ତେ ଏକ ପ୍ରସ୍ତୁତପୂର୍ବ ଦିବ ସେବା, ଏହା ଆବଦିଆଇ ଦ୍ୱାରା ସ୍ୱାଧିନିୟମ ଏବଂ ଆମ ନିୟମକ ବ୍ୟବସ୍ଥା ଯାହା ଏକ ସ୍ୱାଧିନ ଅର୍ଥଯୋଗ ସମାଧାନ କୋଷ (ସିବିଆରଏମ) ରହିଛି ଯେଉଁଠାରେ ଏହାର ସଦସ୍ୟ ବ୍ୟାଘ୍ରାତ୍ମକତା ମହିଳା ରଣାମାନେ ଏହାର ନିଷ୍ପତ୍ତି ନମ୍ବର ୧୮୦୦ ୧୦୨ ୧୦୮୦ରେ ସେମାନଙ୍କର ଅର୍ଥଯୋଗ ଉପସ୍ଥାପନ କରିପାରିବେ । ଏମଏପଆରଏମ ସିବିଆରଏମ ୧୨ଟି ଭାଷାରେ ଉପଲବ୍ଧ ହେଉଛି ଏବଂ ଯେକୌଣସି ରାଜ୍ୟର ମହିଳା ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟମାନ ସମ୍ପ୍ରାପ୍ତ ଲାଭନିବେଶପ୍ରତିରେ ନିଷ୍ପତ୍ତି ନମ୍ବରକୁ ପୂର୍ଣ୍ଣ ୯.୩୦ରୁ ଅପରାହ୍ଣ ୫.୩୦ ମଧ୍ୟରେ କଲ୍ କରିପାରିବେ । ଏହି ଅନନ୍ୟ ଦୃଷ୍ଟିରୁ ସେହି ମହିଳା ରଣାଙ୍କ ନିମନ୍ତେ ଉପଲବ୍ଧ ନୁହେଁ, ଯେଉଁମାନେ ଆନୁଷ୍ଠାନିକ ସ୍ୱତନ୍ତ୍ର ଗଣ ନେଇଥିବେ । ବାଲେଶ୍ୱର ସେମାନେ ଏହି ଅନିଷ୍ଠିତ ଏବଂ ଆନୁଷ୍ଠାନିକ ଉପସ୍ଥାନ କ୍ଷେତ୍ରରେ କାର୍ଯ୍ୟକରୁଥିବା ବ୍ୟକ୍ତିବିଶେଷଙ୍କ ଦୟା ଉପରେ ନିର୍ଭରଶୀଳ ।

Publication	Utkal Samaj
Edition	Puri
Date	October 3, 2020
Page No.	6

ମାଇକ୍ରୋଫୋନ୍‌ମାନଙ୍କୁ କ୍ଷେତ୍ର:
ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ ସମୟରେ ନିମ୍ନ ଆୟତ୍ତର ମହିଳା
ରଣୀଙ୍କ ପାଇଁ ଏକ ବିରାଟ ସହଯୋଗ

ପୁରୀ ୨/୧୦(ରବିବାର): ଦୁଇ
ଦଶକରୁ ଅଧିକ ବୟସ୍କ ଧରି
ମହାଭୋଗାଳୟ ଶେଷ ଦିନୁ ଆୟତ୍ତ
ହେବେ ଏବଂ ଅବଶେଷ ଗୋଷାଠ
ମନ୍ଦିରମାନଙ୍କୁ ଆସିବ ପୂଜାଳୟ ନାସ
କରିବା ବିଚାର ଆୟତ୍ତ କରିଆସୁଛି
ଏବଂ ସେମାନଙ୍କୁ ଉପର ଆସିବ ନିଶ୍ଚି
ହେବା କରିବା ନିମନ୍ତେ ଉପାୟ ନେଇ

[illegible]

ଅନେକଙ୍କ ପାଇଁ ସହାୟତା ଡାକ୍ତରୀ ଚାଲିଛି ।

୨୦୧୬ ନଭେମ୍ବର
କରାଯାଇଥିବା ବିମୁକ୍ତାବଳୀ ଦେଇ
ଅସିବା ୨୦୨୦ରେ ବର୍ତ୍ତମାନ
ଦେଶରେଥିବା ମହାମାରୀ ସମ୍ଭବ ବିଷୟ
ବଦଳିତ କରିବା ହେଉ,
ମାଲକୋଟାଜନମାନଙ୍କୁ ଶିକ୍ଷା ଆର୍ଥିକ
ଆଦିରେ ପୁନଃ ନିର୍ମାଣ କରାଯିବ।

ସ୍ବାସ୍ଥ୍ୟକ ପରିସ୍ଥିତିରେ ମନୁଷ୍ୟ
ଅଧିକେଇ କାର୍ଯ୍ୟକାରୀ ହୋଇଥାଏ ଓ
ସୁବଳ ହୁଏ। ମନୁଷ୍ୟ ଭାବେ କମ
କରିଥିବାବେଳେ ମନ ମାଧ୍ୟମରେ
ଦୃଢ଼ପାତ୍ରତା ଦର୍ଶିବା ପ୍ରତି ପରିବର୍ତ୍ତିତ
ହେବ ଏବଂ ମାନବୋପକାରୀ ମନିଷ୍ୟ
କିମ୍ବା ଶେଷ ସ୍ତରର ଜାତି ଗୁଡ଼ିକ,
ଆମ ଏବଂ ଭାରତୀୟ ଲୋକମାନଙ୍କ
ଭାବ ପଦାଂଶ ପରିସ୍ଥିତି ଗୋଟିଏପିଟି

[illegible]

ଦେଉଳଦାମୁଛୁ ଏବଂ ସାଗାଡ଼ାଦଳ
ବିରଘାଣ ଗହଳ ।

ମାଲହୋତ୍ରାଙ୍କରୁ ଗଣ ଦେଖି ସୁଦ୍ଧା ଅବଧାନ ଗଣ, ଯାହା ସାବଧାନକ ଭବିଷ୍ୟତେ ଯେଉଁସୁଦ୍ଧିକ ଅତି ଦୀର୍ଘକାଳ ବିଚିତ୍ର, ଯେଉଁସୁଦ୍ଧିକ ବନ୍ଧନ ବ୍ୟବସ୍ଥା ସମ୍ପର୍କ ୪୦ରୁ ୬୦ ପ୍ରତିଶତ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ମାଲହୋତ୍ରାଙ୍କୁ ବୁଧ ଭାବୁ କରାଯାଉଛି ।

ଏମିତିଆଇଏସ୍‌ରେ ମହିଳା
ଭଣ୍ଡାଜି ନିମନ୍ତେ ଏକ ସ୍ୱତନ୍ତ୍ରପୁଷ୍ପ ଦିନ
ବେଳେଟି, ଏହା ଆଦର୍ଶଆଇ ଡାକ୍ତା
ସ୍ୱାକ୍ତିସ୍ତ୍ରୀ ଏବଂ ଆମ୍ଭ ନିଜାମକ
ସଂସ୍କରଣ ଯାକାର ଏକ ପ୍ରାକର
ଆଦିଭୋଗ ସମାଧାନ କୌଣସି
(ସିଦ୍ଧିଆଇଏସ୍) ଗଣିତ ଯେଉଁଠାରେ
ଏହାର ବର୍ତ୍ତମାନ ସଂସ୍କାରପ୍ରତିନିଧିତା
ଭଣ୍ଡାଜିରେ ଏହାର ନିଶ୍ଚୟ ନିଶ୍ଚୟ

୧୮୦୦ ୧୦୭ ୧୦୮୦୭୧
ସେନାନଙ୍କର ଅଭିଯୋଗ ଉପସ୍ଥାପନ

କର୍ତ୍ତିପାରିତେ। ଏମିତିଆଇଏମ
ସିଟିଆଇଏମ ୧୨ଟି ଭାଷାରେ
ଉପଲବ୍ଧ ହେଉଛି ଏବଂ ଯେକୌଣସି
ଭାଷୀମାନେ ମହିଳା ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟକର୍ମୀଙ୍କ
ସମ୍ମୁଖରେ କାର୍ଯ୍ୟକାରୀବସ୍ତୁକିଲେ
ଟିଏଶ୍ୱର ନମ୍ବରରୁ ପୂର୍ବରୁ ୧.୩୦ରୁ
ଅପରାହ୍ନ ୫.୩୦ ମଧ୍ୟରେ କଲ

କରିବାପରେ ଏହି ଅନଳୟ ବୃଦ୍ଧି
ଦେଖି ମହତା ରାଣୀଙ୍କ ଡିମା
ଭବଭାବ ବୁଝେ, ଯେଉଁମାନେ
ଅପାଆନ୍ତାରିକ ବୁଝୁଛନ୍ତି ଯେ
ନେହାସୁରେ। ବାବଦରେ ଦେଖିଲେ
ଏହି ଅଭିଯୋଗ ଏବଂ
ଅପାଆନ୍ତାରିକ ଗତପ୍ରାୟ ଯେହେତୁ
କାର୍ଯ୍ୟକାରୀ ବାହାରିବେଶର ବାହା
ବଦଳେ ଗୁରୁତ୍ୱପାତ୍ର।

Publication	Hiranchal
Edition	Sambalpur
Date	October 2, 2020
Page No.	5

ମାଲକୋପାଳନାମୁ କ୍ଷେତ୍ର: ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ ସମୟରେ ନିମ୍ନ ଆୟକାରୀ ମହିଳା ରଣାଙ୍କ ପାଇଁ ଏକ ବିରାଟ ସହଯୋଗ

ସମ୍ବଲପୁର: ଦୁଇ ଦଶନ୍ଧିରୁ ନିଶ୍ଚୟରେ ବଦଳିବାରେ ଲାଗିଛି ଏବଂ ବିଶେଷକରି ଏହି ଅପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷିତ କୋଭିଡ-୧୯ ସମୟରେ ଏହା ଅନେକଙ୍କ ପାଇଁ ସହାୟତା ହାତ କରାଇଛି। ୨୦୧୬ ନଭେମ୍ବରରେ ନରାୟଣପୁରା ବିପ୍ଳବୀବରଣୀ ହେଉ ଅଥବା ୨୦୨୦ରେ ବର୍ତ୍ତମାନ ଦେଶାବେଦନପୁରା ମହାମାରୀ ସମସ୍ତ ବିଶ୍ୱରୁ କବଳିତ କରିବା ହେଉ, ମାଲକୋପାଳନାମୁ ଶିଳ୍ପ ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥିତିରେ ପ୍ରମୁଖ ଭୂମିକା ଗ୍ରହଣ କରୁଛି। ସାମ୍ପ୍ରତିକ ପରିସ୍ଥିତିରେ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ପରିଚ୍ଛେଦିତ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଯୋଗୁଁ ଉଣା ପ୍ରଦାନ ବୁଝାମଣାକୁ ଭାବେ କମ କରିଥିବାବେଳେ ମନ ମଧ୍ୟରେ ବଦଳିଯାଇଥିବା ଚାହିଦା ପୁଣି ପରିଚ୍ଛେଦିତ ହେବ ଏବଂ ମାଲକୋପାଳନାମୁ ମହିଳା ରଣାଙ୍କୁ ସେବା ପ୍ରଦାନ କରି ରଖିବ, ଆର୍ଥିକ ଏବଂ ଭାବଗତ ଦୃଷ୍ଟିରୁ ସହାୟତା ହାତ କରାଇବା ପରିସ୍ଥିତି ସୃଷ୍ଟିଆସିବ। ମହିଳା ରଣାଙ୍କ ପାଇଁ ମାଲକୋପାଳନାମୁ ଉଣା ପ୍ରଦାନ ଏବଂ ଆନୁଷ୍ଠାନିକ ଅର୍ଥନୀତିରୁ ବ୍ୟବସ୍ଥା, ଯାହା କେବଳ ବ୍ୟବସ୍ଥାକୁ ନୁହେଁ, ଚାହାଣ୍ଡିତ ଏହା ଉପରେ ଭାରତୀୟ ଚିକିତ୍ସା ବ୍ୟାଙ୍କ ପକ୍ଷରୁ ପୂର୍ଣ୍ଣ ନିୟମକ ଦୃଷ୍ଟି ରହିଛି। ଚାହାଣ୍ଡିତ ଏହା ଅବଶିଷ୍ଟ ରହିଥିବା ମୁକ୍ତାବଳ ଉପରେ କୁମାରୀଙ୍କ ଭିତ୍ତିକ ପୁଅ ଲାଲୁ କରିବା ଉପରେ ମଧ୍ୟ ଆବଶ୍ୟକତା ନଜର ରହିଛି। ଏହି କ୍ଷେତ୍ର ଉନ୍ନତି ନଗର କାରବାର ବିହୀନ ହେବାକୁ ପ୍ରୟାସ କରୁଛି ଏବଂ ଏହା ହାସଲ କରିବା ନିମନ୍ତେ ଦୁରନ୍ତରେ ବିଚିତ୍ରତାକୁ ପ୍ରମୁଖ ଭାବୁ ନିଆଯାଇଥିବା ଉଣା କ୍ଷେତ୍ରରେ ମହିଳା ରଣାମାନେ କେବଳ ସୁଧ ଦେବାକୁ ହେଉଛି ଏବଂ ସାମାଜିକ ନିରୁପାୟ ରହୁଛି।

ମାଲକୋପାଳନାମୁ ଉଣା ହେଉଛି ସ୍ୱଳ୍ପ ଅବଧାନ ରଖି, ଯାହା ସାମାଜିକ ଭିତ୍ତିକ ଯୋଗାଣର ଅତି ବ୍ୟବହାର ବିଶିଷ୍ଟ, ଯେଉଁଥିରେ ବ୍ୟବସ୍ଥା ସହିତ ୪୦ରୁ ୬୦ ପ୍ରତିଶତ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ମାତ୍ରାଧିକ ସୁଧ ଲାଗୁ କରାଯାଉଛି। ଏମିତିଆଇଏନରେ ମହିଳା ରଣାଙ୍କ ନିମନ୍ତେ ଏକ କୁରୁମ୍ପୁର୍ଣ୍ଣ ଦିନ ହେଉଛି, ଏହା ଆବଶ୍ୟକ ଦ୍ୱାରା ସ୍ୱାବୃତ୍ତିପ୍ରାପ୍ତ ଏବଂ ଆତ୍ମ ନିୟମକ ସଂରଠନ ଯାହାର ଏକ ସ୍ୱାଦିତ୍ୱ ଅଭିଯୋଗ ସମାଧାନ କୌଶଳ (ସିଟିଆଇଏନ) ରହିଛି ଯେଉଁଠାରେ ଏହାର ସଦସ୍ୟ ସଂଗ୍ରହକୃତର ମହିଳା ରଣାମାନେ ଏହାର ନିଶ୍ଚିତ ନମର ୧୮୦୦ ୧୦୨ ୧୦୮୦ରେ ସେମାନଙ୍କର ଅଭିଯୋଗ ଉପସ୍ଥାପନ କରିପାରିବେ। ଏମିତିଆଇଏନ ସିଟିଆଇଏନ ୧୨ଟି ଲାକ୍ଷରେ ଉପକଳ୍ପ ହେଉଛି ଏବଂ ଯେକୌଣସି ରାଜ୍ୟର ମହିଳା ସ୍ୱାଦିତ୍ୱମାନେ ସପ୍ତାହର କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମକୁ ଗ୍ରହଣ କରି ନିଶ୍ଚିତ ନମରରୁ ପୂର୍ଣ୍ଣ ୯.୩୦ରୁ ଅପରାହ୍ଣ ୫.୩୦ ମଧ୍ୟରେ କଲ କରିପାରିବେ। ଏହି ଅନନ୍ୟ ସୁବିଧା ସେହି ମହିଳା ରଣାଙ୍କ ନିମନ୍ତେ ଉପକଳ୍ପ ନୁହେଁ, ଯେଉଁମାନେ ଅଣଆନୁଷ୍ଠାନିକ କୃତରୁ ଉଣା ନେଇଥିବେ।

Publication	Suryaparva
Edition	All Editions
Date	October 2, 2020
Page No.	8

ମାଲକୋଫାଲନାନ୍ତୁ କ୍ଷେତ୍ର: ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ ସମୟରେ ନିମ୍ନ ଆୟକାରୀ ମହିଳା ରଣାଙ୍କ ପାଇଁ ଏକ ବିରାଟ ସହଯୋଗ

॥ ପ୍ରଭାନ୍ତ୍ୟକ ॥ ଭୁବନେଶ୍ୱର, ୧।୧୦ : ଦୁଇ ଦଶନ୍ଧିରୁ ଅଧିକ ସମୟ ଧରି ମାଲକୋଫାଲନାନ୍ତୁ ଶିଳ୍ପ ନିମ୍ନ ଆୟକାରୀ ବର୍ଗ ଏବଂ ଅବହେଳିତ ଗୋଷ୍ଠୀର ମହିଳାଙ୍କୁ ଆର୍ଥିକ ସ୍ୱାଧୀନତା ହାସଲ କରିବା ଦିଗରେ ସହାୟତା କରିଆସୁଛି ଏବଂ ସେମାନଙ୍କୁ ସଠିକ ଆର୍ଥିକ ନିଷ୍ପତ୍ତି ଗ୍ରହଣ କରିବା ନିମନ୍ତେ ସଶକ୍ତ କରୁଛି । ୨୦୨୦ ଜୁନ ୩୦ ସୁଦ୍ଧା ୫.୮୦ କୋଟିରୁ ଅଧିକ ସ୍ୱତନ୍ତ୍ର ଗ୍ରାହକଙ୍କୁ ସମ୍ପୃତି ଏନବିଏଫସି-ଏମଏଫଆଇ, ବ୍ୟାଙ୍କସମୂହ, କ୍ଷୁଦ୍ର ଅର୍ଥଲଗାଣକାରୀ ବ୍ୟାଙ୍କସମୂହ ଅଥବା ସ୍ୱତନ୍ତ୍ର ଏନବିଏଫସିଗୁଡ଼ିକ ସେବା ଯୋଗାଇ ଆସୁଛନ୍ତି । ଭାରତର ମାଲକୋଫାଲନାନ୍ତୁ କ୍ଷେତ୍ର ନିଃସନ୍ଦେହରେ ବଦଳିବାରେ ଲାଗିଛି ଏବଂ ବିଶେଷକରି ଏହି ଅପ୍ରତ୍ୟାଶିତ କୋଭିଡ-୧୯ ସମୟରେ ଏହା ଅନେକଙ୍କ ପାଇଁ ସହାୟତାର ହାତ ବଢାଇଛି । ୨୦୧୬ ନଭେମ୍ବରରେ କରାଯାଇଥିବା ବିମୁଦ୍ରାକରଣ ହେଉ ଅଥବା ୨୦୨୦ରେ ବର୍ତ୍ତମାନ ଦେଖାଦେଇଥିବା ମହାମାରୀ ସମଗ୍ର ବିଶ୍ୱକୁ ଜବଳିତ କରିବା ହେଉ, ମାଲକୋଫାଲନାନ୍ତୁ ଶିଳ୍ପ ଆର୍ଥିକ ଅନ୍ତର୍ଭୁକ୍ତରେ ପ୍ରମୁଖ ଭୂମିକା ଗ୍ରହଣ କରୁଛି । ଏମଏଫଆଇଏନରେ ମହିଳା ରଣାଙ୍କ ନିମନ୍ତେ ଏକ ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ଦିଗ ହେଉଛି, ଏହା ଆଗବିଆଇ ଦ୍ୱାରା ସ୍ୱାକୃତିପ୍ରାପ୍ତ ଏକ ଆଦୁନିୟାମକ ସଂଗଠନ ଯାହାର ଏକ ଗ୍ରାହକ ଅଭିଯୋଗ ସମାଧାନ କୌଶଳ (ସିଜିଆରଏମ) ରହିଛି ଯେଉଁଠାରେ ଏହାର ସଦସ୍ୟ ସଂସ୍ଥାଗୁଡ଼ିକର ମହିଳା ରଣାମାନେ ଏହାର ନିଃଶୁଳ୍ଲ ନମ୍ବର ୧୮୦୦ ୧୦୨ ୧୦୮୦ରେ ସେମାନଙ୍କର ଅଭିଯୋଗ ଉପସ୍ଥାପନ କରିପାରିବେ ।

Publication	Pramad
Edition	Cuttack
Date	October 1, 2020
Page No.	7

ମାଲକୋପାଳନାମ୍ନୁ କ୍ଷେତ୍ର: ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ ସମୟରେ ନିମ୍ନ ଆୟକାରୀ ମହିଳା ରଣାଙ୍କ ପାଇଁ ଏକ ବିରାଟ ସହଯୋଗ

କଟକ : ଦୁଇ ବର୍ଷରୁ ଅଧିକ ସମୟ ଧରି ମାଲକୋପାଳନାମ୍ନୁ ଶିକ୍ଷା ନିମ୍ନ ଆୟକାରୀ ଚର୍ଚ୍ଚ ଏବଂ ଅବହେଳି ଗୋଷ୍ଠୀର ମହିଳାମାନଙ୍କୁ ଆର୍ଥିକ ସ୍ୱାଧୀନତା ଉପକ୍ରମ କରିବା ଦିଗରେ ସହାୟତା କରିଆସୁଛି ଏବଂ ସେମାନଙ୍କୁ ସଠିକ ଆର୍ଥିକ ନିଶ୍ଚିତ ରୁହଣ କରିବା ନିମନ୍ତେ ସଫଳ କରୁଛି । ୨୦୨୦ ଜୁନ ୩୦ ସୁଦ୍ଧା ୫.୮୦ କୋଟିରୁ ଅଧିକ ସ୍ୱତନ୍ତ୍ର ପ୍ରାଧିକାର ସମ୍ପ୍ରତି ଏନଟିଏପି-ଏମଏପିଆଇ, ଟ୍ୟାକ୍ସଗ୍ରୁପ୍, କ୍ଷୁଦ୍ର ଆର୍ଥିକଶକ୍ତିକାରୀ ଟ୍ୟାକ୍ସଗ୍ରୁପ୍ ଅଥବା ସ୍ୱତନ୍ତ୍ର ଏନଟିଏପିସିଟିଏ ସେବା ଯୋଗାଇ ଆସୁଛନ୍ତି । ଭାରତର ମାଲକୋପାଳନାମ୍ନୁ କ୍ଷେତ୍ର ନିଃସହଯୋଗରେ ବଦଳିବାରେ ଲାଗିଛି ଏବଂ ପିଣ୍ଡେକ୍ସରୁ ଏହି ଆୟକାରୀଙ୍କୁ ଯୋଗାଇ-୧୯ ସମୟରେ ଏହା ଅନେକଙ୍କ ପାଇଁ ସହାୟତା ହାତ ବଢାଇଛି । ୨୦୧୬ ନଭେମ୍ବରରେ କରାଯାଇଥିବା ବିମୁକ୍ତକରଣ ଯେଉଁ ଅଥବା ୨୦୨୦ରେ ବର୍ତ୍ତମାନ ଦେଖାଦେଇଥିବା ମହାମାରୀ ସମସ୍ତ ବିଶ୍ୱକୁ ଜବଳିତ କରିବା ସେଇ, ମାଲକୋପାଳନାମ୍ନୁ ଶିକ୍ଷା ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥିତିରେ ପ୍ରମୁଖ ଭୂମିକା ଗ୍ରହଣ କରୁଛି । ସମ୍ପ୍ରତିର ପରିସ୍ଥିତିରେ ମହତ୍ତ୍ୱ ଆର୍ଥିକନିତ ଗର୍ଭାବସ୍ଥାରେ ଯେଉଁ ଗଣ ପ୍ରଧାନ ଭୂମିକା ଗ୍ରହଣ କରୁଛନ୍ତି ତାହା ଗ୍ରହଣ କରୁଛନ୍ତି ।

କେବେ ମନ ମଧ୍ୟରେ ଦେଇଯାଇଥିବା ଗର୍ଭାବସ୍ଥା ପ୍ରଣି ପରିବର୍ତ୍ତନ ହେବ ଏବଂ ମାଲକୋପାଳନାମ୍ନୁ ମହିଳା ରଣାଙ୍କୁ ସେବା ପ୍ରଦାନ କରି ରଖିବ, ଆର୍ଥିକ ଏବଂ ଜୀବନର ଦୃଷ୍ଟିରୁ ସହାୟତା ହାତ ବଢାଇବା ପରିସ୍ଥିତି ସୃଷ୍ଟିଆସିବ । ମହିଳା ରଣାଙ୍କ ପାଇଁ ମାଲକୋପାଳନାମ୍ନୁ ଉଣ ପ୍ରଦାନ ଏବଂ ଆନୁଷ୍ଠାନିକ ଆର୍ଥିକଶକ୍ତି ବ୍ୟବସ୍ଥା, ଯାହା କେବଳ ଉଚ୍ଚବିଦ୍ୟାଳୟ ନୁହେଁ, ଶାସ୍ତ୍ରସିଦ୍ଧ ଏହା ଉପରେ ଉଚ୍ଚତାରେ ବିଚାର ବ୍ୟାଙ୍କ ପକ୍ଷରୁ ପୂର୍ଣ୍ଣ ନିୟମର ଦୃଷ୍ଟି ରହିଛି । ଉଚ୍ଚବିଦ୍ୟାଳୟ ଏହା ଅବଶିଷ୍ଟ ଉତ୍ତରାଧିକାର ଉପରେ କୃମିସ୍ତ୍ରାସ ଗିରିନ ଖୁସି ଲାଗୁ କରିବା ଉପରେ ମଧ୍ୟ ଆବଶ୍ୟକତା ନକର ରହିଛି । ଏହି କ୍ଷେତ୍ର ସମ୍ପ୍ରତି ନବର କାରବାର ଦିନେ କେବଳ ପ୍ରସାସ କରୁଛି ଏବଂ ଏହା ଶାସ୍ତ୍ର କରିବା ନିମନ୍ତେ ପ୍ରଦାନରେ ପରିଣତ ପ୍ରମୁଖ ଲାଗୁ କରୁଛି । ଅନ୍ୟପକ୍ଷରେ ଅଣଆନୁଷ୍ଠାନିକ ଆର୍ଥିକଶକ୍ତି କ୍ଷେତ୍ରରେ ସାହାଯ୍ୟକାରୀ ପାସୁ ନିଆଯାଇଥିବା ଗଣ କ୍ଷେତ୍ରରେ ମହିଳା ରଣାମାନେ କେବଳ ସୁଧ ବେରାଗାକୁହାରି ଏବଂ ସାହାଯ୍ୟକାରୀ ନିରୁପାୟ ଗହୁହାରି । ମାଲକୋପାଳନାମ୍ନୁ ଉଣ ଯେଉଁ ସ୍ୱା ଅବଧାର ଉଣ, ଯାହା ସାହାଯ୍ୟକାରୀ କରିନୁହେଁ ଯେଉଁସ୍ଥିତିର ଆତି ବାଞ୍ଛନୀକ ବିଶିଷ୍ଟ, ଯେଉଁଠିରେ

କେବଳ ବ୍ୟବସ୍ଥା ସହିତ ୪୦ରୁ ୬୦ ପ୍ରତିଶତ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ମାତ୍ରାଧିକ ସୁଧ ଲାଗୁ କରାଯାଇଛି । ଏମଏପିଆଇଏନରେ ମହିଳା ରଣାଙ୍କ ନିମନ୍ତେ ଏକ ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ଦିଗ ଯେଉଁ, ଏହା ଆବଶ୍ୟକ ଦୁଇ ସ୍ୱାଧୀନତାପ୍ରାପ୍ତ ଏକ ଆତ୍ମ ନିୟମର ବ୍ୟବହାର ଯାହା ଏବଂ ଗ୍ରାହକ ଅଭିଯୋଗ ସମାଧାନ କୌଶଳ (ସିରିଆଲ-ଏମ) ରହିଛି ଯେଉଁଠିରେ ଏହାର ସେବା ସଂସ୍କରଣର ମହିଳା ରଣାମାନେ ଏହାର ନିଶ୍ଚୟ ନମ୍ବର ୧୮୦୦ ୧୦୨ ୧୦୮୦ରେ ସେମାନଙ୍କର ଅଭିଯୋଗ ଉପସ୍ଥାପନ କରିପାରିବେ । ଏମଏପିଆଇଏନ ସିରିଆଲ-ଏମ ୧୨ଟି ଲକ୍ଷ୍ୟରେ ଉପକ୍ରମ ହେଉଛି ଏବଂ ଯେଉଁଠିରୁ ଗ୍ରାହକ ମହିଳା ଗ୍ରାହକମାନେ ସମ୍ପ୍ରାପ୍ତ ଲାଭାଂଶିକତା ଦୃଷ୍ଟିକରେ ନିଶ୍ଚୟ ନମ୍ବର ପୂର୍ଣ୍ଣ ୯.୩୦ରୁ ଅପରାଧ ୫.୩୦ ମଧ୍ୟରେ କରୁ କରିପାରିବେ । ଏହି ଅନନ୍ୟ ସୁବିଧା ସେହି ମହିଳା ରଣାଙ୍କ ନିମନ୍ତେ ଉପକ୍ରମ ନୁହେଁ, ଯେଉଁମାନେ ଅଣଆନୁଷ୍ଠାନିକ ସ୍ୱତନ୍ତ୍ର ଉଣ କେଉଁଠି । ବ୍ୟବସ୍ଥାରେ ସେମାନେ ଏହି ଅନିଶ୍ଚିତ ଏବଂ ଅଣଆନୁଷ୍ଠାନିକ ଉପସ୍ଥାପନ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଲାଭ କରୁଥିବା ବ୍ୟକ୍ତି ବିଶେଷକ ଦୟା ଉପରେ ନିର୍ଭରଶୀଳ ।

Publication	Samaja
Edition	All Editions
Date	October 1, 2020
Page No.	10

କୋଭିଡ଼ ସମୟରେ ୬୪% ଏମଏଫଆଇ ରଣ ପୁନର୍ବିନ୍ୟାସ କରିଛନ୍ତି

ମୁମ୍ବାଇ, ୩୦।୯: କୋଭିଡ଼ ମହାମାରୀ ସମୟରେ ଭାରତୀୟ ରିଜର୍ଭ ବ୍ୟାଙ୍କ ପକ୍ଷରୁ ପ୍ରଥମେ ତିନିମାସ ଏବଂ ପରବର୍ତ୍ତୀ ସମୟରେ ଆଉ ତିନିମାସ ପାଇଁ ରଣ ପରିଶୋଧ ସ୍ଥିତି ରଖିବାକୁ କୁହାଯିବା ପରେ କ୍ଷୁଦ୍ର ଅର୍ଥଲଗାଣକାରୀ ସଂସ୍ଥାଠାରୁ ଆରମ୍ଭ କରି ବ୍ୟାଙ୍କଗୁଡ଼ିକ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଉକ୍ତ ନିର୍ଦ୍ଦେଶ ପାଳନ କରିଛନ୍ତି । ଏହି ସମୟରେ କ୍ଷୁଦ୍ର ଅର୍ଥଲଗାଣକାରୀ ସଂସ୍ଥାଗୁଡ଼ିକ ମଧ୍ୟରୁ ପ୍ରାୟ ୮୫ ପ୍ରତିଶତ ରଣ ନେଇଥିବା ବ୍ୟକ୍ତିଗଣଙ୍କ କ୍ଷେତ୍ରରେ କେତେକ କୋହଳ ମନୋଭାବ ପ୍ରଦର୍ଶନ କରିଥିବା ଜଣାଯାଇଛି । ଏମଏଫଆଇଗୁଡ଼ିକ ମଧ୍ୟରୁ ରଣ ପରିଶୋଧ ସ୍ଥିତି ରଖିବା ନିର୍ଦ୍ଦେଶକୁ ପାଳନ କରିଥିବାବେଳେ ୬୪% ରଣର ପୁନର୍ବିନ୍ୟାସ କରିଛନ୍ତି । ୧୦% ଅନାଦାୟ ରଣ ଛାଡ଼

କରିଥିବା ଜଣାଯାଇଛି । ଏହି ମହାମାରୀ ସମୟରେ ସମାଜର ଦୁର୍ବଳ ଓ ଅବହେଳିତ ବର୍ଗର ମହିଳାମାନଙ୍କୁ ଏମଏଫଆଇଗୁଡ଼ିକ ଆର୍ଥିକ ସ୍ୱାଧୀନତା ହାସଲ ଦିଗରେ ସହାୟତା କରିଛନ୍ତି । ଏକ ସୂତ୍ର ଅନୁଯାୟୀ ଚଳିତ ବର୍ଷ ଜୁନ୍ ୩୦ ସୁଦ୍ଧା ୫.୮୦ କୋଟିରୁ ଅଧିକ ସ୍ୱତନ୍ତ୍ର ଗ୍ରାହକଙ୍କୁ ଏନବିଏଫସି-ଏମଏଫଆଇ, ବ୍ୟାଙ୍କସମୂହ, କ୍ଷୁଦ୍ର ଅର୍ଥଲଗାଣକାରୀ ବ୍ୟାଙ୍କସମୂହ ଏବଂ ସ୍ୱତନ୍ତ୍ର ଏନବିଏଫସିଗୁଡ଼ିକ ସେବା ଯୋଗାଇ ଦେଇଛନ୍ତି । ଭାରତୀୟ ରିଜର୍ଭ ବ୍ୟାଙ୍କର ନିୟାମକ ବ୍ୟବସ୍ଥାରେ ପରିଚାଳିତ ଏହି ଅର୍ଥଲଗାଣକାରୀ ସଂସ୍ଥାଗୁଡ଼ିକ ସମ୍ପ୍ରତି ସେମାନଙ୍କର କାରବାର ଡିଜିଟାଲ କରିବା ଦିଗରେ ଅଗ୍ରସର ହେଉଛନ୍ତି ।

Publication	Manthan
Edition	Balasore
Date	September 30, 2020
Page No.	6

ମାଲକୋପାଳନାନ୍ତୁ କ୍ଷେତ୍ର: ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ ସମୟରେ ନିମ୍ନ ଆୟକାରୀ ମହିଳା ରଣୀଙ୍କ ପାଇଁ ଏକ ବିରାଟ ସହଯୋଗ

କାଲକତ୍ତା, ୨୯/୯ (ନିପ୍ତ): ଦୁଇ ଦଶନ୍ଧିରୁ ଅଧିକ ସମୟ ଧରି ମାଲକୋପାଳନାନ୍ତୁ ଶିଳ୍ପ ନିମ୍ନ ଆୟକାରୀ ବର୍ଗ ଏବଂ ଅବହେଳି ଗୋଷ୍ଠୀର ମହିଳାମାନଙ୍କୁ ଆର୍ଥିକ ସ୍ୱାଧୀନତା ଯାହା କରିବା ଦିଗରେ ସହଯୋଗ କରିଆସୁଛି ଏବଂ ସେମାନଙ୍କୁ ସଠିକ ଆର୍ଥିକ ନିଷ୍ପତ୍ତି ପ୍ରଦାନ କରିବା ନିମନ୍ତେ ସଫଳ ନୁହେଁ । ୨୦୨୦ ଜୁନ ୩୦ ସୁଦ୍ଧା ୫.୮୦ କୋଟିରୁ ଅଧିକ ସ୍ୱତନ୍ତ୍ର ଗ୍ରାହକଙ୍କୁ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ଏନବିଏମ୍‌ସି-ଏମଏମ୍‌ଆଇ, ବ୍ୟାଙ୍କସମୂହ, ଶୁଦ୍ଧ ଆର୍ଥିକଗାଣିକାରୀ ବ୍ୟାଙ୍କସମୂହ ଆଦିଙ୍କୁ । ଭାରତର ମାଲକୋପାଳନାନ୍ତୁ କ୍ଷେତ୍ର ନିମ୍ନବର୍ଗରେ ବ୍ୟବସାୟରେ ଲାଗିଛି ଏବଂ ବିଶେଷକରି ଏହି ଅପ୍ରତ୍ୟାଶିତ କୋଭିଡ-୧୯ ସମୟରେ ଏହା ଅନେକଙ୍କ ପାଇଁ ସହାୟତା ଯୋଗାଇ ଦେଇଛି । ୨୦୧୬ ନଭେମ୍ବରରେ କରାଯାଇଥିବା ବିପ୍ଳବକରଣ ଦେଇ ଆମର ୨୦୨୦ରେ ବର୍ତ୍ତମାନ ଦେଖାଦେଇଥିବା ମହାମାରୀ ସମସ୍ତ ବିଶ୍ୱକୁ କବଳିତ କରିବା ଦେଇ, ମାଲକୋପାଳନାନ୍ତୁ

ଶିଳ୍ପ ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥିତିରେ ପ୍ରମୁଖ ଭୂମିକା ଗ୍ରହଣ କରୁଛି । ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ପରିସ୍ଥିତିରେ ମଜୁରୀ ଆର୍ଥିକକ୍ଷେତ୍ର କାର୍ଯ୍ୟକାରୀ ଯୋଗୁଁ ରଣ ପ୍ରଦାନ ପ୍ରଦାନକୁ ଭାବେ କମ୍ ରହିଥିବାବେଳେ ମନ ମଧ୍ୟରେ ଦୈନିକତା ଗଣିତ ପୁଣି ପରିଲକ୍ଷିତ ହେବ ଏବଂ ମାଲକୋପାଳନାନ୍ତୁ ମହିଳା ରଣୀଙ୍କୁ ସେବା ପ୍ରଦାନ କରି ରଖିବ, ଆର୍ଥିକ ଏବଂ ଲାଭଗତ ଦୃଷ୍ଟିରୁ ସହାୟତା ଯାତ କରାଇବା ପରିସ୍ଥିତି ଯୋଗିଆସିବ । ମହିଳା ରଣୀଙ୍କ ପାଇଁ ମାଲକୋପାଳନାନ୍ତୁ ରଣ ପ୍ରଦାନ ଏବଂ ଆନୁଷ୍ଠାନିକ ଆର୍ଥିକଗଣି ବ୍ୟବସ୍ଥା, ଯାହା କେବଳ ବନ୍ଧନମୁକ୍ତ ନୁହେଁ, ତାହାସହିତ ଏହା ଉପରେ ଭାରତୀୟ ଗିରଦ ବ୍ୟାଙ୍କ ପକ୍ଷରୁ ପୂର୍ବ ନିୟମକ ଦୃଷ୍ଟି ରହିଛି । ତାହାସହିତ ଏହା ଅବଶିଷ୍ଟ ରହୁଥିବା ମୂଳଧନ ଉପରେ କୁମାରସ ଗିରଦ ସୁଧ ଲାଗୁ କରିବା ଉପରେ ମଧ୍ୟ ଆଗବିଆଇ ନକର ରହିଛି । ଏହି କ୍ଷେତ୍ର ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ନଗଦ କାରବାର ବିହୀନ ହେବାକୁ ପ୍ରୟାସ କରୁଛି ଏବଂ ଏହା ହାସଲ କରିବା ନିମନ୍ତେ ଦୂରଗତିରେ ବିଭିନ୍ନ ପ୍ରୟାସକୁ

ଲାଗୁ କରୁଛି । ଅନ୍ୟପକ୍ଷରେ ଆଣିଆନୁଷ୍ଠାନିକ ଆର୍ଥିକଗଣି କ୍ଷେତ୍ରରେ ସାଲକାରଙ୍କ ଠାରୁ ନିଆଯାଇଥିବା ରଣ କ୍ଷେତ୍ରରେ ମହିଳା ରଣୀମାନେ କେବଳ ସୁଧ ଦେଇଗଲୁଥିବି ଏବଂ ସାଲକାରଙ୍କ ନିରୁପାୟ ରହୁଥିବି । ମାଲକୋପାଳନାନ୍ତୁ ରଣ ଦେଇଛି ସ୍ୱଳ୍ପ ଅବଧାନ ରଣ, ଯାହା ସାଲକାରଙ୍କ ଲବ୍ଧିକୁ ନେଇଥିବା ଆର୍ଥିକ ବ୍ୟବସ୍ଥା ସହିତ ୪୦ରୁ ୬୦ ପ୍ରତିଶତ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ମାନ୍ୟତା ସୁଧ ଲାଗୁ କରାଯାଇଛି । ଏମଏମ୍‌ଆଇ-ଏନରେ ମହିଳା ରଣୀଙ୍କ ନିମନ୍ତେ ଏକ ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ଦିନ ହେଉଛି, ଏହା ଆଗବିଆଇ ଦ୍ୱାରା ସ୍ୱାକ୍ଷରିତ ଏବଂ ଆମ ନିୟମକ ସଂଗଠନ ଯାହାର ଏକ ଗ୍ରାହକ ଅଭିଯୋଗ ସମାଧାନ କୌଶଳ (ସିଟିଆଇ-ଏମ) ରହିଛି ଯେଉଁଠାରେ ଏହାର ସର୍ବୋତ୍ତମ ସଂସ୍ଥାଗୁଡ଼ିକର ମହିଳା ରଣୀମାନେ ଏହାର ନିଶ୍ଚିତ ନମର ୧୮୦୦ ୧୦୨ ୧୦୮୦ରେ ସେମାନଙ୍କର ଆବେଦନ ଉପସ୍ଥାପନ କରିପାରିବେ ।

Punjab

Publication	Akali Patrika
Edition	Bhatinda
Date	September 30, 2020
Page No.	7

ਮਾਇਕ੍ਰੋਫਾਇਨੈਂਸ ਬਣਿਆ ਘੱਟ ਆਮਦਨ ਵਾਲੀ ਔਰਤ ਕਰਜ਼ਦਾਰਾਂ ਦਾ ਸਹਾਰਾ

ਮਾਨਸਾ, 30 ਸਤੰਬਰ:- ਦੋ ਦਸ਼ਕਾਂ ਤੋਂ ਵੀ ਜਿਆਦਾ ਸਮੇਂ ਵਿਚ ਮਾਇਕ੍ਰੋਫਾਇਨੈਂਸ ਉਧਯੋਗ ਘੱਟ ਆਮਦਨ ਵਾਲੀ ਅਤੇ ਵਾਂਝੇ ਸਮੂਹਾਂ ਦੀ ਔਰਤਾਂ ਦੀ ਆਰਥਕ ਆਜ਼ਾਦੀ ਦਿਲਾਉਣ ਦੀ ਮਦਦ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਇਸ ਵਿਚ ਔਰਤਾਂ ਠੀਕ ਵਿੱਤੀ ਫੈਸਲੇ ਲੈਣ ਦੇ ਲਈ ਮਜ਼ਬੂਤ ਹੁੰਦੀਆਂ ਹਨ। ਭਾਰਤੀ ਮਾਇਕ੍ਰੋਫਾਇਨੈਂਸ ਸੈਕਟਰ ਐਨਬੀਐਫਸੀ-ਐਮਐਫਆਈ, ਬੈਂਕ, ਸਮਾਲ ਫਾਇਨੈਂਸ ਬੈਂਕ ਜਾਂ ਕੇਵਲ ਐਨਬੀਐਫਸੀ ਸਹਿਤ ਵੱਖ ਵੱਖ ਸੰਸਥਾਵਾਂ ਦੁਆਰਾ 30 ਜੂਨ 2020 ਤਕ 5.80 ਕਰੋੜ ਤੋਂ ਜਿਆਦਾ ਗਾਹਕਾਂ ਨੂੰ ਸੇਵਾਵਾਂ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਖਾਸ ਕਰਕੇ ਕੋਵਿਡ 19 ਤੋਂ ਭਾਰਤੀ ਮਾਇਕ੍ਰੋਫਾਇਨੈਂਸ ਸੈਕਟਰ ਵਿਚ ਨਿਸ਼ਚਤ ਰੂਪ ਤੋਂ ਬਦਲਾਵ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ।

Publication	Arth Prakash
Edition	Bhatinda
Date	September 30, 2020
Page No.	11

माइक्रोफाइनेंस बना कम आमदन वाली महिला कर्जदारों का सहारा

भटिंडा। दो दशक से भी ज्यादा समय से माइक्रोफाइनेंस उद्योग कम आमदनी वाली और वंचित समूहों की महिलाओं की आर्थिक आजादी पाने में मदद कर रहा है। इससे महिलाएं सही वित्तीय निर्णय लेने के लिए सशक्त होती हैं। भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर एनबीएफसी, एमएफआई बैंक स्मॉइल फाइनेंस बैंक या केवल एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं द्वारा 30 जून 2020 तक 5.80 करोड़ से ज्यादा ग्राहकों को सेवाएं दे रहा है। खासकर कोविड 19 के इस अभूतपूर्व समय में भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर में निश्चित रूप से बदलाव हो रहा है।

नवंबर 2016 की नोटबंदी हो या फिर 2020 में पूरी दुनिया पर छाई वैश्विक महामारी माइक्रोफाइनेंस उद्योग वित्तीय समावेशन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। वर्तमान स्थिति में जहां ऋण का वितरण आर्थिक गतिविधियों के कम हो जाने की वजह से अपेक्षाकृत कम हो गया है। लेकिन इस बात की पूरी संभावना है कि एक बार फिर से मांग में वृद्धि होगी और माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र वंचित महिला कर्जदारों की सेवा करना जारी रखेगा। इससे उन्हें आर्थिक के साथ ही भावनात्मक रूप से भी जोरदार वापसी करने में मदद मिलेगी।

Publication	Dainik Bhaskar
Edition	Faridkot
Date	September 30, 2020
Page No.	7

माइक्रोफाइनेंस से बढ़ रही है महिला की आमदनी

फरीदकोट | दो दशक से भी ज्यादा समय से माइक्रोफाइनेंस उद्योग कम आमदनी वाली और वंचित समूहों की महिलाओं की आर्थिक आजादी पाने में मदद कर रहा है। इससे महिलाएं सही वित्तीय निर्णय लेने के लिए सशक्त होती हैं। भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर एनबीएफसी, एमएफआई बैंक, स्माल फाइनेंस बैंक या एनबीएफसी आदि 30 जून तक 5.80 करोड़ से ज्यादा ग्राहकों को सेवाएं दे रहा है। वर्तमान स्थिति में, जहां ऋण का वितरण आर्थिक गतिविधियों के कम हो जाने की वजह से अपेक्षाकृत कम हो गया है। लेकिन इस बात की पूरी संभावना है कि एक बार फिर से मांग में वृद्धि होगी।

Publication	Dainik Tribune
Edition	Faridkot
Date	October 1, 2020
Page No.	6

माइक्रोफाइनेंस बना कम आमदन वाली महिला कर्जदारों का सहारा

फरीदकोट। दो दशक से भी ज्यादा समय से माइक्रोफाइनेंस उद्योग कम आमदनी वाली और वंचित समूहों की महिलाओं की आर्थिक आजादी पाने में मदद कर रहा है। इससे महिलाएं सही वित्तीय निर्णय लेने के लिए सशक्त होती हैं। भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर एनबीएफसी.एमएफआई, बैंक, स्मॉइल फाइनेंस बैंक या केवल एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं द्वारा 30 जून 2020 तक 5.80 करोड़ से ज्यादा ग्राहकों को सेवाएं दे रहा है। खासकर कोविड 19 के इस अभूतपूर्व समय में भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर में निश्चित रूप से बदलाव हो रहा है। नवंबर 2016 की नोटबंदी हो या फिर 2020 में पूरी दुनिया पर छाई वैश्विक महामारी माइक्रोफाइनेंस उद्योग वित्तीय समावेशन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। वर्तमान स्थिति में जहां ऋण का वितरण आर्थिक गतिविधियों के कम हो जाने की वजह से अपेक्षाकृत कम हो गया है, लेकिन इस बात की पूरी संभावना है कि एक बार फिर से मांग में वृद्धि होगी और माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र वंचित महिला कर्जदारों की सेवा करना जारी रखेगा। इससे उन्हें आर्थिक के साथ ही भावनात्मक रूप से भी जोरदार वापसी करने में मदद मिलेगी। माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र से जो उधार मिलता है वह जरूरतमंद महिलाओं को पैसा उपलब्ध कराने का औपचारिक जरिया है। यह न केवल कोलेटरल ढंग से निशुल्क है, बल्कि पूरी तरह से आरबीआई के निरीक्षण में है। इसमें जो ब्याज लगता है वह भी बैलेंस कम होने के आधार पर लगता है। यह क्षेत्र अब नकद रहित बनने के लिए प्रयासरत है और इसके लिए यह तेजी से डिजिटल तकनीक अपना रहा है। अनौपचारिक ढंग से पैसा मुहैया कराना इसके ठीक विपरीत है जिसमें उधार लेने वाली महिलाओं को महाजन से मिलने वाले कर्ज पर ब्याज चुकाते रहना पड़ता है और जीवन भर तक कर्ज की चक्की में पिसते रहना होता है।

Publication	Fast Media
Edition	Moga
Date	September 30, 2020
Page No.	6

माइक्रोफाइनेंस बना कम आमदन वाली महिला कर्जदारों का सहारा

(फास्ट मीडिया) मोगा, विनोद कुमार। दो दशक से भी ज्यादा समय से माइक्रोफाइनेंस उद्योग कम आमदनी वाली और वंचित समूहों की महिलाओं की आर्थिक आजादी पाने में मदद कर रहा है। इससे महिलाएं सही वित्तीय निर्णय लेने के लिए सशक्त होती हैं। भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर एनबीएफसी, एमएफआई बैंक स्मॉल फाइनेंस बैंक या केवल एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं द्वारा 30 जून 2020 तक 5.80 करोड़ से ज्यादा ग्राहकों को सेवाएं दे रहा है। खासकर कोविड 19 के इस अभूतपूर्व समय में भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर में निश्चित रूप से बदलाव हो रहा है। नवंबर 2016 की नोटबंदी हो या फिर 2020 में पूरी दुनिया पर छाई वैश्विक महामारी माइक्रोफाइनेंस उद्योग वित्तीय समावेशन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। वर्तमान स्थिति में जहां ऋण का वितरण आर्थिक गतिविधियों के कम हो जाने की वजह से अपेक्षाकृत कम हो गया है।

लेकिन इस बात की पूरी संभावना है कि एक बार फिर से मांग में वृद्धि होगी और माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र वंचित महिला कर्जदारों की सेवा करना जारी रखेगा। इससे उन्हें आर्थिक के साथ ही भावनात्मक रूप से भी जोरदार वापसी करने में मदद मिलेगी। माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र से जो उधार मिलता है वह जरूरतमंद महिलाओं को पैसा उपलब्ध कराने का औपचारिक जरिया है। यह न केवल कोलेटरल ढंग से नि शुल्क है बल्कि पूरी तरह से आरबीआई के निरीक्षण में है। इसमें जो ब्याज लगता है वह भी कैलेंस कम होने के आधार पर लगता है। यह क्षेत्र अब नकद रहित बनने के लिए प्रयासरत है और इसके लिए यह तेजी से डिजिटल तकनीक अपना रहा है। अनौपचारिक ढंग से पैसा मुहैया कराना इसके ठीक विपरीत है जिसमें उधार लेने वाली महिलाओं को महाजन से मिलने वाले कर्ज पर ब्याज चुकाते रहना पड़ता है और जीवन भर तक कर्ज की चक्की में पिसते रहना होता है।

Publication	Jagbani
Edition	Moga
Date	September 30, 2020
Page No.	4

ਮਾਇਕ੍ਰੋਫਾਇਨਾਂਸ ਬਣਿਆ ਘੱਟ ਆਮਦਨ ਵਾਲੀ ਔਰਤ ਕਰਜ਼ਦਾਰਾਂ ਦਾ ਸਹਾਰਾ

ਸੰਗਰੂਰ , 30 ਸਤੰਬਰ (ਬੀ.ਐੱਨ.349/9)-ਦੋ ਦਸ਼ਕਾਂ ਤੋਂ ਵੀ ਜ਼ਿਆਦਾ ਸਮੇਂ 'ਚ ਮਾਇਕ੍ਰੋਫਾਇਨਾਂਸ ਉਦਯੋਗ ਘੱਟ ਆਮਦਨ ਵਾਲੀ ਅਤੇ ਵੱਡੇ ਸਮੂਹਾਂ ਦੀ ਔਰਤਾਂ ਦੀ ਆਰਥਕ ਆਜ਼ਾਦੀ ਦਿਵਾਉਣ ਲਈ ਮਦਦ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਇਸ 'ਚ ਔਰਤਾਂ ਠੀਕ ਵਿੱਤੀ ਫੈਸਲੇ ਲੈਣ ਦੇ ਲਈ ਮਜ਼ਬੂਤ ਹੁੰਦੀਆਂ ਹਨ । ਭਾਰਤੀ ਮਾਇਕ੍ਰੋਫਾਇਨਾਂਸ ਸੈਕਟਰ ਐੱਨ.ਬੀ.ਐੱਫ.ਸੀ.-ਐੱਮ.ਐੱਫ.ਆਈ., ਬੈਂਕ, ਸਮਾਲ ਫਾਇਨਾਂਸ ਬੈਂਕ ਜਾਂ ਸਿਰਫ ਐੱਨ. ਬੀ. ਐੱਫ. ਸੀ. ਸਹਿਤ ਵੱਖ ਵੱਖ ਸੰਸਥਾਵਾਂ ਵੱਲੋਂ 30 ਜੂਨ 2020 ਤੱਕ 5.80 ਕਰੋੜ ਤੋਂ ਜ਼ਿਆਦਾ ਗਾਹਕਾਂ ਨੂੰ ਸੇਵਾਵਾਂ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹੈ ਖਾਸ ਕਰ ਕੇ ਕੋਵਿਡ-19 ਤੋਂ ਭਾਰਤੀ ਮਾਇਕ੍ਰੋਫਾਇਨਾਂਸ ਸੈਕਟਰ 'ਚ ਨਿਸ਼ਚਤ ਰੂਪ ਤੋਂ ਬਦਲਾਅ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਕੋਰੋਨਾ ਦੇ ਕਾਰਣ ਲੋਨ ਦਾ ਵਿਤਰਣ, ਆਰਥਿਕ ਗਤੀਵਿਧੀਆਂ ਦੇ ਘਟ ਹੋ ਜਾਣ ਨਾਲ ਭਾਵੇਂ ਘਟ ਹੋ ਗਿਆ ਪਰ ਇਕ ਵਾਰ ਫਿਰ ਤੋਂ ਮੰਗਾਂ 'ਚ ਵਾਧਾ ਹੋਵੇਗਾ ਅਤੇ ਮਾਇਕ੍ਰੋਫਾਇਨਾਂਸ ਖੇਤਰ ਵਾਂਝੀ ਮਹਿਲਾ ਕਰਜ਼ਦਾਰਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਸੇਵਾਵਾਂ ਜਾਰੀ ਰੱਖੇਗਾ।

ਐੱਮ.ਐੱਫ.ਆਈ.ਐੱਨ., ਆਰ.ਬੀ.ਆਈ. ਤੋਂ ਮਾਣਤਾ ਪ੍ਰਾਪਤ ਇਕ ਸੰਗਠਨ ਹੈ ਜੋ ਕਿ ਗਾਹਕਾਂ ਦੀ ਸ਼ਿਕਾਇਤਾਂ ਨੂੰ ਦੂਰ ਕਰਨ ਦਾ ਤੰਤਰ ਹੈ। ਇਸ 'ਚ ਮੈਂਬਰ ਸੰਗਠਨਾਂ ਦੀ ਮਹਿਲਾ ਕਰਜ਼ਦਾਰ ਟੋਲ ਵੀ ਨੰਬਰ 1800 102 1080 'ਤੇ ਕਾਲ ਕਰ ਸ਼ਿਕਾਇਤ ਦਰਜ ਕਰ ਆਪਣੀ ਮੁਸ਼ਕਿਲ ਦਾ ਨਿਵਾਰਣ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰ ਸਕਦੀ ਹੈ।

Publication	Jagmarg
Edition	Bhatinda
Date	September 30, 2020
Page No.	4

माइक्रोफाइनेंस बना कम आमदन वाली महिला कर्जदारों का सहारा

जगमार्ग न्यूज़

भठिंडा। दो दशक से भी ज्यादा समय से माइक्रोफाइनेंस उद्योग कम आमदनी वाली और वंचित समूहों की महिलाओं की आर्थिक आजादी पाने में मदद कर रहा है। इससे महिलाएं सही वित्तीय निर्णय लेने के लिए सशक्त होती हैं। भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर एनबीएफसी एमएफआई बैंक स्मॉल फाइनेंस बैंक या केवल एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं द्वारा 30 जून 2020 तक 5.80 करोड़ से ज्यादा ग्राहकों को सेवाएं दे रहा है। खासकर कोविड 19 के इस अभूतपूर्व समय में भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर में निश्चित रूप से बदलाव हो रहा है। नवंबर 2016 की नोटबंदी हो या फिर 2020 में पूरी दुनिया पर छाई वैश्विक महामारी माइक्रोफाइनेंस उद्योग वित्तीय समावेशन में एक

महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। वर्तमान स्थिति में जहां ऋण का वितरण आर्थिक गतिविधियों के कम हो जाने की वजह से अपेक्षाकृत कम हो गया है। लेकिन इस बात की पूरी संभावना है कि एक बार फिर से मांग में वृद्धि होगी और माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र वंचित महिला कर्जदारों की सेवा करना जारी रखेगा। इससे उन्हें आर्थिक के साथ ही भावनात्मक रूप से भी जोरदार वापसी करने में मदद मिलेगी। माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र से जो उधार मिलता है वह जरूरतमंद महिलाओं को पैसा उपलब्ध कराने का औपचारिक जरिया है। यह न केवल कोलेटरल ढंग से नि शुल्क है बल्कि पूरी तरह से आरबीआई के निरीक्षण में है। इसमें जो व्यय लगता है, वह भी वॉलेंस कम होने के आधार पर लगता है।

Publication	Punjab Times
Edition	Sangroor
Date	September 30, 2020
Page No.	5

ਮਾਇਕ੍ਰੋਫਾਇਨੈਂਸ ਬਣਿਆ ਘੱਟ ਆਮਦਨ ਵਾਲੀ ਔਰਤ ਕਰਜ਼ਦਾਰਾਂ ਦਾ ਸਹਾਰਾ

ਫ਼ਰੀਦਕੋਟ, 29 ਸਤੰਬਰ (ਆਰ ਮੀਡੀਆ)-
ਦੋ ਦਸ਼ਕਾਂ ਤੋਂ ਵੀ ਜ਼ਿਆਦਾ ਸਮੇਂ ਵਿਚ
ਮਾਇਕ੍ਰੋਫਾਇਨੈਂਸ ਉਧਯੋਗ ਘੱਟ ਆਮਦਨ ਵਾਲੀ
ਅਤੇ ਵਾਂਝੇ ਸਮੂਹਾਂ ਦੀ ਔਰਤਾਂ ਦੀ ਆਰਥਕ
ਆਜ਼ਾਦੀ ਦਿਲਾਉਣ ਦੀ ਮਦਦ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹੈ।
ਇਸ ਵਿਚ ਔਰਤਾਂ ਠੀਕ ਵਿੱਤੀ ਫੈਸਲੇ ਲੈਣ ਦੇ
ਲਈ ਮਜ਼ਬੂਤ ਹੁੰਦੀਆਂ ਹਨ। ਭਾਰਤੀ
ਮਾਇਕ੍ਰੋਫਾਇਨੈਂਸ ਸੈਕਟਰ ਐਨਬੀਐਫਸੀ-
ਐਮਐਫਆਈ, ਬੈਂਕ, ਸਮਾਲ ਫਾਇਨੈਂਸ ਬੈਂਕ ਜਾਂ
ਕੇਵਲ ਐਨਬੀਐਫਸੀ ਸਹਿਤ ਵੱਖ ਵੱਖ ਸੰਸਥਾਵਾਂ
ਦੁਆਰਾ 30 ਜੂਨ 2020 ਤਕ 5.80 ਕਰੋੜ ਤੋਂ
ਜ਼ਿਆਦਾ ਗਾਹਕਾਂ ਨੂੰ ਸੇਵਾਵਾਂ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰ ਰਿਹਾ
ਹੈ। ਖਾਸ ਕਰਕੇ ਕੋਵਿਡ 19 ਤੋਂ ਭਾਰਤੀ
ਮਾਇਕ੍ਰੋਫਾਇਨੈਂਸ ਸੈਕਟਰ ਵਿਚ ਨਿਸ਼ਚਤ ਰੂਪ ਤੋਂ
ਬਦਲਾਵ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਨਵੰਬਰ 2016 ਦੀ
ਨੋਟਬੰਦੀ ਹੋਵੇ ਜਾਂ 2020 ਵਿਚ ਪੂਰੀ ਦੁਨਿਆਂ ਤੇ
ਛਾਈ ਵਿਸ਼ਵ ਭਰ ਦੀ ਮੰਦੀ, ਮਾਇਕ੍ਰੋਫਾਇਨੈਂਸ

ਉਧਯੋਗ ਵਿੱਤੀ ਸਮਾਧਾਨ ਵਿਚ ਇਕ
ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਭੂਮਿਕਾ ਨਿਭਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਕੋਰੋਨਾ ਦੇ
ਕਾਰਣ ਲੋਨਾਂ ਦਾ ਵਿਤਰਣ, ਆਰਥਕ
ਗਤੀਵਿਧੀਆਂ ਦੇ ਘੱਟ ਹੋਣ ਜਾਣ ਨਾਲ ਭਾਵੇਂ
ਘਟ ਹੋ ਗਿਆ ਪ੍ਰੰਤੂ ਇਕ ਵਾਰ ਫੇਰ ਤੋਂ ਮੰਗਾਂ ਵਿਚ
ਵਾਧਾ ਹੋਵੇਗਾ ਅਤੇ ਮਾਇਕ੍ਰੋਫਾਇਨੈਂਸ ਖੇਤਰ ਵਾਂਝੀ
ਮਹਿਲਾ ਕਰਜ਼ਦਾਰਾਂ ਨੂੰ ਅਪਣੀ ਸੇਵਾਵਾਂ ਜਾਰੀ
ਰੱਖੇਗਾ। ਇਸ ਨਾਲ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਆਰਥਕ ਰੂਪ ਦੇ
ਨਾਲ ਨਾਲ ਭਾਵਾਤਮਕ ਰੂਪ ਤੋਂ ਜ਼ੋਰਦਾਰ ਵਾਪਸੀ
ਕਰਣ ਵਿਚ ਵੀ ਮਦਦ ਮਿਲੇਗੀ।
ਐਮਐਫਆਈਐਨ, ਆਰਬੀਆਈ ਤੋਂ ਮਾਣਤਾ
ਪ੍ਰਾਪਤ ਇਕ ਸੰਗਠਨ ਹੈ ਜੋ ਕਿ ਗਾਹਕਾਂ ਦੀ
ਸ਼ਿਕਾਇਤਾਂ ਨੂੰ ਦੂਰ ਕਰਣ ਦਾ ਤੰਤਰ ਹੈ। ਇਸ
ਵਿਚ ਮੈਂਬਰ ਸੰਗਠਨਾਂ ਦੀ ਮਹਿਲਾ ਕਰਜ਼ਦਾਰ
ਟੋਲ ਫ਼ੀਨੰਬਰ 1800 102 1080 ਤੇ ਕਾਲ ਕਰ
ਸ਼ਿਕਾਇਤ ਦਰਜ ਕਰ ਅਪਣੀ ਮੁਸ਼ਕਲ ਦਾ
ਨਿਵਾਰਣ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰ ਸਕਦੀ ਹੈ।

Maharashtra

Publication	Vartashakti
Edition	Kolhapur
Date	October 15, 2020
Page No.	2

अल्प उत्पन्न वर्गातील महिलाना आर्थिक साह्यासाठी मायक्रोफायनान्स मोठा आधार

पारंपरिक वित्तसेवा ज्यांच्यापर्यंत पोचत नाहीत अशा अल्प उत्पन्न गटातील महिलांना आर्थिक स्वातंत्र्य मिळवून देऊन त्यांना वैशाच्या वापराबद्दलचे योग्य निर्णय घेण्यास सक्षम करण्याच्या कामी छोटी कर्जे देणा-या लघुवित्त (मायक्रोफायनान्स) क्षेत्राची गेली दोन दशके मदत होत आहे.

भारतात विंगर बँकिंग वित्तसंस्थांचे लघुवित्त विभाग, बँकांचे लघुवित्त विभाग, लघु वित्त बँका आणि विंगर बँकिंग वित्तसंस्था या सर्वांचे मिळून सध्या ५ कोटी ८० लाख लघुवित्त ग्राहक असलेल्या या क्षेत्रात - विशेषतः या कोरोना-१९ च्या परिस्थितीत मोठे बदल घडत आहेत. २०१६ मधली नोटबंदी असो अथवा आताची २०२० ची जगाला विळखा घालणारी महामारी असो विरितीय समावेशाच्या प्रक्रियेत मायक्रोफायनान्स क्षेत्राची महत्त्वाची भूमिका आहे.

सध्याच्या स्थितीत अर्थव्यवस्था मंदावली असल्यामुळे

कर्ज वितरणाचा ओघही मंदावलेला असला तरीही रोखून धरलेली कर्जाची मागणी कधीही प्रवाही होईल आणि मायक्रोफायनान्स संस्था पुन्हा एकदा महिला कर्जदारांना आर्थिक दृष्ट्या पुन्हा जोमाने उभ्या राहण्यास मदत करून त्यांचे मनोबल वाढवतील अशी बहुतेकांची धारणा आहे.

लघुवित्त (मायक्रोफायनान्स) व्यवसायात महिला कर्जदारांना तारण न घेता कर्जे दिली जातात आणि त्यांवर किती दराने व्याज आकारले जाते तसेच हे व्याज फेडलेल्या कर्जामुळे कमी झालेल्या मुदलावरच आकारले जाते की नाही यावर रिझर्व्ह बँकेची देखरेख असते. आता या क्षेत्रातही डिजिटल तंत्रज्ञान वापरून रोखीचा वापर कमी करण्याची प्रक्रिया सुरु होत आहे. याउलट खाजगी सावकारी कर्जाच्या व्यवहारात महिला फक्त व्याज भरत राहतात आणि त्यांची कर्जे जन्मभर फिटतच नाहीत.

मायक्रोफायनान्स कर्जे छोटी मुदतीची असतात. याउलट

सावकारी कर्जे दीर्घ मुदतीची, तारणावर दिलेली आणि ५० टक्के ते ६० टक्के एवढे भरमसाठ व्याज आकारणारी असतात.

महिला कर्जदारांच्या दृष्टीने महत्त्वाचा भाग म्हणजे मायक्रो फायनान्स इन्स्टिट्यूशन्स नेटवर्क ही रिझर्व्ह बँकेने मान्यता दिलेली संस्था. या संस्थेचा ग्राहक तक्रार निवारण मंच संस्थेच्या सदस्य संस्थांविषयीच्या तक्रारींमध्ये लक्ष घालून त्यांचे निवारण करतो. ज्या महिला कर्जदारांची एखाद्या मायक्रोफायनान्स संस्थेविषयी तक्रार असेल त्यांना ती १८००

१०२ १०८० या टोल फ्री क्रमांकावर फोन करून नोंदवता येते. या मंचाचे काम १२ विविध भाषांमध्ये चालते आणि देशातील कोणत्याही राज्यातील महिला ग्राहक आठवड्याच्या कामाच्या दिवशी सकाळी ९.३० ते सायंकाळी ५.३० या वेळात फोन करू शकतात. मात्र खाजगी सावकारांकडून घेतलेल्या कर्जाबद्दल काही तक्रार असेल तर या मंचाकडे दाद मागता येत नाही. अशा महिलांना पूर्णपणे खाजगी सावकाराच्या मर्जीनुसार कर्जफेड करत रहावे लागते.

Publication	Dainik Bandhu Prem
Edition	Solapur
Date	October 15, 2020
Page No.	3

अल्प उत्पन्न वर्गातील महिलांना आर्थिक साह्यासाठी मायक्रोफायनान्स आधार

सोलापूर (प्रतिनिधी):

पारंपरिक वित्तसेवा ज्यांच्यापर्यंत पोचत नाहीत अशा अल्प उत्पन्न गटातील महिलांना आर्थिक स्वातंत्र्य मिळवून देऊन त्यांना पैशांच्या वापराबद्दलचे योग्य निर्णय घेण्यास सक्षम करण्याच्या कामी छोटी कर्जे देणा-या लघुवित्त क्षेत्राची गेली दोन दशके मदत होत आहे.

भारतात बिगर बँकिंग वित्तसंस्थांचे लघुवित्त विभाग, बँकांचे लघुवित्त विभाग, लघु वित्त बँका आणि बिगर बँकिंग वित्तसंस्था या सर्वांचे मिळून सध्या ५ कोटी ८० लाख लघुवित्त ग्राहक असलेल्या या क्षेत्रात - विशेषतः

या कोरोना-१९ च्या परिस्थितीत मोठे बदल घडत आहेत.

२०१६ मधली नोटबंदी असो अथवा आताची २०२० ची जगाला विळखा घालणारी महामारी असो वित्तीय समावेशाच्या प्रक्रियेत मायक्रोफायनान्स क्षेत्राची महत्त्वाची भूमिका आहे.

मायक्रोफायनान्स कर्जे छोट्या मुदतीची असतात.याउलट सावकारी कर्जे दीर्घ मुदतीची,तारणावर दिलेली आणि ५० टक्के ते ६० टक्के एवढे भरमसाठ व्याज आकारणारी असतात.

ज्या महिला कर्जदारांची एखाद्या मायक्रोफायनान्स संस्थेविषयी तक्रार असेल त्यांना ती १८०० १०२ १०८०

या टोल फ्री क्रमांकावर फोन करून नोंदवता येते.

या मंचाचे काम १२ विविध भाषांमध्ये चालते आणि देशातील कोणत्याही राज्यातील महिला ग्राहक आठवड्याच्या कामाच्या दिवशी सकाळी ९.३० ते सायंकाळी ५.३० या वेळात फोन करू शकतात.मात्र खाजगी सावकारांकडून घेतलेल्या कर्जाबद्दल काही तक्रार असेल तर या मंचाकडे दाद मागता येत नाही.

अशा महिलांना पूर्णपणे खाजगी सावकाराच्या मर्जीनुसार कर्जफेड करत रहावे लागते.

Publication	Dainik Janmat
Edition	Solapur
Date	October 15, 2020
Page No.	5

अल्प उत्पन्न वर्गातील महिलांना आर्थिक साह्यासाठी मायक्रोफायनान्स आधार

सोलापूर (प्रतिनिधी) पारंपरिक वित्तसेवा ज्यांच्यापर्यंत पोचत नाहीत अशा अल्प उत्पन्न गटातील महिलांना आर्थिक स्वातंत्र्य मिळवून देऊन त्यांना पैशांच्या वापराबद्दलचे योग्य निर्णय घेण्यास सक्षम करण्याच्या कामी छोटी कर्जे देणा-या लघुवित्त क्षेत्राची गेली दोन दशके मदत होत आहे. भारतात बिगर बँकिंग वित्तसंस्थांचे लघुवित्त विभाग, बँकांचे लघुवित्त विभाग, लघु वित्त बँका आणि बिगर बँकिंग वित्तसंस्था या सर्वांचे मिळून सध्या ५ कोटी ८० लाख लघुवित्त ग्राहक असलेल्या या क्षेत्रात - विशेषतः या कोरोना-१९ च्या परिस्थितीत मोठे बदल घडत आहेत. २०१६ मधली नोटबंदी असो अथवा आताची २०२० ची जगाला विळखा घालणारी महामारी असो वित्तीय समावेशाच्या प्रक्रियेत मायक्रोफायनान्स क्षेत्राची महत्त्वाची भूमिका आहे. मायक्रोफायनान्स कर्जे छोट्या मुदतीची असतात. याउलट सावकारी कर्जे दीर्घ मुदतीची, तारणावर दिलेली आणि ५० टक्के ते ६० टक्के एवढे भरमसाठ व्याज आकारणारी असतात. ज्या महिला कर्जदारांची एखाद्या मायक्रोफायनान्स संस्थेविषयी तक्रार असेल त्यांना ती १८०० १०२ १०८० या टोल फ्री क्रमांकावर फोन करून नोंदवता येते. या मंचाचे काम १२ विविध भाषांमध्ये चालते आणि देशातील कोणत्याही राज्यातील महिला ग्राहक आठवड्याच्या कामाच्या दिवशी सकाळी ९.३० ते सायंकाळी ५.३० या वेळात फोन करू शकतात. मात्र खाजगी सावकारांकडून घेतलेल्या कर्जाबद्दल काही तक्रार असेल तर या मंचाकडे दाद मागता येत नाही. अशा महिलांना पूर्णपणे खाजगी सावकाराच्या मर्जीनुसार कर्जफेड करत रहावे लागते.

Publication	Dainik Jansathya
Edition	Solapur
Date	October 15, 2020
Page No.	7

अल्प वर्गातील महिलाना आर्थिक साह्यासाठी मायक्रोफायनान्स आधार

सोलापूर (प्रतिनिधी) : पारंपरिक वित्तसेवा ज्यांच्यापर्यंत पोचत नाहीत अशा अल्प उत्पन्न गटातील महिलांना आर्थिक स्वातंत्र्य मिळवून देऊन त्यांना पैशांच्या वापराबद्दलचे योग्य निर्णय घेण्यास सक्षम करण्याच्या कामी छोटी कर्जे देणा-या लघुवित्त क्षेत्राची गेली दोन दशके मदत होत आहे.

भारतात बिगर बँकिंग वित्तसंस्थांचे लघुवित्त विभाग, बँकांचे लघुवित्त विभाग, लघु वित्त बँका आणि बिगर बँकिंग वित्तसंस्था या सर्वांचे मिळून सध्या ५ कोटी ८० लाख लघुवित्त ग्राहक असलेल्या या क्षेत्रात - विशेषतः या कोरोना-१९ च्या परिस्थितीत मोठे बदल घडत आहेत. २०१६ मधली नोटबंदी असो अथवा आताची २०२० ची जगाला विळखा घालणारी महामारी असो वित्तीय समावेशाच्या प्रक्रियेत मायक्रोफायनान्स क्षेत्राची महत्त्वाची भूमिका आहे. मायक्रोफायनान्स

कर्जे छोट्या मुदतीची असतात. याउलट सावकारी कर्जे दीर्घ मुदतीची, तारणावर दिलेली आणि ५० टक्के ते ६० टक्के एवढे भरमसाठ व्याज आकारणारी असतात. ज्या महिला कर्जदारांची एखाद्या मायक्रोफायनान्स संस्थेविषयी तक्रार असेल त्यांना ती १८०० १०२ १०८० या टोल फ्री क्रमांकावर फोन करून नोंदवता येते. या मंचाचे काम १२ विविध भाषांमध्ये चालते आणि देशातील कोणत्याही राज्यातील महिला ग्राहक आठवड्याच्या कामाच्या दिवशी सकाळी ९.३० ते सायंकाळी ५.३० या वेळात फोन करू शकतात. मात्र खाजगी सावकारांकडून घेतलेल्या कर्जाबद्दल काही तक्रार असेल तर या मंचाकडे दाद मागता येत नाही. अशा महिलांना पूर्णपणे खाजगी सावकाराच्या मर्जीनुसार कर्जफेड करत रहावे लागते.

Publication	Dainik Swabhimani Sahar
Edition	Solapur
Date	October 15, 2020
Page No.	2

अल्प उत्पन्न वर्गातील महिलाना आर्थिक साह्यासाठी मायक्रोफायनान्स आधार

सोलापूर (प्रतिनिधी) पारंपरिक वित्तसेवा ज्यांच्यापर्यंत पोचत नाहीत अशा अल्प उत्पन्न गटातील महिलांना आर्थिक स्वातंत्र्य मिळवून देऊन त्यांना पैशांच्या वापराबद्दलचे योग्य निर्णय घेण्यास सक्षम करण्याच्या कामी छोटी कर्जे देणा-या लघुवित्त क्षेत्राची गेली दोन दशके मदत होत आहे.भारतात बिगर बँकिंग वित्तसंस्थांचे लघुवित्त विभाग, बँकांचे लघुवित्त विभाग, लघु वित्त बँका आणि बिगर बँकिंग वित्तसंस्था या सर्वांचे मिळून सध्या ५ कोटी ८० लाख लघुवित्त ग्राहक असलेल्या या क्षेत्रात - विशेषतः या कोरोना-१९ च्या परिस्थितीत मोठे बदल घडत आहेत.२०१६ मधली नोटबंदी असो अथवा आताची २०२० ची जगाला विळखा घालणारी महामारी असो वित्तीय समावेशाच्या प्रक्रियेत मायक्रोफायनान्स क्षेत्राची

महत्वाची भूमिका आहे.मायक्रोफायनान्स कर्जे छोट्या मुदतीची असतात.याउलट सावकारी कर्जे दीर्घ मुदतीची,तारणावर दिलेली आणि ५० टक्के ते ६० टक्के एवढे भरमसाठ व्याज आकारणारी असतात. ज्या महिला कर्जदारांची एखाद्या मायक्रोफायनान्स संस्थेविषयी तक्रार असेल त्यांना ती १८०० १०२ १०८० या टोल फ्री क्रमांकावर फोन करून नोंदवता येते. या मंचाचे काम १२ विविध भाषांमध्ये चालते आणि देशातील कोणत्याही राज्यातील महिला ग्राहक आठवड्याच्या कामाच्या दिवशी सकाळी ९.३० ते सायंकाळी ५.३० या वेळात फोन करू शकतात.मात्र खाजगी सावकारांकडून घेतलेल्या कर्जाबद्दल काही तक्रार असेल तर या मंचाकडे दाद मागता येत नाही.अशा महिलांना पूर्णपणे खाजगी सावकाराच्या मर्जीनुसार कर्जफेड करत रहावे लागते.

Publication	Batmidar
Edition	Dhule
Date	October 15, 2020
Page No.	1

अल्प उत्पन्न वर्गातील महिलाना आर्थिक साह्यासाठी मायक्रोफायनान्स मोठा आधार

धुळे / प्रतिनिधी	क्षेत्राची गेली दोन दशके मदत होत आहे.	१९ च्या परिस्थितीत मोठे बदल घडत आहेत. २०१६ मधली नोटबंदी असो अथवा आताची २०२० ची जगात विळखा घालणारी महामारी असो वित्तीय समावेशाच्या प्रक्रियेत मायक्रोफायनान्स क्षेत्राची महत्त्वाची भूमिका आहे.	अर्थव्यवस्था मंदावली असल्यामुळे कर्ज वितरणाचा ओघही मंदावलेला असला तरीही रोखून धरलेली कर्जाची मागणी कधीही प्रवाही होईल आणि मायक्रोफायनान्स संस्था पुन्हा एकदा महिला कर्जदारांना आर्थिक दृष्ट्या पुन्हा जोमाने उभ्या राहण्यास मदत करून त्यांचे मनोबल (पान ४ वर)
पारंपरिक वित्तसेवा ज्यांच्यापर्यंत पोचत नाहीत अशा अल्प उत्पन्न गटातील महिलांना आर्थिक स्वातंत्र्य मिळवून देऊन त्यांना पैशांच्या वापराबद्दलचे योग्य निर्णय घेण्यास सक्षम करण्याच्या कामी छोटी कर्जे देणा-या लघुवित्त (मायक्रोफायनान्स)	भारतात बिगर बँकिंग वित्तसंस्थांचे लघुवित्त विभाग, बँकांचे लघुवित्त विभाग, लघु वित्त बँका आणि बिगर बँकिंग वित्तसंस्था या सर्वांचे मिळून सध्या ५ कोटी ८० लाख लघुवित्त ग्राहक असलेल्या या क्षेत्रात - विशेषतः या कोरोना-	सध्याच्या	स्थितीत

अल्प उत्पन्न वर्गातील महिलाना आर्थिक साह्यासाठी मायक्रोफायनान्स...

वाढवतील अशी बहुतेकांची धारणा आहे.

लघुवित्त (मायक्रोफायनान्स) व्यवसायात महिला कर्जदारांना तारण न घेता कर्जे दिली जाताना आणि त्यांचे किती द्यावे व्याज आकारले जाते तसेच हे व्याज फेडलेल्या कर्जामुळे कमी झालेल्या मुदलावरच आकारले जाते की नाही यावर रिझर्व्ह बँकेची देखरेख असते. आता या क्षेत्रातही डिजिटल तंत्रज्ञान वापरून रोखीचा वापर कमी करण्याची प्रक्रिया सुरू होत आहे. याउलट खाजगी सावकारी कर्जाच्या व्यवहारात महिला फक्त व्याज भरत राहतात आणि त्यांची कर्जे जन्मभर फिटतच राहिली.

मायक्रोफायनान्स कर्जे छोट्या मुदतीची असतात. याउलट सावकारी कर्जे दीर्घ मुदतीची, तारणावर दिलेली आणि ५० टक्के ते ६० टक्के एवढे भरमसाठ व्याज आकारणारी असतात.

महिला कर्जदारांच्या दृष्टीने महत्त्वाचा भाग म्हणजे मायक्रो फायनान्स इन्स्टिट्यूशन्स नेटवर्क ही रिझर्व्ह बँकेने मान्यता दिलेली संस्था. या संस्थेचा ग्राहक तक्रार निवारण मंच संस्थेच्या सदस्य संस्थांविषयीच्या तक्रारींमध्ये लक्ष घालून त्यांचे निवारण करतो. ज्या महिला कर्जदारांची एखाद्या मायक्रोफायनान्स संस्थेविषयी तक्रार असेल त्यांना सी १८०० १०३ १०८० या टोल फ्री क्रमांकावर फोन करून नोंदवता येते. या मंचाचे काम १२ विविध भाषांमध्ये चालते आणि देशातील कोणत्याही राज्यातील महिला ग्राहक आठवड्याच्या कामाच्या दिवशी सकाळी ९.३० ते सायंकाळी ५.३० वा वेळाला फोन करू शकतात. मात्र खाजगी सावकारांकडून घेतलेल्या कर्जाबद्दल काही तक्रार असेल तर या मंचाकडे दाद मागता येत नाही. अशा महिलांना पूर्णपणे खाजगी सावकाराच्या मजीनुसार कर्जफेड करत रहावे लागते.

Publication	Lokshahi
Edition	Dhule
Date	October 15, 2020
Page No.	5

अल्प उत्पन्न वर्गातील महिलांना आर्थिक साहाय्यासाठी मायक्रोफायनान्स मोठा आधार

धुळे प्रतिविधी

पारंपरिक किततेबा न्याय्यापर्यंत पोचत नाहीत अशा अल्प उत्पन्न गटातील महिलांना आर्थिक स्वातंत्र्य मिळवून देऊन त्यांना पैसांच्या वापराबद्दलचे शोभ्य निर्बंध घेण्यास सक्षम करण्याच्या कामी छोटी कर्जे देणाऱ्या लघुवित्त (मायक्रोफायनान्स) क्षेत्राची गेली दोन दशके मदत होत आहे.

भारतात बिगर बँकिंग वित्तसंस्थांचे लघुवित्त विभाग, बँकांचे लघुवित्त विभाग, लघु वित्त बँका आणि बिगर बँकिंग वित्तसंस्था या सर्वांचे मिळून सध्या ५ कोटी ८० लाख लघुवित्त ग्राहक असलेल्या या क्षेत्रात - विशेषतः या कोरोना-१९ च्या परिस्थितीत मोठे बदल घडत आहेत. २०१९ मधली नोटबंदी असो अचबा आताची २०२० ची जगला विळखा घालणारी महापारी असो वित्तीय समावेशाच्या प्रक्रियेत मायक्रोफायनान्स क्षेत्राची महत्त्वाची भूमिका आहे.

सध्याच्या स्थितीत अर्थव्यवस्था मंदावली असल्यामुळे कर्जे वितरणाचा ओघही मंदावलेला असला तरीही रोखून धरलेली कर्जांची मागणी कधीही प्रवाही होईल आणि मायक्रोफायनान्स संस्था पुन्हा एकदा महिला कर्जदारांना आर्थिक दृष्ट्या पुन्हा जोमाने उभ्या राहण्यास मदत करून त्यांचे मनोबल वाढवतील अशी बहुतेकांची धारणा आहे.

लघुवित्त (मायक्रोफायनान्स) व्यवसायात महिला कर्जदारांना तारत न घेता कर्जे दिली जातात आणि त्यांवर किती दराने व्याज आकारले जाते तसेच हे व्याज फेडलेल्या कर्जामुळे कमी झालेल्या सुरक्षाकराच आकारले जाते की नाही यावर दिग्दर्श बँकेची देखरेख असते. आता या क्षेत्रातही डिजिटल तंत्रज्ञान वापरून रोखीचा वापर कमी करण्याची प्रक्रिया सुरू होत आहे. वाडलट खाजगी सावकारी कर्जांच्या व्यवहारगत महिला फक्त व्याज भरत राहतात आणि त्यांची कर्जे जन्मभर फिटतच नाहीत.

मायक्रोफायनान्स कर्जे छोटी मुदतीची असतात. वाडलट सावकारी कर्जे दीर्घ मुदतीची, तातूबावर दिलेली आणि ५० टक्के ते ६० टक्के एवढे भायसत व्याज आकारणारी असतात.

महिला कर्जदारांच्या दृष्टीने महत्त्वाचा भाग म्हणजे मायक्रो फायनान्स इन्स्टिट्यूशन नेटवर्क ही रिग्रह बँकिने मान्यता दिलेली संस्था. या संस्थेचा ग्राहक तक्रार निवारण संघ संस्थेच्या सदस्य संस्थांविषयीच्या तक्रारीमध्ये लक्ष घालून त्यांचे निवारण करतो. ज्या महिला कर्जदारांची एखाद्या मायक्रोफायनान्स संस्थेविषयी तक्रार असेल त्यांना ती १८०० १०२ १०८० या टोल फ्री क्रमांकावर फोन करून नोंदवता येते. या मंचाचे काम १२ विविध भाषांमध्ये चालते आणि देशातील कोणत्याही राज्यातील महिला ग्राहक आठवड्याच्या कामाच्या दिवशी सकाळी ९.३० ते सायंकाळी ५.३० या वेळात फोन करू शकतात. यात्र खाजगी सावकारांकडून घेतलेल्या कर्जाबद्दल काही तक्रार असेल तर या मंचाकडे दल मागता येत नाही. अशा महिलांना पूर्णरूपे खाजगी सावकारांच्या मजिनास कर्जेचड करत रहावे लागते.

Publication	Saimat
Edition	Dhule
Date	October 15, 2020
Page No.	7

अल्प उत्पन्न वर्गातील महिलांना आर्थिक साह्यासाठी मायक्रोफायनान्सचा आधार

परिचय : प्रतिनिधी	भारताने विगत बरिष्ठ विमानसंस्थेचे	जगात विकसित घालण्या	पुन्हा एकदा महिला	व्याज फेडनेचा कर्जापुढे	माझकोडपायसून	कर्ज	विमान मेष सर्वेच्या	राज्यातील महिला प्राक्
पारंपरिक वित्तस्रोता	वित्ताने, कर्जांचे वित्ताने	समाप्तीसाठी असे वित्त	कर्जावरून अर्थीक	कर्जातून घालण्यात	सोडण्यात घेतली असात.	सोडण्यात घेतली असात.	सर्व्हा संस्थांचे वित्त	अवधान घालण्या
ज्यांच्यावरून पोचत नाहीत	विमान, लघु वित्त	महादंडाच्यासाठी	राष्ट्रियता अर्थीक	आमच्यात जेणे करी	मुदतीची, प्राक्कृत दिलेली	मुदतीची, प्राक्कृत दिलेली	लक्षणे घालण्या करतो.	दिल्ली सभाका १.३०
आता आमच्या मुदतीतील	अर्थीक विमान	महादंडाची मुदती	लक्षणे घालण्या करतो	देखून घेतले. आता	देखून घेतले. आता	देखून घेतले. आता	वा वेळेत पोच कर	५.३० वा वेळेत पोच कर
मिळवून आर्थीक आव्हाने	विमानसंस्था	समाप्तीसाठी	अर्थीक	आमच्यात जेणे करी	देखून घेतले. आता	देखून घेतले. आता	करून घालण्या	घालण्या करतो.
विमान टाकत लक्षात	विमानसंस्था	समाप्तीसाठी	अर्थीक	आमच्यात जेणे करी	देखून घेतले. आता	देखून घेतले. आता	करून घालण्या	घालण्या करतो.
कितीच	विमानसंस्था	समाप्तीसाठी	अर्थीक	आमच्यात जेणे करी	देखून घेतले. आता	देखून घेतले. आता	करून घालण्या	घालण्या करतो.
ज्यांच्यावरून पोचत नाहीत	विमानसंस्था	समाप्तीसाठी	अर्थीक	आमच्यात जेणे करी	देखून घेतले. आता	देखून घेतले. आता	करून घालण्या	घालण्या करतो.
आता आमच्या मुदतीतील	अर्थीक विमान	महादंडाची मुदती	लक्षणे घालण्या करतो	देखून घेतले. आता	देखून घेतले. आता	देखून घेतले. आता	करून घालण्या	घालण्या करतो.
मिळवून आर्थीक आव्हाने	विमानसंस्था	समाप्तीसाठी	अर्थीक	आमच्यात जेणे करी	देखून घेतले. आता	देखून घेतले. आता	करून घालण्या	घालण्या करतो.
विमान टाकत लक्षात	विमानसंस्था	समाप्तीसाठी	अर्थीक	आमच्यात जेणे करी	देखून घेतले. आता	देखून घेतले. आता	करून घालण्या	घालण्या करतो.
कितीच	विमानसंस्था	समाप्तीसाठी	अर्थीक	आमच्यात जेणे करी	देखून घेतले. आता	देखून घेतले. आता	करून घालण्या	घालण्या करतो.
ज्यांच्यावरून पोचत नाहीत	विमानसंस्था	समाप्तीसाठी	अर्थीक	आमच्यात जेणे करी	देखून घेतले. आता	देखून घेतले. आता	करून घालण्या	घालण्या करतो.
आता आमच्या मुदतीतील	अर्थीक विमान	महादंडाची मुदती	लक्षणे घालण्या करतो	देखून घेतले. आता	देखून घेतले. आता	देखून घेतले. आता	करून घालण्या	घालण्या करतो.

Publication	Solapur Tarun Bhushan
Edition	Solapur
Date	October 17, 2020
Page No.	3

अल्प उत्पन्न वर्गातील महिलाना आर्थिक साह्यासाठी मायक्रोफायनान्स आधार

सोलापूर, (प्रतिनिधी) : पारंपरिक वित्तसेवा ज्यांच्यापर्यंत पोचत नाहीत अशा अल्प उत्पन्न गटातील महिलांना आर्थिक स्वातंत्र्य मिळवून देऊन त्यांना पैशांच्या वापराबद्दलचे योग्य निर्णय घेण्यास सक्षम करण्याच्या कामी छोटी कर्जे देणा-या लघुवित्त क्षेत्राची गेली दोन दशके मदत होत आहे. भारतात बिगर बँकिंग वित्तसंस्थांचे लघुवित्त विभाग, बँकांचे लघुवित्त विभाग, लघु वित्त बँका आणि बिगर बँकिंग वित्तसंस्था या सर्वांचे मिळून सध्या ५ कोटी ८० लाख लघुवित्त ग्राहक असलेल्या या क्षेत्रात - विशेषतः या कोरोना-१९ च्या परिस्थितीत मोठे बदल घडत आहेत. २०१६ मधली नोटबंदी असो अथवा आ-ताची २०२० ची जगाला दिळखा घालणारी महामारी असो वित्तीय समावेशाच्या प्रक्रियेत मायक्रोफायनान्स क्षेत्राची महत्त्वाची भूमिका आहे. मायक्रोफायनान्स कर्जे छोट्या मुदतीची असतात. याउलट सावकारी कर्जे दीर्घ मुदतीची, तारणावर दिलेली आणि ५० टक्के ते ६० टक्के एवढे भरमसाठ व्याज आकारणारी असतात. ज्या महिला कर्जदारांची एखाद्या मायक्रोफायनान्स संस्थेविषयी तक्रार असेल त्यांना ती १८०० १०२ १०८० या टोल फ्री क्रमांकावर फोन करून नोंदवता येते. या मंचाचे काम १२ विविध भाषांमध्ये चालते आणि देशातील कोणत्याही राज्यातील महिला ग्राहक आठवड्याच्या कामाच्या दिवशी सकाळी ९.३० ते सायंकाळी ५.३० या वेळात फोन करू शकतात.

Publication	Kesari
Edition	Kolhapur
Date	October 20, 2020
Page No.	6

मायक्रोफायनान्सचा महिलांना मोठा आधार कोल्हापूर : प्रतिनिधी

पारंपरिक वित्तसेवा पोहोचत नाहीत, अशा अल्प उत्पन्न गटातील महिलांना आर्थिक स्वातंत्र्य मिळवून देऊन त्यांना पैशांच्या वापराबद्दलचे योग्य निर्णय घेण्यास सक्षम करण्याच्या कामी छोटी कर्जे देणाऱ्या लघुवित्त (मायक्रोफायनान्स) क्षेत्राची गेली दोन दशके मदत होत आहे. भारतात बिगर बँकिंग वित्तसंस्थांचे लघुवित्त विभाग, बँकांचे लघुवित्त विभाग, लघुवित्त बँका आणि बिगर बँकिंग वित्तसंस्था या सर्वांचे मिळून सध्या ५ कोटी ८० लाख लघुवित्त ग्राहक असलेल्या या क्षेत्रात - विशेषतः या कोरोना-१९ च्या परिस्थितीत मोठे बदल घडत आहेत.

Assam

Publication	The Assam Post
Edition	All Editions
Date	October 13, 2020
Page No.	3

Microfinance Sector: a great support for low-income women borrowers in uncertain times

Guwahati, Oct 6: It has now been over two decades that the Microfinance industry has been helping women from the low income and under-served group, achieve financial independence, empowering them to take the right financial decisions. With over 5.89 Crore unique customers as on June 30, 2020, being now served by different entities including the NBFC-MFIs, Banks, the Small Finance Banks or the stand-alone NBFCs, the Indian microfinance sector is undoubtedly changing, especially in these unprecedented Covid-19 times. Be it the November 2016 Demonetisation and now the 2020 Global Pandemic engulfing the world, the

microfinance industry has been playing a stellar role in financial inclusion. In the current situation, where the disbursal of loans has been relatively lower owing to subdued economic activity, most feel there will be a pent-up demand that will be witnessed, and microfinance would continue to serve the women borrowers, giving a helping hand to bounce back, financially, as well as emotionally. Microfinance lending is a formal form of financing for women borrowers, which is not only collateral free, but also there is complete Regulatory oversight by RBI, including on the interest charged which is on a reducing balance basis. The sector is now striving to become cashless and

rapidly adopting digital technology to achieve this. In contrast is the informal financing where on the loans availed from money lenders, the women borrower keeps on paying interest only and remains obligated for life. Microfinance loans are shorter-term loans, unlike from money lenders which are of far longer duration, with collateral and levied

with high interest ranging between 40 to 60 per cent. One important aspect for women borrowers is MFIN, an RBI-recognised self-regulatory organisation that has a Customer Grievance Redressal Mechanism (CGRM) in place where women borrowers of its Member organisations can place their grievance on its toll-free number 1800 102 1080. MFIN CGRM is avail-

able in 12 languages, and women customers from any state, anywhere in the country can call on the toll-free number between 9:30 am to 5:30 pm on weekdays. This unique facility is not available for women borrowers if they take a loan from informal sources, in fact, they are at the mercy of those who operate this unregulated and informal lending.

Publication	Dainik Batori Kakat
Edition	All Editions
Date	October 13, 2020
Page No.	6

ক্ষুদ্রঋণৰ খণ্ড : নিশ্চিত সময়ত কম উপাৰ্জনৰ মহিলাৰ বাবে সকাহ

গুৱাহাটী : নিম্ন উপাৰ্জন আৰু পিছপৰা শ্ৰেণীৰ মহিলাসকলক অৰ্থনৈতিক স্বাধীনতা অৰ্জন তথা শক্তিশালী বিত্তীয় সিদ্ধান্ত গ্ৰহণৰ বাবে সীম কৰি তোলাৰ উদ্দেশ্যে ক্ষুদ্রঋণ উদ্যোগে বিগত প্ৰায় দুটা দশকজুৰি সহায় কৰি আহিছে। ২০২০ চনৰ ৩০ জুনপৰ্যন্ত প্ৰায় ৫.৮০ কোটি গ্ৰাহকসহ বৰ্তমান এন বি এফ চি-এম এফ আই, বেংক, ক্ষুদ্র বিত্তীয় বেংক অথবা ষ্টেণ্ডএল'ন এন বি এফ চিসমূহে সেৱা অব্যাহত ৰাখিছে। সন্দেহাতীতভাৱে ভাৰতীয় ক্ষুদ্রঋণ উদ্যোগৰ পৰিৱৰ্তন হৈছে, বিশেষকৈ কোভিড-১৯ৰ সময়তো পৰিৱৰ্তন সাধন হৈছে। ২০১৬ চনৰ নৱেম্বৰৰ বিমূদ্ৰাকৰণ আৰু ২০২০ চনৰ গোলকীয়া মহামাৰীৰ সময়তো বিত্তীয় অন্তৰ্ভুক্তিত ক্ষুদ্রঋণ উদ্যোগে উল্লেখনীয় ভূমিকা পালন কৰিছে। সাম্প্ৰতিক প্ৰেক্ষাপটত অৰ্থনৈতিক কাৰ্য্যৱলী স্থবিৰ হৈ পৰাৰ পৰিপ্ৰেক্ষিতত ঋণ বিতৰণ তুলনামূলকভাৱে নিম্নগামী হৈ পৰিছে। বহুতে অনুভৱ কৰিছে যে চাহিদা নিয়ন্ত্ৰিত হৈ পৰিব। কিন্তু ক্ষুদ্রঋণে অৰ্থনৈতিক আৰু আৱেগিকভাৱেও মহিলাসকলৰ প্ৰতি সহায়ৰ হাত আগবঢ়াইছে। মহিলা ঋণগ্ৰস্তসকলৰ প্ৰতি ক্ষুদ্রঋণৰ ধাৰ হৈছে বিত্তীয় সহায়ৰ আনুষ্ঠানিক

প্ৰক্ৰিয়া, যি কেৱল আমানত মুক্তই নহয়, লগতে নিম্ন বেলেঞ্চৰ আধাৰত সূতসহ এয়া আৰ বি আইৰ তদাৰকীত পৰিচালিত। নগদবিহীন হবলৈ এই খণ্ডটোৱে চেষ্টা চলাই আছে আৰু লক্ষ্যত উপনীত হবৰ বাবে ক্ষিপ্ৰতাৰে ডিজিটেল প্ৰযুক্তি গ্ৰহণ কৰিছে। ধাৰ দিওঁতাৰ পৰা ধন লোৱাৰ অনানুষ্ঠানিক পদ্ধতিত মহিলাসকলে কেৱল সূত আদায় দিব লাগে আৰু ওৰে জীৱনৰ বাবে বাধ্য হৈ থাকিব লাগে। ক্ষুদ্রঋণৰ ধাৰ হৈছে হুস্ম্যাদী, কিন্তু ধন ধাৰে দিওঁতাৰ পৰা লোৱা ঋণ দীৰ্ঘম্যাদৰ। লগতে সেয়া অমানতযুক্ত আৰু ৪০-৬০ শতাংশপৰ্যন্ত সূত প্ৰযোজ্য। আৰ বি আইৰ দ্বাৰা স্বীকৃত স্ব-নিয়ামক সংস্থা এম এফ আই এনত মহিলা ঋণ লওঁতাৰ বাবে গুৰুত্বপূৰ্ণ দিশ হৈছে গ্ৰাহক ক্ষতিপূৰণ সমাধান ব্যৱস্থা (চি জি আৰ এম), যত সদস্য সংস্থাৰ মহিলা উপভোক্তাসকলে টোল ফ্ৰী নম্বৰ ১৮০০ ১০২ ১০৮০ৰ জৰিয়তে ১২ টা ভাষাত অভিযোগ দাখিল কৰিব পাৰে। সপ্তাহৰ সকলো দিনত পুৱা ৫.৩০ বজাৰ পৰা নিশা ৯.৩০ বজাৰ ভিতৰত যিকোনো ৰাজ্যৰ মহিলাই যোগাযোগ স্থাপন কৰিব পাৰে।

Publication	Asom Adiya
Edition	All Editions
Date	October 13, 2020
Page No.	10

বাণিজ্য-অর্থনীতি

কম উপাৰ্জনৰ মহিলাক সকাহ

গুৱাহাটীঃ নিম্ন উপাৰ্জন আৰু পিছপৰা শ্ৰেণীৰ মহিলাসকলক অৰ্থনৈতিক স্বাধীনতা অৰ্জন তথা শক্তিশালী বিত্তীয় সিদ্ধান্ত গ্ৰহণৰ বাবে সক্ষম কৰি তোলাৰ উদ্দেশ্যে ক্ষুদ্ৰঋণ উদ্যোগে বিগত প্ৰায় দুটা দশকজুৰি সহায় কৰি আহিছে। ২০২০ চনৰ ৩০ জুন পৰ্যন্ত প্ৰায় ৫.৮০ কোটি গ্ৰাহকসহ বৰ্তমান এন বি এফ চি-এম এফ আই, বেংক, ক্ষুদ্ৰ বিত্তীয় বেংক অথবা ষ্টেণ্ডএল'ন এন বি এফ চিসমূহে সেৱা অব্যাহত ৰাখিছে। সন্দেহাতীতভাৱে ভাৰতীয় ক্ষুদ্ৰঋণ উদ্যোগৰ পৰিৱৰ্তন হৈছে, বিশেষকৈ কোভিড-১৯ৰ সময়তো পৰিৱৰ্তন সাধন হৈছে। ২০১৬ চনৰ নৱেম্বৰৰ বিমূদ্ৰাকৰণ আৰু ২০২০ চনৰ গোলকীয়া মহামাৰীৰ সময়তো বিত্তীয় অন্তৰ্ভুক্তিত ক্ষুদ্ৰঋণ উদ্যোগে উল্লেখনীয় ভূমিকা পালন কৰিছে। সাম্প্ৰতিক প্ৰেক্ষাপটত অৰ্থনৈতিক কাৰ্যাবলী স্থবিৰ হৈ পৰাৰ পৰিপ্ৰেক্ষিতত ঋণ বিতৰণ তুলনামূলভাৱে নিম্নগামী হৈ পৰিছে। বহুতে অনুভৱ কৰিছে যে চাহিদা নিয়ন্ত্ৰিত হৈ পৰিব। কিন্তু ক্ষুদ্ৰঋণে অৰ্থনৈতিক আৰু আবেগিক ভাবেও মহিলাসকলৰ প্ৰতি সহায়ৰ হাত আগবঢ়াইছে। মহিলা ঋণগ্ৰস্তসকলৰ প্ৰতি ক্ষুদ্ৰঋণৰ ধাৰ হৈছে বিত্তীয় সহায়ৰ আনুষ্ঠানিক প্ৰক্ৰিয়া, যি কেৱল আমানত মুক্তই নহয়, লগতে নিম্ন বেলেপৰ আধাৰত সুতসহ এয়া আৰ বি আইৰ তদাৰকীত পৰিচালিত। নগদবিহীন হ'বলৈ এই খণ্ডটোৱে চেষ্টা চলাই আছে আৰু লক্ষ্যত উপনীত হ'বৰ বাবে দ্বিপ্ৰত্যাবে ডিজিটেল প্ৰযুক্তি গ্ৰহণ কৰিছে। ধাৰ দিওঁতাৰ পৰা ধন লোৱাৰ অনানুষ্ঠানিক পদ্ধতিত মহিলাসকলে কেৱল সুত আদায় দিব লাগে আৰু ওৰে জীৱনৰ বাবে ব্যাধি হৈ থাকিব লাগে।

Publication	Gana Adhikar
Edition	All Editions
Date	October 13, 2020
Page No.	6

ক্ষুদ্র ঋণৰ খণ্ড : অনিশ্চিত সময়ত কম উপাৰ্জনৰ মহিলাৰ বাবে সকাহ

গুৱাহাটী, ১২ অক্টোবৰঃ নিম্ন উপাৰ্জন আৰু পিছপৰা শ্ৰেণীৰ মহিলাসকলক অৰ্থনৈতিক স্বাধীনতা অৰ্জন তথা শক্তিশালী বিত্তীয় সিদ্ধান্ত গ্ৰহণৰ বাবে সক্ষম কৰি তোলাৰ উদ্দেশ্যে ক্ষুদ্রঋণ উদ্যোগে বিগত প্ৰায় দুটা দশকজুৰি সহায় কৰি আহিছে। ২০২০ চনৰ ৩০ জুনপৰ্যন্ত প্ৰায় ৫.৮০ কোটি গ্ৰাহকসহ বৰ্তমান এন বি এফ চি-এম এফ আই, বেংক, ক্ষুদ্র বিত্তীয় বেংক অথবা ষ্টেণ্ডএল'ন এন বি এফ চিসমূহে সেৱা অব্যাহত ৰাখিছে। সন্দেহাতীতভাৱে ভাৰতীয় ক্ষুদ্রঋণ উদ্যোগৰ পৰিবৰ্তন হৈছে, বিশেষকৈ কোভিড-১৯ৰ সময়তো পৰিবৰ্তন সাধন হৈছে। ২০১৬ চনৰ নৱেম্বৰৰ বিমূদ্ৰাকৰণ আৰু ২০২০ চনৰ গোলকীয়া মহামাৰীৰ সময়তো বিত্তীয় অন্তৰ্ভুক্তিত ক্ষুদ্রঋণ উদ্যোগে উল্লেখনীয় ভূমিকা পালন কৰিছে। সাম্প্ৰতিক প্ৰেক্ষাপটত অৰ্থনৈতিক কাৰ্য্যৱলী স্থবিৰ হৈ পৰাৰ পৰিপ্ৰেক্ষিতত ঋণ বিতৰণ তুলনামূলকভাৱে নিম্নগামী হৈ পৰিছে। বহুতে অনুভৱ কৰিছে যে চাহিদা নিয়ন্ত্ৰিত হৈ পৰিব। কিন্তু ক্ষুদ্রঋণে অৰ্থনৈতিক আৰু আৱেগিকভাৱেও মহিলাসকলৰ প্ৰতি সহায়ৰ হাত আগবঢ়াইছে। মহিলা ঋণগ্ৰস্তসকলৰ প্ৰতি ক্ষুদ্রঋণৰ ধাৰ হৈছে বিত্তীয় সহায়ৰ আনুষ্ঠানিক প্ৰক্ৰিয়া, যি কেৱল আমানত মুক্তই নহয়, লগতে নিম্ন বেলেঞ্চৰ আধাৰত সূতসহ এয়া আৰ বি আইৰ তদাৰকীত পৰিচালিত। নগদবিহীন হবলৈ এই খণ্ডটোৱে চেষ্টা চলাই আছে আৰু লক্ষ্যত উপনীত হবৰ বাবে ক্ষিপ্ৰতাৰে ডিজিটেল প্ৰযুক্তি গ্ৰহণ কৰিছে। ধাৰ দিওঁতাৰ পৰা ধন লোৱাৰ অনানুষ্ঠানিক পদ্ধতিত মহিলাসকলে কেৱল সূত আদায় দিব লাগে আৰু ওৰে জীৱনৰ বাবে বাধ্য হৈ থাকিব লাগে। ক্ষুদ্রঋণৰ ধাৰ হৈছে হুস্ম্যাদী, কিন্তু ধন ধাৰে দিওঁতাৰ পৰা লোৱা ঋণ দীৰ্ঘম্যাদৰ। লগতে সেয়া অমানতযুক্ত আৰু ৪০-৬০ শতাংশ পৰ্যন্ত সূত প্ৰযোজ্য।

Publication	Niyamiya Barta
Edition	All Editions
Date	October 13, 2020
Page No.	10

**মহিলাৰ
বাবে সকাহ**

গুৱাহাটী, ১৩ অক্টোবৰ : নিম্ন
উপার্জন আৰু পিছপৰা শ্ৰেণীৰ
মহিলাসকলক অৰ্থনৈতিক স্বাধীনতা
অৰ্জন তথা শক্তিশালী বিত্তীয় সিদ্ধান্ত
গ্ৰহণৰ বাবে সক্ষম কৰি তোলাৰ
উদ্দেশ্যে ক্ষুদ্ৰ ঋণ উদ্যোগে বিগত প্ৰায়
দুটা দশকজুৰি সহায় কৰি আহিছে।
মহিলা ঋণগ্ৰস্তসকলৰ প্ৰতি ক্ষুদ্ৰঋণৰ
ধাৰ লৈছে বিত্তীয় সহায়ৰ আনুষ্ঠানিক
প্ৰক্ৰিয়া, যি কেৱল আমানত মুক্তই
নহয়, লগতে নিম্ন বেলেঞ্চৰ আধাৰত
সূতসহ এয়া আৰ বি আইৰ তদাৰকীত
পৰিচালিত। ক্ষুদ্ৰঋণৰ ধাৰ হৈছে
হুস্মাদী, কিন্তু ধন ধাৰে দিওঁতাৰ পৰা
লোৱা ঋণ দীৰ্ঘম্যাদৰ। আৰ বি আইৰ
দ্বাৰা স্বীকৃত স্ব-নিয়ামক সংস্থা এম
এফ আই এনত মহিলা ঋণ লওঁতাৰ
বাবে গুৰুত্বপূৰ্ণ দিশ হৈছে গ্ৰাহক
ক্ষতিপূৰণ সমাধান ব্যৱস্থা (চি জি
আৰ এম), য'ত সদস্য সংস্থাৰ মহিলা
উপভোক্তাসকলে টোল ফ্ৰী নম্বৰ
১৮০০ ১০২ ১০৮০ৰ জৰিয়তে ১২টা
ভাষাত অভিযোগ দাখিল কৰিব পাৰে।

Publication	The Meghalaya Guardian
Edition	All Editions
Date	October 13, 2020
Page No.	2

Microfinance Sector: A great support for low-income women borrowers in uncertain times

GUWAHATI, OCT 5: It has now been over two decades that the Microfinance industry has been helping women from the low income and under-served group, achieve financial independence, empowering them to take the right financial decisions.

With over 5.80 crore unique customers as on June 30, 2020, being now served by different entities including the NBFC-MFIs, banks, Small Finance Banks or the stand-alone NBFCs, the Indian microfinance sector is undoubtedly changing, especially in these unprecedented Covid-19 times.

Be it the November 2016 demonetisation and now the 2020 global pandemic engulfing the world, the microfinance industry has been playing a stellar role in financial inclusion.

In the current situation, where the disbursal of loans has been rela-

tively lower owing to subdued economic activity, most feel there will be a pent-up demand that will be witnessed, and microfinance would continue to serve the women borrowers, giving a helping hand to bounce back, financially, as well as emotionally.

Microfinance lending is a formal form of financing for women borrowers, which is not only collateral free, but also there is complete regulatory oversight by RBI, including on the interest charged which is on a reducing balance basis. The sector is now striving to become cashless and rapidly adopting digital technology to achieve this. In contrast is the informal Financing where on the loans availed from money lenders, the women borrower keeps on paying interest only and remains obligated for life.

Microfinance loans are shorter-term loans, unlike from money lend-

ers which are of far longer duration, with collateral and levied with high interest ranging between 40 to 60 per cent.

One important aspect for women borrowers is MFIN, an RBI-recognised self-regulatory organisation that has a Customer Grievance Redressal Mechanism (CGRM) in place where women borrowers of its Member organisations can place their grievance on its toll-free number 1800 102 1080.

MFIN CGRM is available in 12 languages, and women customers from any state, anywhere in the country can call on the toll-free number between 9:30 am to 5:30 pm on weekdays. This unique facility is not available for women borrowers if they take a loan from informal sources; in fact, they are at the mercy of those who operate this unregulated and informal lending.

Publication	The North East Times
Edition	All Editions
Date	October 13, 2020
Page No.	2

Microfinance Sector: A great support for low-income women borrowers in uncertain times

GUWAHATI, OCT 5: It has now been over two decades that the Microfinance industry has been helping women from the low income and under-served group, achieve financial independence, empowering them to take the right financial decisions.

With over 5.80 crore unique customers as on June 30, 2020, being now served by different entities including the NBFC-MFIs, banks, Small Finance Banks or the stand-alone NBFCs, the Indian microfinance sector is undoubtedly changing, especially in these unprecedented Covid-19 times.

Be it the November 2016 demonetisation and now the 2020 global pandemic engulfing the world, the microfinance industry has been playing a stellar role in financial inclusion.

In the current situation, where the disbursal of loans has been rela-

tively lower owing to subdued economic activity, most feel there will be a pent-up demand that will be witnessed, and microfinance would continue to serve the women borrowers, giving a helping hand to bounce back, financially, as well as emotionally.

Microfinance lending is a formal form of financing for women borrowers, which is not only collateral free, but also there is complete regulatory oversight by RBI, including on the interest charged which is on a reducing balance basis. The sector is now striving to become cashless and rapidly adopting digital technology to achieve this. In contrast is the informal Financing where on the loans availed from money lenders, the women borrower keeps on paying interest only and remains obligated for life.

Microfinance loans are shorter-term loans, unlike from money lend-

ers which are of far longer duration, with collateral and levied with high interest ranging between 40 to 60 per cent.

One important aspect for women borrowers is MFIN, an RBI-recognised self-regulatory organisation that has a Customer Grievance Redressal Mechanism (CGRM) in place where women borrowers of its Member organisations can place their grievance on its toll-free number 1800 102 1080.

MFIN CGRM is available in 12 languages, and women customers from any state, anywhere in the country can call on the toll-free number between 9:30 am to 5:30 pm on weekdays. This unique facility is not available for women borrowers if they take a loan from informal sources; in fact, they are at the mercy of those who operate this unregulated and informal lending.

Publication	Hills Times
Edition	All Editions
Date	October 19, 2020
Page No.	2

Women borrowers standing strong with Microfinance

HT Bureau

GUWAHATI, Oct 5: It has now been over two decades that the Microfinance industry has been helping women from the low income and under-served group, achieve financial independence, empowering them to take the right financial decisions. With over 5.80 crore unique customers as on June 30, 2020, being now served by different entities including the NBFC-MFIs, banks, the small finance banks or the stand-alone NBFCs, the Indian microfinance sector is undoubtedly changing, especially in these unprecedented Covid-19 times.

In the current situation, where the disbursal of loans has been relatively lower owing to subdued economic activity, most feel there will be a pent-up demand that will be witnessed and microfinance would continue to serve the women borrowers, giving a helping hand to bounce back, financially, as well as emotionally. Microfinance lending is a formal form of financing for women borrowers, which is not only collateral free, but also there is complete regulatory oversight by RBI, including on the interest charged which is on a reducing balance basis. Microfinance loans are shorter-term loans, unlike from money lenders which are of far longer duration, with collateral and levied with high interest ranging between 40 to 60 percent.

Jharkhand

Publication	Chamakta Aina
Edition	Ranchi/Kodarma
Date	October 3, 2020
Page No.	3

माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र = कम आमदनी वाली महिला कर्जदारों के लिए सहारा

मुंबई 2 अक्टूबर दो दशक से भी ज्योदा समय से माइक्रोफाइनेंस उद्योग कम आमदनी वाली और वंचित समूहों की महिलाओं की आर्थिक आजादी पाने में मदद कर रहा है। इससे महिलाएं सही वित्तीय निर्णय लेने के लिए सशक्त होती हैं। भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर एनबीएफसी-एमएफआई, बैंक, स्मॉइल फाइनेंस बैंक या केवल एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं द्वारा 30 जून 2020 तक 5.80 करोड़ से ज्यादा ग्राहकों को सेवाएं दे रहा है। खासकर कोविड-19 के इस अभूतपूर्व समय में भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर में निश्चित रूप से बदलाव हो रहा है।

Publication	Dabang Hindi
Edition	Ranchi/Kodarma/Dumka
Date	October 2, 2020
Page No.	2

महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में मददगार है माइक्रोफिनांस क्षेत्र

संवाददाता

रांची। दो दशक से भी ज्यादा समय से माइक्रोफाइनेंस उद्योग कम आमदनी वाली और वंचित समूहों की महिलाओं की आर्थिक आजादी पाने में मदद कर रहा है। इससे महिलाएं सही वित्तीय निर्णय लेने के लिए सशक्त होती हैं। एक सर्वेक्षण के मुताबिक भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर की ओर से (एनबीएफसी-एमएफआई, बैंक, स्मॉल फाइनेंस बैंक सहित विभिन्न संस्थाओं द्वारा) 30 जून 2020 तक 5.80 करोड़ से ज्यादा ग्राहकों को सेवाएं मुहैया कराई गई। खासकर कोविड-19 के इस अभूतपूर्व समय में भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर में बदलाव हो रहा है। नवंबर 2016 की नोटबंदी हो या फिर वर्ष 2020 में पूरी दुनिया पर छाई वैश्विक महामारी, माइक्रोफाइनेंस उद्योग वित्तीय समावेशन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा

रहा है। वर्तमान स्थिति में, जहां ऋण का वितरण आर्थिक गतिविधियों के कम हो जाने की वजह से अपेक्षाकृत कम हो गया है। लेकिन इस बात की संभावना है कि एक बार फिर से मांग में वृद्धि होगी और माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र वंचित महिला कर्जदारों की सेवा करना जारी रखेगा। यह न केवल कोलेटरल ढंग से निःशुल्क है, बल्कि पूरी तरह से आरबीआई के निरीक्षण में है। इसमें जो ब्याज लगता है, वह भी बैलेंस कम होने के आधार पर लगता है। यह क्षेत्र अब नकद रहित बनने के लिए डिजिटल तकनीक अपना रहा है। अनौपचारिक ढंग से पैसा मुहैया कराना इसके ठीक विपरीत है, जिसमें उधार लेने वाली महिलाओं को महाजन से मिलने वाले कर्ज पर ब्याज चुकाते रहना पड़ता है और जीवन भर तक कर्ज की चक्की में पिसते रहना होता है। माइक्रोफाइनेंस लोन अल्पकालिक

लोन होते हैं। यह महाजनों (मनी लेंडर्स) से मिलने वाले लंबी अवधि वाले लोन के विपरीत होते हैं, जिनमें कोलेटरल के साथ ही 40 से 60 प्रतिशत के बीच ऊंचा ब्याज चुकाना पड़ता है। महिला उधारकर्ताओं के लिए एक महत्वपूर्ण बात यह भी है कि एमएफआईएन, आरबीआई द्वारा मान्यता प्राप्त एक स्व-नियामक संगठन है, जिसके पास ग्राहक शिकायत निवारण तंत्र (सीजीआरएम) है। इसके सदस्य संगठनों की महिला उधारकर्ता टोल-फ्री संख्या 1800 102 1080 पर अपनी शिकायत दर्ज करा सकती हैं। एमएफआईएन सीजीआरएम 12 भाषाओं में उपलब्ध है। किसी भी राज्य की महिला ग्राहक, देश में कहीं भी टोल-फ्री नंबर पर वीकडेज में सुबह 9:30 से शाम 5:30 के बीच कॉल कर सकती हैं।

Publication	Dainik Aaj
Edition	Ranchi/Kodarma/Dumka
Date	September 30, 2020
Page No.	3

महिला कर्जदारों के लिए एक बड़ा सहारा बनेगा माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र

रांची। दो दशक से भी ज्यादा समय से माइक्रोफाइनेंस उद्योग कम आमदनी वाली और वंचित समूहों की महिलाओं की आर्थिक आजादी पाने में मदद कर रहा है। इससे महिलाएं सही वित्तीय निर्णय लेने के लिए सशक्त होती हैं। भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर एनबीएफसी-एमएफआई, बैंक, स्मॉल फाइनेंस बैंक या केवल एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं द्वारा 30 जून 2020 तक 5.80 करोड़ से ज्यादा ग्राहकों को सेवाएं दे रहा है।

नवंबर 2016 की नोटबंदी हो या फिर 2020 में पूरी दुनिया पर छाई वैश्विक महामारी माइक्रोफाइनेंस उद्योग वित्तीय समावेशन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। वर्तमान स्थिति में, जहां ऋण का वितरण आर्थिक गतिविधियों के कम हो जाने की वजह से अपेक्षाकृत कम हो गया है। लेकिन इस बात की पूरी संभावना है कि एक बार फिर से मांग में वृद्धि होगी, और माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र वंचित महिला कर्जदारों की सेवा करना जारी रखेगा। इससे उन्हें आर्थिक के साथ ही भावनात्मक रूप से भी जोरदार वापसी करने में मदद मिलेगी।

Publication	Dainik Punch
Edition	Ranchi/Kodarma/Dumka
Date	October 3, 2020
Page No.	11

माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र मुश्किल वक्त में कम आमदनी वाली

एजेंसी
संघी। दो दशक से भी ज्यादा समय से माइक्रोफाइनेंस उद्योग कम आमदनी वाली और वींचत समूहों की महिलाओं की आर्थिक आजादी पाने में मदद कर रहा है। इससे महिलाएं सही वित्तीय निर्णय लेने के लिए सशक्त होती हैं। भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर एनबीएफसी-एमएफआई, बैंक, स्मॉल फाइनेंस बैंक या केवल एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं द्वारा 30 जून 2020 तक 5.80 करोड़ से ज्यादा ग्राहकों को सेवाएं दे रहा है। खासकर कोविड-19 के इस अभूतपूर्व समय में भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर में निश्चित रूप से बदलाव हो रहा है। नवंबर 2016 की नोटबंदी हो या फिर 2020 में पूरी दुनिया पर छाई वैश्विक महामारी माइक्रोफाइनेंस उद्योग वित्तीय समावेशन में एक महत्वपूर्ण भूमिका

महिला कर्जदारों के लिए एक बड़ा सहारा

निभा रहा है। वर्तमान स्थिति में, जहां ऋण का वितरण आर्थिक गतिविधियों के कम हो जाने की वजह से अपेक्षाकृत कम हो गया है। लेकिन इस बात की पूरी संभावना है कि एक बार फिर से मांग में वृद्धि होगी, और माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र वींचत महिला कर्जदारों की सेवा करना जारी रखेगा। इससे उन्हें आर्थिक के साथ ही भावनात्मक रूप से भी जोरदार वापसी करने में मदद मिलेगी। माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र से जो उधार मिलता है, वह जरूरतमंद महिलाओं को पैसा उपलब्ध कराने का औपचारिक जरिया है। यह न केवल कोलेटरल ढंग से निःशुल्क है, बल्कि पूरी तरह से आरबीआई के निरीक्षण में है। इसमें जो ब्याज लगता है, वह भी

वैलेंस कम होने के आधार पर लगता है। यह क्षेत्र अब नकद रहित बनने के लिए प्रयासरत है और इसके लिए यह तेजी से डिजिटल तकनीक अपना रहा है। अनौपचारिक ढंग से पैसा मुहैया कराना इसके ठीक विपरीत है, जिसमें उधार लेने वाली महिलाओं को महाजन से मिलने वाले कर्ज पर ब्याज चुकाते रहना पड़ता है और जीवन भर तक कर्ज की चक्की में पिसते रहना होता है। माइक्रोफाइनेंस लोन अल्पकालिक लोन होते हैं। यह महाजनों (मनी लेंडर्स) से मिलने वाले लंबी अवधि वाले लोन के विपरीत होते हैं, जिनमें कोलेटरल के साथ ही 40 से 60 प्रतिशत के बीच ऊंचा ब्याज चुकाना पड़ता है। महिला उधारकर्ताओं के लिए एक महत्वपूर्ण

बात यह भी है कि एमएफआईएन, आरबीआई द्वारा मान्यता प्राप्त एक स्व-नियामक संगठन है, जिसके पास ग्राहक शिकायत निवारण तंत्र (सीजीआरएम) है।

इसके सदस्य संगठनों की महिला उधारकर्ता टोल-फ्री संख्या 1800 102 1080 पर अपनी शिकायत दर्ज करा सकती हैं। एमएफआईएन सीजीआरएम 12 भाषाओं में उपलब्ध है, और किसी भी राज्य की महिला ग्राहक, देश में कहीं भी टोल-फ्री नंबर पर वीकडेज में सुबह 9:30 से शाम 5:30 के बीच कॉल कर सकती हैं। अनौपचारिक स्रोतों से लोन लेने पर महिला उधारकर्ताओं के लिए यह अन्टी सुविधा उपलब्ध नहीं है और वहां अनियमित और अनौपचारिक उधार का संचालन करने वालों की दया पर लोन की सुविधा मिल पाती

Publication	Khabar Mantra
Edition	Ranchi/Kodarma/Dumka
Date	September 30, 2020
Page No.	5

माइक्रोफाइनेंस उद्योग महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा

रांची। दो दशक से भी ज्यादा समय से माइक्रोफाइनेंस उद्योग कम आमदनी वाली और वंचित समूहों की महिलाओं की आर्थिक आजादी पाने में मदद कर रहा है। इससे महिलाएं सही वित्तीय निर्णय लेने के लिए सशक्त होती हैं। भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर एनबीएफसी-एमएफआई, बैंक, स्मॉल फाइनेंस बैंक या केवल एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं द्वारा 30 जून 2020 तक 5.80 करोड़ से ज्यादा ग्राहकों को सेवाएं दे रहा है। खासकर कोविड-19 के इस अभूतपूर्व समय में भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर में निश्चित रूप से बदलाव हो रहा है।

Chhattisgarh

Publication	Amanpath
Edition	Bilaspur/Ambikapur/Mahasamund
Date	October 2, 2020
Page No.	10

माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र : मुश्किल वक्त में कम आमदनी वाली महिला कर्जदारों के लिए एक बड़ा सहारा

नई दिल्ली। दो दशक से भी ज्यादा समय से माइक्रोफाइनेंस उद्योग कम आमदनी वाली और वंचित समूहों की महिलाओं की आर्थिक आजादी पाने में मदद कर रहा है। इससे महिलाएं सही वित्तीय निर्णय लेने के लिए सशक्त होती हैं।

भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर एनबीएफसी-एमएफआई, बैंक, स्मॉल फाइनेंस बैंक या केवल एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं द्वारा 30 जून 2020

तक 5.80 करोड़ से ज्यादा ग्राहकों को सेवाएं दे रहा है। खासकर कोविड-19 के इस अभूतपूर्व समय में भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर में निश्चित रूप से बदलाव हो रहा है।

नवंबर 2016 की नोटबंदी हो या फिर 2020 में पूरी दुनिया पर छाई वैश्विक महामारी माइक्रोफाइनेंस उद्योग वित्तीय समावेशन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

वर्तमान स्थिति में, जहां ऋण का वितरण आर्थिक गतिविधियों

के कम हो जाने की वजह से अपेक्षाकृत कम हो गया है। लेकिन इस बात की पूरी संभावना है कि एक बार फिर से मांग में वृद्धि होगी, और माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र वंचित महिला कर्जदारों की सेवा करना जारी रखेगा। इससे उन्हें आर्थिक के साथ ही भावनात्मक रूप से भी जोरदार वापसी करने में मदद मिलेगी।

माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र से जो उधार मिलता है, वह जरूरतमंद महिलाओं को पैसा उपलब्ध कराने का औपचारिक जरिया है।

Publication	Ispat Times
Edition	Raipur/Bilaspur/Ambikapur/Mahasamund
Date	September 30, 2020
Page No.	4

माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र : मुश्किल वक्त में कम आमदनी वाली महिला कर्जदारों के लिए एक बड़ा सहारा

नई दिल्ली। दो दशक से भी ज्यादा समय से माइक्रोफाइनेंस उद्योग कम आमदनी वाली और वंचित समूहों की महिलाओं की आर्थिक आजादी पाने में मदद कर रहा है। इससे महिलाएं सही वित्तीय निर्णय लेने के लिए सशक्त होती हैं।

भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर एनबीएफसी-एमएफआई, बैंक, स्मॉल फाइनेंस बैंक या केवल एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं द्वारा 30 जून 2020 तक 5.80 करोड़ से ज्यादा ग्राहकों को सेवाएं दे रहा है। खासकर कोविड-19 के इस अभूतपूर्व समय में भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर में निश्चित रूप से बदलाव हो रहा है। नवंबर 2016 की नोटबंदी हो या फिर 2020 में पूरी दुनिया पर छाई वैश्विक महामारी माइक्रोफाइनेंस उद्योग वित्तीय समावेशन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। वर्तमान स्थिति में, जहां ऋण का वितरण आर्थिक गतिविधियों के कम हो जाने की वजह से

अपेक्षाकृत कम हो गया है। लेकिन इस बात की पूरी संभावना है कि एक बार फिर से मांग में वृद्धि होगी, और माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र वंचित महिला कर्जदारों की सेवा करना जारी रखेगा। इससे उन्हें आर्थिक के साथ ही भावनात्मक रूप से भी जोरदार वापसी करने में मदद मिलेगी।

माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र से जो उधार मिलता है, वह जरूरतमंद महिलाओं को पैसा उपलब्ध कराने का औपचारिक जरिया है। यह न केवल कोलेटरल ढंग से निःशुल्क है, बल्कि पूरी तरह से आरबीआई के निरीक्षण में है। इसमें जो ब्याज लगता है, वह भी बैलेंस कम होने के आधार पर लगता है। यह क्षेत्र अब नकद रहित बनने के लिए प्रयासरत है और इसके लिए यह तेजी से डिजिटल तकनीक अपना रहा है। अनौपचारिक ढंग से पैसा मुहैया कराना इसके ठीक विपरीत है, जिसमें उधार लेने वाली महिलाओं को महाजन से मिलने वाले कर्ज पर ब्याज चुकते रहना पड़ता है और जीवन भर

तक कर्ज की चक्की में पिसते रहना होता है।

माइक्रोफाइनेंस लोन अल्पकालिक लोन होते हैं। यह महाजनों से मिलने वाले लंबी अवधि वाले लोन के विपरीत होते हैं, जिनमें कोलेटरल के साथ ही 40 से 60 प्रतिशत के बीच ऊंचा ब्याज चुकाना पड़ता है। महिला उधारकर्ताओं के लिए एक महत्वपूर्ण बात यह भी है कि एमएफआईएन, आरबीआई द्वारा मान्यता प्राप्त एक स्व-नियामक संगठन है, जिसके पास ग्राहक शिकायत निवारण तंत्र (सीजीआरएम) है। इसके सदस्य संगठनों की महिला उधारकर्ता टोल-फ्री संख्या 1800 102 1080 पर अपनी शिकायत दर्ज करा सकती हैं। एमएफआईएन सीजीआरएम 12 भाषाओं में उपलब्ध है, और किसी भी राज्य की महिला ग्राहक, देश में कहीं भी टोल-फ्री नंबर पर वीकडेज में सुबह 9:30 से शाम 5:30 के बीच कॉल कर सकती हैं।

Publication	Pratidin Rajdhani
Edition	Bilaspur/Ambikapur/Mahasamund
Date	October 1, 2020
Page No.	4

माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र: मुश्किल वक्त में कम आमदनी वाली महिला कर्जदारों के लिए एक बड़ा सहारा

मुंबई। दो दशक से भी ज्यादा समय से माइक्रोफाइनेंस उद्योग कम आमदनी वाली और वंचित समूहों की महिलाओं की आर्थिक आजादी पाने में मदद कर रहा है। इससे महिलाएं सही वित्तीय निर्णय लेने के लिए सशक्त होती हैं। भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर एनबीएफसी-एमएफआई, बैंक, स्मॉल फाइनेंस बैंक या केवल एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं द्वारा 30 जून 2020 तक 5.80 करोड़ से ज्यादा ग्राहकों को सेवाएं दे रहा है। खासकर कोविड-19 के इस अभूतपूर्व समय में भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर में निश्चित रूप से बदलाव हो रहा है। नवंबर 2016 की नोटबंदी हो या फिर 2020 में पूरी दुनिया पर छाई वैश्विक महामारी माइक्रोफाइनेंस उद्योग वित्तीय समावेशन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। वर्तमान स्थिति में, जहां ऋण का वितरण आर्थिक गतिविधियों के कम हो जाने की वजह से अपेक्षाकृत कम हो गया है। लेकिन इस बात की पूरी संभावना है कि एक बार फिर से मांग में वृद्धि होगी, और माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र वंचित महिला कर्जदारों की सेवा करना जारी रखेगा। इससे उन्हें आर्थिक के साथ ही भावनात्मक रूप से भी जोरदार वापसी करने में मदद मिलेगी। माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र से जो उधार मिलता है, वह जरूरतमंद महिलाओं को पैसा उपलब्ध कराने का औपचारिक जरिया है। यह न केवल कोलेटरल ढंग से निःशुल्क है, बल्कि पूरी तरह से आरबीआई के निरीक्षण में है।

Publication	Rashtriya Hindi Mail
Edition	Raipur/Bilaspur/Ambikapur/Mahasamund
Date	September 30, 2020
Page No.	7

माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र : मुश्किल वक्त में कम आमदनी वाली महिला कर्जदारों के लिए एक बड़ा सहारा

माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र =
मुश्किल वक्त में कम
आमदनी वाली महिला
कर्जदारों के लिए एक
बड़ा स्रोत।

दो दशक से भी ज्यादा समय से माइक्रोफाइनेंस उद्योग कम आमदनी वाली और

वंचित समूहों की महिलाओं की आर्थिक आजादी पाने में मदद कर रहा है। इससे महिलाएं सही वित्तीय निर्णय लेने के लिए सशक्त होती हैं।

भारतीय माइक्रोफाइनेंस
सेक्टर एनबीएफसी-
एमएफआई बैंक, स्मॉल
फाइनेंस बैंक या केवल
एनबीएफसी सहित विभिन्न
संस्थाओं द्वारा 30 जून 2020
तक 5.80 करोड़ से ज्यादा
ग्राहकों को सेवाएं दे रहा है।
खासकर कोविड-19 के इस
अभूतपूर्व समय में भारतीय
माइक्रोफाइनेंस सेक्टर में निश्चित
रूप से बदलाव हो रहा है।

नवंबर 2016 की नोटबंदी



हो या फिर 2020 में पूरी दुनिया पर छाई वैश्विक महामारी माइक्रोफाइनेंस उद्योग वित्तीय समावेशन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

वर्तमान स्थिति में, जहाँ प्रश्न का वितरण आर्थिक गतिविधियों के कम हो जाने की वजह से अपेक्षाकृत कम हो गया है। लेकिन इस बात की पूरी संभावना है कि एक बार फिर से मांग में वृद्धि होगी, और माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र वॉचर महिला कर्जदारों की सेवा करना जारी रखेगा। इससे उन्हें आर्थिक के साथ ही भावनात्मक रूप से भी जोरदार वापसी करने में मदद मिलेगी।

Publication	Samvet Shikhar
Edition	Bilaspur/Ambikapur/Mahasamund
Date	October 2, 2020
Page No.	9

माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र: मुश्किल वक्त में कम आमदनी वाली महिला कर्जदारों के लिए एक बड़ा सहारा

नई दिल्ली। दो दशक से भी ज्यादा समय से माइक्रोफाइनेंस उद्योग कम आमदनी वाली और वंचित समूहों की महिलाओं की आर्थिक आजादी पाने में मदद कर रहा है। इससे महिलाएं सही वित्तीय निर्णय लेने के लिए सशक्त हो जाती हैं। भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर एनबीएफसी-एमएफआई, बैंक, स्मॉल फाइनेंस बैंक या केवल एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं द्वारा 30 जून 2020 तक 5.80 करोड़ से ज्यादा ग्राहकों को सेवाएं दे रहा है। खासकर कोविड-19 के इस अभूतपूर्व समय में भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर में निश्चित रूप से बदलाव हो रहा है। नवंबर 2016 की नोटबंदी हो या फिर 2020 में पूरी दुनिया पर छाई वैश्विक महामारी माइक्रोफाइनेंस उद्योग वित्तीय समावेशन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। वर्तमान स्थिति में, जहाँ ऋण का वितरण आर्थिक गतिविधियों के कम हो जाने की वजह से अपेक्षाकृत कम हो गया है। लेकिन इस बात की पूरी संभावना है कि एक बार फिर से मांग में वृद्धि होगी, और माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र वंचित महिला कर्जदारों की सेवा करना जारी रखेगा। इससे उन्हें आर्थिक के साथ ही भावनात्मक रूप से भी जोरदार वापसी करने में मदद मिलेगी। माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र से जो उधार मिलता है, वह जरूरतमंद महिलाओं को पैसा उपलब्ध कराने का औपचारिक जरिया है। यह न केवल कोलेटरल डंग से निःशुल्क है, बल्कि पूरी तरह से आरबीआई के निरीक्षण में है। इसमें जो ब्याज लगता है, वह भी बैलेंस कम होने के आधार पर लगता है।

Publication	Chronicle Today
Edition	Raipur/Bilaspur/Ambikapur/Mahasamund
Date	October 15, 2020
Page No.	2

माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र रु मुश्किल वक्त में कम आमदनी वाली महिला कर्जदारों के लिए एक बड़ा सहारा

नई दिल्ली (एजेंसी)। दो दशक से भी ज्यादा समय से माइक्रोफाइनेंस उद्योग कम आमदनी वाली और वंचित समूहों की महिलाओं की आर्थिक आजादी पाने में मदद कर रहा है। इससे महिलाएं सही वित्तीय निर्णय लेने के लिए सशक्त होती हैं। भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर एनबीएफसी-एमएफआई बैंक, स्मॉल फाइनेंस बैंक या केवल एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं द्वारा 30 जून 2020 तक 5880 करोड़ से ज्यादा ग्राहकों को सेवाएं दे रहा है। खासकर कोविड-19 के इस अभूतपूर्व समय में भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर में निश्चित रूप से बदलाव हो रहा है। नवंबर 2016 की नोटबंदी हो या फिर 2020 में पूरी दुनिया पर छाई वैश्विक महामारी माइक्रोफाइनेंस उद्योग वित्तीय समावेशन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। वर्तमान स्थिति में जहां ऋण का वितरण आर्थिक गतिविधियों के कम हो जाने की वजह से अपेक्षाकृत कम हो गया है। लेकिन इस बात की पूरी संभावना है कि एक बार फिर से मांग में वृद्धि होगी, और माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र वंचित महिला कर्जदारों की सेवा करना जारी रखेगा। इससे उन्हें आर्थिक के साथ ही भावनात्मक रूप से भी जोरदार वापसी करने में मदद मिलेगी। माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र से जो उधार मिलता है वह जरूरतमंद महिलाओं को पैसा उपलब्ध कराने का औपचारिक जरिया है। यह न केवल कोलेटरल ढंग से निःशुल्क है, बल्कि पूरी तरह से आरबीआई के निरीक्षण में है। इसमें जो ब्याज लगता है वह भी बेलेंस कम होने के आधार पर लगता है। यह क्षेत्र अब नकद रहित बनने के लिए प्रयासरत है और इसके लिए यह तेजी से डिजिटल तकनीक अपना रहा है। अनौपचारिक ढंग से पैसा मुहैया कराना इसके ठीक विपरीत है, जिसमें उधार लेने वाली महिलाओं को महाजन से मिलने वाले कर्ज पर ब्याज चुकाते रहना पड़ता है और जीवन भर तक कर्ज की चक्की में पिसते रहना होता है।

Publication	Pratidin Rajdhani
Edition	Raipur/Bilaspur/Ambikapur/Mahasamund
Date	October 15, 2020
Page No.	4

माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र रु मुश्किल वक्त में कम आमदनी वाली महिला कर्जदारों के लिए एक बड़ा सहारा

नईदिल्ली (एजेंसी)। दो दशक से भी ज्यादा समय से माइक्रोफाइनेंस उद्योग कम आमदनी वाली और वंचित समूहों की महिलाओं की आर्थिक आजादी पाने में मदद कर रहा है। इससे महिलाएं सही वित्तीय निर्णय लेने के लिए सशक्त होती हैं। भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर एनबीएफसी-एमएफआईए बैंक ए स्मॉल फाइनेंस बैंक या केवल एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं द्वारा 30 जून 2020 तक 580 करोड़ से ज्यादा ग्राहकों को सेवाएं दे रहा है। खासकर कोविड.19 के इस अभूतपूर्व समय में भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर में निश्चित रूप से बदलाव हो रहा है। नवंबर 2016 की नोटबंदी हो या फिर 2020 में पूरी दुनिया पर छाई वैश्विक महामारी माइक्रोफाइनेंस उद्योग वित्तीय समावेशन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। वर्तमान स्थिति में जहां ऋण का वितरण आर्थिक गतिविधियों के कम हो जाने की वजह से अपेक्षाकृत कम हो गया है। लेकिन इस बात की पूरी संभावना है कि एक बार फिर से मांग में वृद्धि होगी, और माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र वंचित महिला कर्जदारों की सेवा करना जारी रखेगा।

Publication	Dainandini
Edition	Bilaspur/Ambikapur/Mahasamund
Date	October 16, 2020
Page No.	7

माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र: मुश्किल वक्त में कम आमदनी वाली महिला कर्जदारों के लिए एक बड़ा सहारा

दो दशक से भी ज्यादा समय से माइक्रोफाइनेंस उद्योग कम आमदनी वाली और वंचित समूहों की महिलाओं की आर्थिक आजादी पाने में मदद कर रहा है। इससे महिलाएं सही वित्तीय निर्णय लेने के लिए सशक्त होती हैं। भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर एनबीएफसी-एमएफआई, बैंक, स्मॉल फाइनेंस बैंक या केवल एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं द्वारा 30 जून 2020 तक 5.80 करोड़ से ज्यादा ग्राहकों को सेवाएं दे रहा है। खासकर कोविड-19 के इस अभूतपूर्व समय में भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर में निश्चित रूप से बदलाव हो रहा है। नवंबर 2016 की नोटबंदी हो या फिर 2020 में पूरी दुनिया पर छाई वैश्विक महामारी माइक्रोफाइनेंस उद्योग वित्तीय समावेशन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। वर्तमान स्थिति में, जहां ऋण का वितरण आर्थिक गतिविधियों के कम

हो जाने की वजह से अपेक्षाकृत कम हो गया है। लेकिन इस बात की पूरी संभावना है कि एक बार फिर से मांग में वृद्धि होगी, और माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र वंचित महिला कर्जदारों की सेवा करना जारी रखेगा। इससे उन्हें आर्थिक के साथ ही भावनात्मक रूप से भी जोरदार वापसी करने में मदद मिलेगी। माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र से जो उधार मिलता है, वह जरूरतमंद महिलाओं को पैसा उपलब्ध कराने का औपचारिक जरिया है। यह न केवल कोलेटरल ढंग से निःशुल्क है, बल्कि पूरी तरह से आरबीआई के निरीक्षण में है। इसमें जो ब्याज लगता है, वह भी बैलेंस कम होने के आधार पर लगता है। यह क्षेत्र अब नकद रहित बनने के लिए प्रयासरत है और इसके लिए यह तेजी से डिजिटल तकनीक अपना रहा है। अनौपचारिक ढंग से पैसा मुहैया कराना इसके ठीक विपरीत है।

Bihar

Publication	Media Darshan Live
Edition	Patna/Gaya/Samastipur/Jahanabad
Date	October 8, 2020
Page No.	11

माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र : मुश्किल वक्त में कम आमदनी वाली महिला कर्जदारों के लिए एक बड़ा सहारा

दो दशक से भी ज्यादा समय से माइक्रोफाइनेंस उद्योग कम आमदनी वाली और वंचित समूहों की महिलाओं की आर्थिक आजादी पाने में मदद कर रहा है। इससे महिलाएं सही वित्तीय निर्णय लेने के लिए सशक्ता होती हैं। भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर एनबीएफसी-एमएफआई, बैंक, स्मॉल फाइनेंस बैंक या केवल एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं द्वारा 30 जून 2020 तक 5.80 करोड़ से ज्यादा ग्राहकों को सेवाएं दे रहा है। खासकर कोविड-19 के इस अभूतपूर्व समय में भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर में निश्चित रूप से बदलाव हो रहा है। नवंबर 2016 की नोटबंदी हो या फिर 2020 में पूरी दुनिया पर छाई वैश्विक महामारी माइक्रोफाइनेंस उद्योग वित्तीय समावेशन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। वर्तमान स्थिति में, जहां ऋण का वितरण आर्थिक गतिविधियों के कम हो जाने की वजह से अपेक्षाकृत कम हो गया है। लेकिन इस बात की पूरी संभावना है कि एक बार फिर से मांग में वृद्धि होगी, और माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र वंचित महिला कर्जदारों की सेवा करना जारी रखेगा। इससे उन्हें आर्थिक के साथ ही भावनात्मक रूप से भी जोरदार वापसी करने में मदद मिलेगी। माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र से जो उधार मिलता है, वह जरूरतमंद महिलाओं को पैसा उपलब्ध कराने का औपचारिक जरिया है। यह न केवल कोलेटरल ढंग से निःशुल्क है, बल्कि पूरी तरह से आरबीआई के निरीक्षण में है। इसमें जो ब्याज लगता है, वह भी बैलेंस कम होने के आधार पर लगता है। यह क्षेत्र अब नकद रहित बनने के लिए प्रयासरत है और इसके लिए यह तेजी से डिजिटल तकनीक अपना रहा है। अनौपचारिक ढंग से पैसा मुहैया कराना इसके ठीक विपरीत है, जिसमें उधार लेने वाली महिलाओं को महाजन से मिलने वाले कर्ज पर ब्याज चुकाते रहना पड़ता है और जीवन भर तक कर्ज की चक्की में पिसते रहना होता है।

Publication	Nav Bihar Times
Edition	Patna/Gaya/Samastipur/Jahanabad
Date	October 6, 2020
Page No.	3

मोराटोरियम के बाद ग्राहक केंद्रित दृष्टिकोण महत्वपूर्ण : एमफिन

कार्यालय संवाददाता

पटना। माइक्रोफाइनेंस इंस्टीट्यूट्स नेटवर्क (एमफिन) ने अपने सदस्यों के साथ हुई बातचीत के आधार पर एक एडवायजरी जारी की है। इस एडवायजरी में 31 अगस्त को (मोराटोरियम समाप्त होने के बाद कर्ज लेने वालों (बरोअर्स) के साथ जुड़ाव बनाने के दौरान ध्यान में रखे जाने वाले महत्वपूर्ण कदमों के बारे में बताया गया है। एमफिन माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र का प्रमुख उद्योग संघ और आरबीआई द्वारा मान्यता प्राप्त स्व-नियामक संगठन है। इस विस्तृत एडवायजरी में उद्योग की आचार संहिता और उत्तरदायी ऋण संहिता में शामिल विषय दोहराये गए हैं। इनमें कर्जदारों के साथ ईमानदारी से साफ बातचीत, पारदर्शिता

सुनिश्चित करना, कर्जदारों के साथ संवाद करने वाले कर्मचारियों का प्रशिक्षण जैसे कई विषयों के साथ ही कोविड से जुड़े सुरक्षा उपाय भी शामिल हैं। एमफिन के सदस्य आरबीआई-विनियमित संस्थाएं हैं, जिनमें एनबीएफसी-एमएफआई, बैंक, लघु वित्त बैंक, व्यवसाय प्रतिनिधि और एनबीएफसी शामिल हैं जो कम आय वाले परिवारों को माइक्रोक्रेडिट प्रदान करते हैं। कोविड-19 ने इन बीओपी कर्जदारों की आजीविका को प्रभावित किया है, इसे देखते हुए आरबीआई ने 31 मई तक प्रारंभिक मोराटोरियम की घोषणा की थी और बाद में इसे 31 अगस्त तक तीन महीने की अवधि के लिए बढ़ा दिया था। एमफिन के सीईओ और निदेशक

डॉ. आलोक मिश्रा ने कहा, यह हम सभी के लिए बेहद अहम वक्त है और हमें सावधानी के साथ चलने की जरूरत है। अब जबकि मोराटोरियम समाप्त हो रहा है, मुमकिन है कि कर्ज लेने वाले कुछ लोग परेशानी का सामना कर रहे हों। सभी ऋण प्रदाता सहमत हैं कि हमें इन कर्जदारों के साथ अब भी बराबर सहानुभूति दिखानी चाहिए और उन्हें फिर से संभलने का समय देना चाहिए, भले ही क्रेडिट अनुशासन महत्वपूर्ण हो। इसके साथ ही, हमें उन लोगों को मार्गदर्शन देने की जरूरत है जो मोराटोरियम का लाभ उठा चुके हैं और संशोधित ऋण कार्ड, जमा ब्याज राशि, रिपेमेंट की राशि, शेड्यूल व ऋण अवधि में परिवर्तन जैसे प्रस्तुत दस्तावेजों के साथ रिपेमेंट करने के इच्छुक हैं।

Publication	Manus Khabar
Edition	Patna/Gaya/Samastipur/Jahanabad
Date	October 5, 2020
Page No.	1

माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र मुश्किल वक्त में कम आमदनी वाली महिला कर्जदारों के लिए एक बड़ा सहारा

दो दशक से भी ज्यादा समय से माइक्रोफाइनेंस उद्योग कम आमदनी वाली और वंचित समूहों की महिलाओं की आर्थिक आजादी पाने में मदद कर रहा है। इससे महिलाएं सही वित्तीय निर्णय लेने के लिए सशक्ता होती हैं। भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर एनबीएफसी-एमएफआईए बैंक, स्मॉइल फाइनेंस बैंक या केवल एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं द्वारा 30 जून 2020 तक 5.80 करोड़ से ज्यादा ग्राहकों को सेवाएं दे रहा है। खासकर कोविड-19 के इस अभूतपूर्व समय में भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर में निश्चित रूप से बदलाव हो रहा है।

Publication	Dainik Aaj
Edition	Patna/Gaya/Samastipur/Jahanabad
Date	October 9, 2020
Page No.	3

मुश्किल वक्त में कम आमदनी वाली महिला कर्जदारों के लिए सहारा

पटना (आससे)। दो दशक से भी ज्यादा समय से माइक्रोफाइनैस उद्योग कम आमदनी वाली और वंचित समूहों की महिलाओं की आर्थिक आजादी पाने के मदद कर रहा है। इससे महिलाएँ सही वित्तीय निर्णय लेने के लिए सशक्त होती हैं।

भारतीय माइक्रोफाइनैस सेक्टर एनबीएफसी, बैंक, स्मॉल फाइनैस बैंक या केवल एनबीएफसी समेत विभिन्न संस्थाओं द्वारा ३० जून २०२० तक ५.८० करोड़ से ज्यादा ग्राहकों को सेवा दे रहा है।

खासकर कोविड-१९ के इस अभूतपूर्व समय में भारतीय माइक्रोफाइनैस सेक्टर में निश्चित रूप से बदलाव हो रहा है। नवंबर २०१६

की नोटबंदी हो या फिर २०२० में पूरी दुनिया पर छाई वैश्विक महामारी माइक्रोफाइनैस उद्योग वित्तीय समावेश में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

माइक्रोफाइनैस क्षेत्र से जो उधार मिलता है, वह जरूरतमंद महिलाओं को पैसा उपलब्ध कराने का औपचारिक जरिया है, यह न केवल कोलेटरल ढंग से निःशुल्क है बल्कि पूरी तरह से आरबीआई के निरीक्षण में है। इसमें जो ब्याज लगता है वह भी बैलेंस कम होने के आधार पर मिलता है। यह क्षेत्र अब नगद रहित बनने के लिए प्रयासरत है और इसके लिए यह तेजी से डिजिटल तकनीक अपना रहा है।

Publication	Nav Bihar
Edition	Gaya/Samastipur/Jahanabad
Date	October 9, 2020
Page No.	3

माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र में कम आमदनी वाली महिला कर्जदारों के लिए एक बड़ा सहारा

पटना। दो दशक से भी ज्यादा समय से माइक्रोफाइनेंस उद्योग कम आमदनी वाली और वंचित समूहों की महिलाओं की आर्थिक आजादी पाने में मदद कर रहा है। इससे महिलाएं सही वित्तीय निर्णय लेने के लिए सशक्त होती हैं।

भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर एनबीएफसी-एमएफआई, बैंक, स्मॉल फाइनेंस बैंक या केवल एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं द्वारा 30 जून 2020 तक 5.80 करोड़ से ज्यादा ग्राहकों को सेवाएं दे रहा है। खासकर कोविड-19 के इस अभूतपूर्व समय में भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर में निश्चित रूप से बदलाव हो रहा है।

नवंबर 2016 की नोटबंदी हो या फिर 2020 में पूरी दुनिया पर छाई वैश्विक महामारी माइक्रोफाइनेंस उद्योग वित्तीय समावेशन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। वर्तमान स्थिति में जहां ऋण का

वितरण आर्थिक गतिविधियों के कम हो जाने की वजह से अपेक्षाकृत कम हो गया है। लेकिन इस बात की पूरी संभावना है कि एक बार फिर से मांग में वृद्धि होगी, और माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र वंचित महिला कर्जदारों की सेवा करना जारी रखेगा। इससे उन्हें आर्थिक के साथ ही भावनात्मक रूप से भी जोरदार वापसी करने में मदद मिलेगी।

माइक्रोफाइनेंस लोन अल्प कालिक लोन होते हैं। यह महाजनों से मिलने वाले लंबी अवधि वाले लोन के विपरीत होते हैं, जिनमें कोलेटरल के साथ ही 40 से 60 प्रतिशत के बीच ऊंचा ब्याज चुकाना पड़ता है। महिला उधारकर्ताओं के लिए एक महत्वपूर्ण बात यह भी है कि एमएफआईएन, आरबीआई द्वारा मान्यता प्राप्त एक स्व-नियामक संगठन है, जिसके पास ग्राहक शिकायत निवारण तंत्र है।

Karnataka

Publication	Hosadigantha
Edition	Mangalore
Date	October 10, 2020
Page No.	9

ಮಹಿಳಾ ಸಬಲೀಕರಣಕ್ಕೆ ಎಂಎಫ್‌ಐ ನೆರವು

ಮಂಗಳೂರು: ದೇಶದಲ್ಲಿ ಕಡಿಮೆ ಆದಾಯದ ಮಹಿಳೆಯರ ಸಬಲೀಕರಣಕ್ಕೆ ಗಣನೀಯ ಕೊಡುಗೆ ನೀಡುತ್ತಿರುವ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್ ಉದ್ಯಮ 5.8 ಕೋಟಿ ವಿಶಿಷ್ಟ ಗ್ರಾಹಕರಿಗೆ ಹಣಕಾಸು ನೆರವು ನೀಡಿದೆ. ಈ ಮೂಲಕ ದುರ್ಬಲ ವರ್ಗದ ಮಹಿಳೆಯರು ಹಣಕಾಸು ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯ, ಸಾಧಿಸಲು ಮತ್ತು ಸರಿಯಾದ ಹಣಕಾಸು ನಿರ್ಧಾರಕ್ಕೆ ಗೊಳ್ಳಲು ಅವರನ್ನು ಸಶಕ್ತರನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿದೆ. 2016ರ ನವೆಂಬರ್‌ನಲ್ಲಿ ಕೇಂದ್ರ ಸರ್ಕಾರ ಘೋಷಿಸಿದ ನೋಟು ಅಮಾನ್ಯ ನಿರ್ಧಾರದಿಂದ ಹಿಡಿದು, ಪ್ರಸ್ತುತ ದೇಶ ಎದುರಿಸುತ್ತಿರುವ ಕೋವಿಡ್-19 ಸಾಂಕ್ರಾಮಿಕದ ವರೆಗೆ ಗ್ರಾಮೀಣ ಜನತೆಯ ವಿತ್ತೀಯ ಸೇರ್ಪಡೆಗೆ ಈ ವಲಯ ಕೊಡುಗೆ ನೀಡಿದೆ. "ಯಾವುದೇ ಅಹವಾಲುಗಳು ಇದ್ದಲ್ಲಿ ಅದನ್ನು ಬಗೆಹರಿಸಲು ಗ್ರಾಹಕ ವ್ಯಾಜ್ಯ ಪರಿಹಾರ ವ್ಯವಸ್ಥೆಯನ್ನೂ ಎಂಎಫ್‌ಐಎನ್ ಹೊಂದಿದೆ ಎಂದು ಅಧ್ಯಕ್ಷೆ ದಿವ್ಯ ಜ್ಯೋತಿ ಪಟ್ಟಾಯಕ್ ತಿಳಿಸಿದ್ದಾರೆ. ದೂರುಗಳಿದ್ದಲ್ಲಿ ಉಚಿತ ಸಂಖ್ಯೆ 1800-102-1080ಕ್ಕೆ ಕರೆ ಮಾಡಬಹುದಾಗಿದೆ ಎಂದು ವಿವರಿಸಿದ್ದಾರೆ.

Publication	Vijay Karnataka
Edition	Mangalore
Date	October 10, 2020
Page No.	8

ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್ ಉದ್ಯಮ ನೆರವು

ಮಂಗಳೂರು: ದೇಶದಲ್ಲಿ ಕಡಿಮೆ ಆದಾಯದ ಮಹಿಳೆಯರ ಸಬಲೀಕರಣಕ್ಕೆ ಗಣನೀಯ ಕೊಡುಗೆ ನೀಡುತ್ತಿರುವ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್ ಉದ್ಯಮ 5.8 ಕೋಟಿ ವಿಶಿಷ್ಟ ಗ್ರಾಹಕರಿಗೆ ಹಣಕಾಸು ನೆರವು ನೀಡಿದೆ. ಈ ಮೂಲಕ ದುರ್ಬಲ ವರ್ಗದ ಮಹಿಳೆಯರು ಹಣಕಾಸು ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯ ಸಾಧಿಸಲು ಮತ್ತು ಸರಿಯಾದ ಹಣಕಾಸು ನಿರ್ಧಾರ ಕೈಗೊಳ್ಳಲು ಅವರನ್ನು ಸಶಕ್ತರನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿದೆ ಎಂದು ಪ್ರಕಟಣೆ ತಿಳಿಸಿದೆ.

Publication	Samyukta Karnataka
Edition	Mangalore
Date	October 9, 2020
Page No.	2

ಸಬಲೀಕರಣಕ್ಕೆ ಎಂಎಫ್‌ಐ

ಸಂ. ಕ. ಸಮಾಚಾರ, ಮಂಗಳೂರು

ದೇಶದಲ್ಲಿ ಕಡಿಮೆ ಆದಾಯದ ಮಹಿಳೆಯರ ಸಬಲೀಕರಣಕ್ಕೆ ಗಣನೀಯ ಕೊಡುಗೆ ನೀಡುತ್ತಿರುವ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್ ಉದ್ಯಮ 5.8 ಕೋಟಿ ವಿಶಿಷ್ಟ ಗ್ರಾಹಕರಿಗೆ ಹಣಕಾಸು ನೆರವು ನೀಡಿದೆ. ಈ ಮೂಲಕ ದುರ್ಬಲ ವರ್ಗದ ಮಹಿಳೆಯರು ಹಣಕಾಸು ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯ ಸಾಧಿಸಲು ಮತ್ತು ಸರಿಯಾದ ಹಣಕಾಸು ನಿರ್ಧಾರ ಕೈಗೊಳ್ಳಲು ಸಶಕ್ತರನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿದೆ.

2016ರ ನವೆಂಬರ್‌ನಲ್ಲಿ ಕೇಂದ್ರ ಸರ್ಕಾರ ಘೋಷಿಸಿದ ನೋಟು ಅಮಾನ್ಯ ನಿರ್ಧಾರದಿಂದ ಹಿಡಿದು, ಪ್ರಸ್ತುತ ದೇಶ ಎದುರಿಸುತ್ತಿರುವ ಕೋವಿಡ್-19 ಸಾಂಕ್ರಾಮಿಕದವರೆಗೆ ಗ್ರಾಮೀಣ ಜನತೆಯ ವಿತ್ತೀಯ ಸೇರ್ಪಡೆಗೆ ಈ ವಲಯ

ಕೊಡುಗೆ ನೀಡಿದೆ.

ಮಹಿಳೆಯರಿಗೆ ಔಪಚಾರಿಕ ಸಾಲಸೌಲಭ್ಯ ವಸ್ತುಯಾವುದೇ ಭದ್ರತೆ ಇಲ್ಲದೇ ನೀಡುವ ಜತೆಗೆ ಆರ್‌ಬಿಐ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಣೆಗೆ ಅನುಸಾರವಾಗಿ ಬಡ್ಡಿದರ ವಿಧಿಸಲಾಗುತ್ತಿದೆ. ಈ ವಲಯ ನಗದುರಹಿತವಾಗುವ ನಿಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ ಡಿಜಿಟಲ್ ತಂತ್ರಜ್ಞಾನವನ್ನು ಬಳಕೆ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿದೆ. ಯಾವುದೇ ಅಹವಾಲುಗಳಿದ್ದಲ್ಲಿ ಬಗೆಹರಿಸಲು ಗ್ರಾಹಕ ವ್ಯಾಜ್ಯ ಪರಿಹಾರ ವ್ಯವಸ್ಥೆಯನ್ನೂ ಎಂಎಫ್‌ಐಎನ್ ಹೊಂದಿದೆ ಎಂದು ಅಧ್ಯಕ್ಷರಾದ ದಿವ್ಯಜ್ಯೋತಿ ಪಟ್ಟಾಯಕ್ ತಿಳಿಸಿದ್ದಾರೆ. ದೂರುಗಳಿದ್ದಲ್ಲಿ ಉಚಿತ ಸಂಖ್ಯೆ 1800-102-1080ಕ್ಕೆ ಕರೆ ಮಾಡಬಹುದಾಗಿದೆ ಎಂದು ವಿವರಿಸಿದ್ದಾರೆ.

Publication	Sanjevani
Edition	Mangalore
Date	October 9, 2020
Page No.	4

ಮಹಿಳಾ ಸಬಲೀಕರಣಕ್ಕೆ ಎಂಎಫ್‌ಐ ನೆರವು

ಮಂಗಳೂರು,ಅ.9-ದೇಶದಲ್ಲಿ ಕಡಿಮೆ ಆದಾಯದ ಮಹಿಳೆಯರ ಸಬಲೀಕರಣಕ್ಕೆ ಗಣನೀಯ ಕೊಡುಗೆ ನೀಡುತ್ತಿರುವ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್ ಉದ್ಯಮ 5.8 ಕೋಟಿ ವಿಶಿಷ್ಟ ಗ್ರಾಹಕರಿಗೆ ಹಣಕಾಸು ನೆರವು ನೀಡಿದೆ. ಈ ಮೂಲಕ ದುರ್ಬಲ ವರ್ಗದ ಮಹಿಳೆಯರು ಹಣಕಾಸು ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯ ಸಾಧಿಸಲು ಮತ್ತು ಸರಿಯಾದ ಹಣಕಾಸು ನಿರ್ಧಾರ ಕೈಗೊಳ್ಳಲು ಅವರನ್ನು ಸಶಕ್ತರನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿದೆ.

2016ರ ನವೆಂಬರ್‌ನಲ್ಲಿ ಕೇಂದ್ರ ಸರ್ಕಾರ ಘೋಷಿಸಿದ ನೋಟು ಅಮಾನ್ಯ ನಿರ್ಧಾರದಿಂದ ಹಿಡಿದು, ಪ್ರಸ್ತುತ ದೇಶ ಎದುರಿಸುತ್ತಿರುವ ಕೋವಿಡ್-19 ಸಾಂಕ್ರಾಮಿಕದವರೆಗೆ ಗ್ರಾಮೀಣ ಜನತೆಯ ವಿತ್ತೀಯ ಸೇರ್ಪಡೆಗೆ ಈ ವಲಯ ಕೊಡುಗೆ ನೀಡಿದೆ. ಮಹಿಳೆಯರಿಗೆ ಔಪಚಾರಿಕ ಸಾಲಸೌಲಭ್ಯವನ್ನು ಯಾವುದೇ ಭದ್ರತೆ ಇಲ್ಲದೇ ನೀಡುವ ಜತೆಗೆ, ಆರ್‌ಬಿಐ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಣೆಗೆ ಅನುಸಾರವಾಗಿ ಬಡ್ಡಿದರ ವಿಧಿಸಲಾಗುತ್ತಿದೆ. ಈ ವಲಯ ನಗದುರಹಿತವಾಗುವ ನಿಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ ಡಿಜಿಟಲ್ ತಂತ್ರಜ್ಞಾನವನ್ನು ಬಳಕೆ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿದೆ. ಯಾವುದೇ ಅಹವಾಲುಗಳು ಇದ್ದಲ್ಲಿ ಅದನ್ನು ಬಗೆಹರಿಸಲು ಗ್ರಾಹಕ ವ್ಯಾಜ್ಯ ಪರಿಹಾರ ವ್ಯವಸ್ಥೆಯನ್ನೂ ಎಂಎಫ್‌ಐಎನ್ ಹೊಂದಿದೆ ಎಂದು ಅಧ್ಯಕ್ಷರಾದ ದಿವ್ಯಜ್ಯೋತಿ ಪಟ್ಟಾಯಕ್ ತಿಳಿಸಿದ್ದಾರೆ. ದೂರುಗಳಿದ್ದಲ್ಲಿ ಉಚಿತ ಸಂಖ್ಯೆ 1800-102-1080ಕ್ಕೆ ಕರೆ ಮಾಡಬಹುದಾಗಿದೆ ಎಂದು ವಿವರಿಸಿದ್ದಾರೆ.

Publication	Vishwavani
Edition	Mangalore
Date	October 9, 2020
Page No.	5



ಮಹಿಳಾ ಸಬಲೀಕರಣಕ್ಕೆ ಎಂಎಫ್‌ಐ ನೆರವು

ಮಂಗಳೂರು: ದೇಶದಲ್ಲಿ ಕಡಿಮೆ ಆದಾಯದ ಮಹಿಳೆಯರ ಸಬಲೀಕರಣಕ್ಕೆ ಗಣನೀಯ ಕೊಡುಗೆ ನೀಡುತ್ತಿರುವ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್ ಉದ್ಯಮ 5.8 ಕೋಟಿ ವಿಶಿಷ್ಟ ಗ್ರಾಹಕರಿಗೆ ಹಣಕಾಸು ನೆರವು ನೀಡಿದೆ. ಈ ಮೂಲಕ ದುರ್ಬಲ ವರ್ಗದ ಮಹಿಳೆಯರು ಹಣಕಾಸು ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯ ಸಾಧಿಸಲು ಮತ್ತು ಸರಿಯಾದ ಹಣಕಾಸು ನಿರ್ಧಾರ ಕೈಗೊಳ್ಳಲು ಅವರನ್ನು ಸಶಕ್ತರನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿದೆ. 2016ರ ನವೆಂಬರ್‌ನಲ್ಲಿ ಕೇಂದ್ರ ಸರ್ಕಾರ ಘೋಷಿಸಿದ ನೋಟು ಅಮಾನ್ಯ ನಿರ್ಧಾರದಿಂದ ಹಿಡಿದು, ಪ್ರಸ್ತುತ ದೇಶ ಎದುರಿಸುತ್ತಿರುವ ಕೋವಿಡ್-19 ಸಾಂಕ್ರಾಮಿಕದವರೆಗೆ ಗ್ರಾಮೀಣ ಜನತೆಯ ವಿತ್ತೀಯ ಸೇರ್ಪಡೆಗೆ ಈ ವಲಯ ಕೊಡುಗೆ ನೀಡಿದೆ. ಯಾವುದೇ ಅಹವಾಲುಗಳು ಇದ್ದಲ್ಲಿ ಅದನ್ನು ಬಗೆಹರಿಸಲು ಗ್ರಾಹಕ ವ್ಯಾಜ್ಯ ಪರಿಹಾರ ವ್ಯವಸ್ಥೆಯನ್ನೂ ಎಂಎಫ್‌ಐಎನ್ ಹೊಂದಿದೆ ಎಂದು ಅಧ್ಯಕ್ಷ ದಿವ್ಯಜ್ಯೋತಿ ಪಟ್ಟಾಯಕ್ ತಿಳಿಸಿದ್ದಾರೆ. ದೂರುಗಳಿದ್ದಲ್ಲಿ ಉಚಿತ ಸಂಖ್ಯೆ 1800-102-1080ಕ್ಕೆ ಕರೆ ಮಾಡಬಹುದಾಗಿದೆ ಎಂದು ವಿವರಿಸಿದ್ದಾರೆ.

Publication	Indu Sanje
Edition	Bangalore
Date	October 15, 2020
Page No.	2

ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್ ವಲಯ: ಕಡಿಮೆ ಆದಾಯದ ಮಹಿಳಾ ಸಾಲಗಾರರಿಗೆ ಅನಿಶ್ಚಿತ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ನೆರವು

ಮಂಗಳೂರು: ಇದೀಗ ಎರಡು ದಶಕಗಳಿಂದ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್ ಉದ್ಯಮ ಕಡಿಮೆ ಆದಾಯದ ಮತ್ತು ಸಾಲಸೌಲಭ್ಯ ದೊರಕದ ಮಹಿಳೆಯರಿಗೆ ನೆರವಾಗುತ್ತಿದ್ದು, ಅವರು ಹಣಕಾಸು ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯ ಸಾಧಿಸಲು ಮತ್ತು ಸೂಕ್ತ ಹಣಕಾಸು ನಿರ್ಧಾರಗಳನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲು ಅವರನ್ನು ಸಶಕ್ತರನ್ನಾಗಿ ಮಾಡುತ್ತಾ ಬಂದಿದೆ. ದೇಶದಲ್ಲಿ ಕಡಿಮೆ ಆದಾಯದ ಮಹಿಳೆಯರ ಸಬಲೀಕರಣಕ್ಕೆ ಗಣನೀಯ ಕೊಡುಗೆ ನೀಡುತ್ತಿರುವ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್ ಉದ್ಯಮ 5.8 ಕೋಟಿ ವಿಶಿಷ್ಟ ಗ್ರಾಹಕರಿಗೆ ಹಣಕಾಸು ನೆರವು ನೀಡಿದೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ಎನ್‌ಬಿಎಫ್‌ಸಿ-ಎಂಎಫ್‌ಐಗಳು, ಬ್ಯಾಂಕ್‌ಗಳು, ಸಣ್ಣ ಹಣಕಾಸು ಬ್ಯಾಂಕ್‌ಗಳು ಅಥವಾ ಏಕೈಕ ಎನ್‌ಬಿಎಫ್‌ಸಿಗಳು ಸೇರಿದ್ದು, ಕೋವಿಡ್-19ನ ಸಂಕಷ್ಟದ ಪರಿಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿ ವಿಶೇಷವಾಗಿ ನಿಸ್ಸಂದೇಹವಾಗಿ ಬದಲಾಗುತ್ತಿದೆ. 2016ರ ನವೆಂಬರ್‌ನಲ್ಲಿ ಕೇಂದ್ರ ಸರ್ಕಾರ ಘೋಷಿಸಿದ ನೋಟು ಅಮಾನ್ಯ ನಿರ್ಧಾರದಿಂದ ಹಿಡಿದು, ಪ್ರಸ್ತುತ ದೇಶ ಎದುರಿಸುತ್ತಿರುವ ಕೋವಿಡ್-19 ಸಾಂಕ್ರಾಮಿಕದವರೆಗೆ ಗ್ರಾಮೀಣ ಜನತೆಯ ವಿತ್ತೀಯ ಸೇರ್ಪಡೆಗೆ ಈ ವಲಯ ಕೊಡುಗೆ ನೀಡಿದೆ.

ಮಹಿಳೆಯರಿಗೆ ಔಪಚಾರಿಕ ಸಾಲಸೌಲಭ್ಯವನ್ನು ಯಾವುದೇ ಭದ್ರತೆ ಇಲ್ಲದೇ ನಿಡುವ ಜತೆಗೆ, ಆರ್ಥಿಕ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಣೆಗೆ ಅನುಸಾರವಾಗಿ ಬಡ್ಡಿದರ ವಿಧಿಸಲಾಗುತ್ತಿದೆ. ಈ ವಲಯ ನಗದುರಹಿತವಾಗುವ ನಿಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ ಡಿಜಿಟಲ್ ತಂತ್ರಜ್ಞಾನವನ್ನು ಬಳಕೆ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿದೆ. ಇದಕ್ಕೆ ತದ್ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ ಅನೌಪಚಾರಿಕ ವಲಯದಲ್ಲಿ ಲೇವಾದೇವಿದಾರರಿಂದ ಸಾಲ ಪಡೆದಲ್ಲಿ, ಮಹಿಳಾ ಸಾಲಗಾರರು ಜೀವನವಿಡೀ ಬಡ್ಡಿಯನ್ನು ಪಾವತಿಸುತ್ತಲೇ ಇರಬೇಕಾದ ಸ್ಥಿತಿ ಇದೆ.

ಎಂಎಫ್‌ಐಗಳಿಂದ ಮಹಿಳೆಗೆ ದೊರಕುವ ಸಾಲದ ಒಂದು ಪ್ರಮುಖ ಆಯಾಮವೆಂದರೆ ಯಾವುದೇ ಅಪವಾಲುಗಳು ಇದ್ದಲ್ಲಿ ಅದನ್ನು ಬಗೆಹರಿಸಲು ಗ್ರಾಹಕ ವ್ಯಾಜ್ಯ ಪರಿಹಾರ ವ್ಯವಸ್ಥೆಯನ್ನೂ ಎಂಎಫ್‌ಐಎನ್ ಹೊಂದಿದೆ. ದೂರುಗಳಿದ್ದಲ್ಲಿ ಉಚಿತ ಸಂಖ್ಯೆ 1800-102-1080ಕ್ಕೆ ಕರೆ ಮಾಡಬಹುದಾಗಿದೆ. ಎಂಎಫ್‌ಐ ಸಿಜಿಆರೆಂ 12 ಭಾಷೆಗಳಲ್ಲಿ ಲಭ್ಯವಿದ್ದು, ಯಾವುದೇ ರಾಜ್ಯಗಳ ಮಹಿಳಾ ಸಾಲಗಾರರು, ದೇಶದ ಯಾವ ಮೂಲೆಯಿಂದಾದರೂ ಟೋಲ್‌ಫ್ರೀ ಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಬೆಳಿಗ್ಗೆ 9.30ರಿಂದ ಸಂಜೆ 5.30ರ ವರೆಗೆ ವಾರದ ದಿಗಳಲ್ಲಿ ಕರೆ ಮಾಡಬಹುದಾಗಿದೆ. ಈ ವಿಶಿಷ್ಟ ಸೌಲಭ್ಯವು ಅನೌಪಚಾರಿಕ ಮೂಲದ ಸಾಲಗಳಲ್ಲಿ

Publication	Sanje Prabha
Edition	Bangalore
Date	October 15, 2020
Page No.	4

ಕಡಿಮೆ ಆದಾಯದ ಮಹಿಳಾ ಸಾಲಗಾರರಿಗೆ ಅನಿಶ್ಚಿತ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ನೆರವು

ಮಂಗಳೂರು: ಇದೀಗ ಎರಡು ದಶಕಗಳಿಂದ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್ ಉದ್ಯಮ ಕಡಿಮೆ ಆದಾಯದ ಮತ್ತು ಸಾಲಸೌಲಭ್ಯ ದೊರಕದ ಮಹಿಳೆಯರಿಗೆ ನೆರವಾಗುತ್ತಿದ್ದು, ಅವರು ಹಣಕಾಸು ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯ ಸಾಧಿಸಲು ಮತ್ತು ಸೂಕ್ತ ಹಣಕಾಸು ನಿರ್ಧಾರಗಳನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲು ಅವರನ್ನು ಸಶಕ್ತರನ್ನಾಗಿ ಮಾಡುತ್ತಾ ಬಂದಿದೆ.

ದೇಶದಲ್ಲಿ ಕಡಿಮೆ ಆದಾಯದ ಮಹಿಳೆಯರ ಸಬಲೀಕರಣಕ್ಕೆ ಗಣನೀಯ ಕೊಡುಗೆ ನೀಡುತ್ತಿರುವ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್ ಉದ್ಯಮ 5.8 ಕೋಟಿ ವಿಶಿಷ್ಟ ಗ್ರಾಹಕರಿಗೆ ಹಣಕಾಸು ನೆರವು ನೀಡಿದೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ಎನ್‌ಬಿಎಫ್‌ಸಿ-ಎಂಎಫ್‌ಐಗಳು, ಬ್ಯಾಂಕ್‌ಗಳು, ಸಣ್ಣ ಹಣಕಾಸು ಬ್ಯಾಂಕ್‌ಗಳು ಅಥವಾ ಏಕೈಕ ಎನ್‌ಬಿಎಫ್‌ಸಿಗಳು ಸೇರಿದ್ದು, ಕೋವಿಡ್-19ನ ಸಂಕಷ್ಟದ ಪರಿಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿ ವಿಶೇಷವಾಗಿ ನಿಸ್ಸಂದೇಹವಾಗಿ ಬದಲಾಗುತ್ತಿದೆ.

2016ರ ನವೆಂಬರ್‌ನಲ್ಲಿ ಕೇಂದ್ರ ಸರ್ಕಾರ ಘೋಷಿಸಿದ ನೋಟು ಅಮಾನ್ಯ ನಿರ್ಧಾರದಿಂದ ಹಿಡಿದು, ಪ್ರಸ್ತುತ ದೇಶ ಎದುರಿಸುತ್ತಿರುವ ಕೋವಿಡ್-19 ಸಾಂಕ್ರಾಮಿಕದವರೆಗೆ ಗ್ರಾಮೀಣ ಜನತೆಯ ವಿತ್ತೀಯ ಸೇರ್ಪಡೆಗೆ ಈ ವಲಯ ಕೊಡುಗೆ ನೀಡಿದೆ.

ಪ್ರಸ್ತುತ ಸನ್ನಿವೇಶದಲ್ಲಿ ಆರ್ಥಿಕ ಚಟುವಟಿಕೆ ಕುಂಠಿತಗೊಂಡಿರುವುದರಿಂದ ಸಾಲ ವಿತರಣೆ ಕಡಿಮೆಯಾಗಿದ್ದು, ಹಲವು ಮಂದಿ ಬೇಡಿಕೆ ಹೆಚ್ಚುವ ನಿರೀಕ್ಷೆಯಲ್ಲಿದ್ದಾರೆ. ಈ ಹಂತದಲ್ಲಿ ಕೂಡಾ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್‌ಗಳು ಮಹಿಳಾ ಸಾಲಗಾರರಿಗೆ ಸೇವೆ ಒದಗಿಸುತ್ತಾ ಬಂದಿದ್ದು, ಹಣಕಾಸು ವಿಚಾರದಲ್ಲಿ ಮತ್ತು ಭಾವನಾತ್ಮಕವಾಗಿ ಕೂಡಾ ಪುಟದೇಳಲು ಅವರಿಗೆ ನೆರವಾಗುತ್ತಿದೆ.

ಮಹಿಳೆಯರಿಗೆ ಔಪಚಾರಿಕ ಸಾಲಸೌಲಭ್ಯವನ್ನು ಯಾವುದೇ ಭದ್ರತೆ ಇಲ್ಲದೇ ನೀಡುವ ಜತೆಗೆ,

ಅರ್ಜಿ ಒಪ್ಪಂದದ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಣೆಗೆ ಅನುಸಾರವಾಗಿ ಬಡ್ಡಿದರ ವಿಧಿಸಲಾಗುತ್ತಿದೆ. ಈ ವಲಯ ನಗದುರಹಿತವಾಗುವ ನಿಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ ಡಿಜಿಟಲ್ ತಂತ್ರಜ್ಞಾನವನ್ನು ಬಳಕೆ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿದೆ. ಇದಕ್ಕೆ ತದ್ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ ಅನೌಪಚಾರಿಕ ವಲಯದಲ್ಲಿ ಲೇವಾದೇವಿದಾರರಿಂದ ಸಾಲ ಪಡೆದಲ್ಲಿ, ಮಹಿಳಾ ಸಾಲಗಾರರು ಜೀವನವಿಡೀ ಬಡ್ಡಿಯನ್ನು ಪಾವತಿಸುತ್ತಲೇ ಇರಬೇಕಾದ ಸ್ಥಿತಿ ಇದೆ.

ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್ ಸಾಲಗಳು ಅಲ್ಪಾವಧಿ ಸಾಲಗಳಾಗಿದ್ದು, ಲೇವಾದೇವಿದಾರರು ನೀಡುವ ಸಾಲ ಧೀರ್ಘಾವಧಿಯದ್ದಾಗಿದ್ದು, ಇದಕ್ಕೆ ಅಡಮಾನ ಇಡಬೇಕಾಗುವುದು ಮಾತ್ರವಲ್ಲದೇ, ಬಡ್ಡಿದರ ಕೂಡಾ ಶೇಕಡ 40ರಿಂದ 60ರ ನಡುವೆ ಇರುತ್ತದೆ.

ಎಂಎಫ್‌ಐಗಳಿಂದ ಮಹಿಳೆಗೆ ದೊರಕುವ ಸಾಲದ ಒಂದು ಪ್ರಮುಖ ಆಯಾಮವೆಂದರೆ ಯಾವುದೇ ಅಹವಾಲುಗಳು ಇದ್ದಲ್ಲಿ ಅದನ್ನು ಬಗೆಹರಿಸಲು ಗ್ರಾಹಕ ವ್ಯಾಜ್ಯ ಪರಿಹಾರ ವ್ಯವಸ್ಥೆಯನ್ನೂ ಎಂಎಫ್‌ಐಎನ್ ಹೊಂದಿದೆ. ದೂರುಗಳಿದ್ದಲ್ಲಿ ಉಚಿತ ಸಂಖ್ಯೆ 1800-102-1080ಕ್ಕೆ ಕರೆ ಮಾಡಬಹುದಾಗಿದೆ.

ಎಂಎಫ್‌ಐ ಸಿಜಿಆರೆಂ 12 ಭಾಷೆಗಳಲ್ಲಿ ಲಭ್ಯವಿದ್ದು, ಯಾವುದೇ ರಾಜ್ಯಗಳ ಮಹಿಳಾ ಸಾಲಗಾರರು, ದೇಶದ ಯಾವ ಮೂಲೆಯಿಂದಾದರೂ ಟೋಲ್‌ಫ್ರೀ ಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಬೆಳಿಗ್ಗೆ 9.30ರಿಂದ ಸಂಜೆ 5.30ರ ವರೆಗೆ ವಾರದ ದಿಗಳಲ್ಲಿ ಕರೆ ಮಾಡಬಹುದಾಗಿದೆ. ಈ ವಿಶಿಷ್ಟ ಸೌಲಭ್ಯವು ಅನೌಪಚಾರಿಕ ಮೂಲದ ಸಾಲಗಳಲ್ಲಿ ಮಹಿಳಾ ಸಾಲಗಾರರಿಗೆ ಲಭ್ಯವಿರುವುದಿಲ್ಲ. ವಾಸ್ತವವಾಗಿ ಸಾಲ ಪಡೆದವರು ಇದನ್ನು ನಿರ್ವಹಿಸುವ ಅನೌಪಚಾರಿಕ ಸಾಲದಾರರ ಮರ್ಜಿಯಲ್ಲಿ ಇರುತ್ತಾರೆ.

Kolkata

Publication	Arthiklipi
Edition	Kolkata
Date	October 15, 2020
Page No.	9

মাইক্রোফিন্যান্স ক্ষেত্রে: অনিশ্চিত সময়ে কম আয়ের মহিলা ঋণগ্রহীতা'র ক্ষেত্র একটি বড় সহায়তা

স্টাফ রিপোর্টার : কম আয়ের এবং সহায়-সঞ্চালন গোষ্ঠীর মহিলাদের আর্থিক দিক দিয়ে স্বাবলম্বী ও সমৃদ্ধ করার লক্ষ্যে ও অর্থিক বিক্রেতা তাদের সঠিক সিদ্ধান্ত গ্রহণে সক্ষম করে তোলার লক্ষ্যে মাইক্রোফিন্যান্স ইন্ডাস্ট্রিজ গত দুই দশকেরও বেশি সময় ধরে মহিলাদের সাহায্য করে আসছে। ৩০ জুন ২০২০-এর হিসেব অনুসারে ৫.৮০ কোটিরও বেশি গ্রাহকরা এখন এনবিএফসি-এমএফআইএস, ব্যাঙ্ক, সঞ্চালনা ব্যাঙ্ক অথবা এককভাবে এনবিএফসিগুলির কাছ থেকে পরিষেবা পেয়ে আসছে। এই অবস্থার ভারতের মাইক্রোফিন্যান্স ক্ষেত্র নিঃসন্দেহে পরিবর্তনের মাধ্যমে দিয়ে চলেছে। বিশেষ করে এই নজিরবিহীন কোভিড-১৯ পরিস্থিতিতে।

২০১৬-র ডিমনিটাইজেশন এবং বর্তমানে, ২০২০-তে সারা বিশ্বে ছড়িয়ে পড়া মহামারী পরিস্থিতিতে মাইক্রোফিন্যান্স ইন্ডাস্ট্রি আর্থিক অন্তর্ভুক্তির বিষয়ে গুরুত্বপূর্ণ ভূমিকা পালন করে চলেছে।

বর্তমান পরিস্থিতিতে, ভেঙে পড়া অর্থনৈতিক কারণে যেখানে ঋণ বণ্টনের বিষয়টি তুলনামূলকভাবে অনেক কমে গিয়েছে, পরিস্থিতিতে প্রত্যক্ষ করে বেশিরভাগ মানুষ যেখানে মনে করছে যে চাহিদাও অনেক কমে গিয়েছে, সেই চাহিদা আবার বাড়বে এবং মাইক্রোফিন্যান্স আর্থিকভাবে ও সেইসঙ্গে মানসিকভাবে পাশে থাকার জন্য মহিলা ঋণগ্রহীতাদের ঋণদানের পরিষেবাকে চালিয়ে যাবে।

মাইক্রোফিন্যান্স ঋণদান হল মহিলা ঋণগ্রহীতাদের ঋণদানের একটি প্রথাগত ব্যবস্থা, যেটি কেবলমাত্র যে জামনতমুক্ত, তা-ই নয়, এটি রিডিউসিং ব্যালেন্সের ভিত্তিতে সুদের চার্জ সহ সমস্ত কিছুই সম্পূর্ণভাবে আরবিআই আরা নিয়ন্ত্রিত হয়। এই ক্ষেত্রটি

এখন নগদহীন হওয়ার চেষ্টা করছে এবং অত্যন্ত দ্রুত ডিজিটাল টেকনোলজিকে আয়ত্ত করার দিকে আগ্রহের মধ্যে। এই ধরনের ঋণদানের বিপরীত দিকের ছবিটি হল প্রথার বাইরে গিয়ে অনেক ক্ষেত্রে মহিলা ঋণগ্রহীতাদের টাকা খরচ করতে দেখা যায়। সেখানে মহিলারা শুধুমাত্র সুদটুকুই পরিশোধ করতে পারেন এবং আসল ঋণের পরিমাণটা সারা জীবনের জন্য দারবন্দ থেকে যায়। মাইক্রোফিন্যান্স ঋণ হল কম-মেরার ঋণ, অন্যদিকে এই প্রথার বাইরের ঋণ হল দীর্ঘমেয়াদের এবং সেখানে জামানতের ব্যবস্থাও থাকে ও সেইসঙ্গে সুদের হারও অনেক বেশি, ৪০ থেকে ৬০ শতাংশ পর্যন্ত।

মহিলা ঋণগ্রহীতাদের ক্ষেত্রে একটি গুরুত্বপূর্ণ বিষয় হল, আরবিআই স্বীকৃত স্ব-নিয়ন্ত্রিত সংস্থা, এমএফআইএন, যেখানে রয়েছে কাস্টমার প্রিভেন্স রিড্রেশাল মেকানিজম (সিজিআরএম) বা গ্রাহক অভিযোগের প্রতিকার ব্যবস্থা। এখানে এর সদস্য সংস্থার মহিলা ঋণগ্রহীতারা তাঁদের বিভিন্ন অভিযোগ জানতে পারেন ১৮০০১০২১০৮০-এই টোল ফ্রি নম্বরের মাধ্যমে। এমএফআইএন সিজিআরএম পাওয়া যাচ্ছে ১২টি ভাষায়। এখানে দেশের যে কোনও রাজ্যের, যে কোনও গ্রামের মহিলা গ্রাহকরা সপ্তাহের কাজের দিন সকাল ৯টা ৩০ মিনিট থেকে বিকেল ৫টা ৩০ মিনিটের মধ্যে টোল ফ্রি নম্বরে ফোন করতে পারেন। এই দারুণ সুবিধাটি ওই সমস্ত মহিলারা পাবেন না, যারা প্রথার বাইরে থাকা কোনও উৎসের কাছ থেকে ঋণ নিয়েছেন। প্রকৃতপক্ষে তাঁদের ওই সমস্ত অনিয়ন্ত্রিত ও প্রথার বাইরে থাকা ঋণদানকারীদের কাছে করণার পাত্রী হয়েই থাকতে হবে।

Publication	Morning India
Edition	Kolkata
Date	October 15, 2020
Page No.	3

Microfinance Sector: support for low-income women borrowers in uncertain times

Kolkata: It has now been over two decades that the Microfinance industry has been helping women from the low income and under-served group, achieve financial independence, empowering them to take the right financial decisions.

With over 5.80 Crore unique customers as on June 30, 2020, being now served by different entities including the NBFC-MFIs, Banks, the Small Finance Banks or the stand-alone NBFCs, the Indian microfinance sector is undoubtedly changing, especially in these unprecedented Covid-19 times.

Be it the November 2016 Demonetisation and now the 2020 Global Pandemic engulfing the world, the microfinance industry has been playing a stellar role in financial inclusion.

In the current situation, where the disbursal of loans has been relatively lower

owing to subdued economic activity, most feel there will be a pent-up demand that will be witnessed, and microfinance would continue to serve the women borrowers, giving a helping hand to bounce back, financially, as well as emotionally.

Microfinance lending is a formal form of financing for women borrowers, which is not only collateral free, but also there is complete Regulatory oversight by RBI, including on the interest charged which is on a reducing balance basis. The sector is now striving to become cashless and rapidly adopting digital technology to achieve this. In contrast is the informal Financing where on the loans availed from money lenders, the women borrower keeps on paying interest only and remains obligated for life.

Microfinance loans are shorter-term loans, unlike

from money lenders which are of far longer duration, with collateral and levied with high interest ranging between 40 to 60 per cent.

One important aspect for women borrowers is MFIN, an RBI-recognised self-regulatory organisation that has a Customer Grievance Redressal Mechanism (CGRM) in place where women borrowers of its Member organisations can place their grievance on its toll-free number 1800 102 1080. MFIN CGRM is available in 12 languages, and women customers from any state, anywhere in the country can call on the toll-free number between 9:30 am to 5:30 pm on weekdays. This unique facility is not available for women borrowers if they take a loan from informal sources; in fact, they are at the mercy of those who operate this unregulated and informal lending.

Publication	The Echo of India
Edition	Kolkata
Date	October 15, 2020
Page No.	8

MFI: Support for low-income women borrowers

EOI CORRESPONDENT

KOLKATA, OCT 14/--It has now been over two decades that the Microfinance industry has been helping women from the low income and under-served group, achieve financial independence, empowering them to take the right financial decisions, sources said. With over 5.80 crore unique customers as on June 30, 2020, being now served by different entities including the NBFC-MFIs, Banks, the Small Finance Banks or the stand-alone NBFCs, the Indian microfinance sector is undoubtedly changing, especially in these unprecedented Covid-19 times. MFIN, an RBI-recognised self-regulatory organisation, sources also elaborated.

Microfinance lending is a formal form of financing for women borrowers, which

is not only collateral free, but also there is complete Regulatory oversight by RBI, including on the interest charged which is on a reducing balance basis. The sector is now striving to become cashless and rapidly adopting digital technology to achieve this. Microfinance loans are shorter-term loans, sources said.

One important aspect for women borrowers is MFIN, an RBI-recognised self-regulatory organisation that has a Customer Grievance Redressal Mechanism (CGRM) in place where women borrowers of its Member organisations can place their grievance on its toll-free number 1800 102 1080. MFIN CGRM is available in 12 languages, and women customers from any state, anywhere in the country can call on the toll-free number between 9:30 am to 5:30 pm on weekdays, sources added.

Publication	Dainik Statesman
Edition	Kolkata
Date	October 16, 2020
Page No.	2

মহিলা সহায়তা প্রকল্প

নিজস্ব প্রতিনিধি— স্বনির্ভর প্রকল্পে মহিলাদের সাহায্যের জন্য এমএফআইএন বিশেষ উদ্যোগ নিয়েছে। মহিলাদের অসুবিধা দূর করার জন্য সিজিআরএম'র ব্যবস্থাও রয়েছে।

Publication	Dainik Vishwamitra
Edition	Kolkata
Date	October 16, 2020
Page No.	5

कम आमदनी वाली महिला कर्जदारों के लिए एक बड़ा सहारा

कोलकाता, 15 अक्टूबर (निप्र)। माइक्रोफाइनेंस उद्योग कम आमदनी वाली और वंचित समूहों की महिलाओं की आर्थिक आजादी पाने में मदद कर रहा है। इससे महिलाएं सही वित्तीय निर्णय लेने के लिए सशक्त होती हैं। भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर एनबीएफसी-एमएफआई, बैंक, स्मॉल फाइनेंस बैंक या केवल एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं द्वारा 30 जून 2020 तक 5.80 करोड़ से ज्यादा ग्राहकों को सेवाएं दे रहा है। एमएफआईएन, आरबीआई द्वारा मान्यता प्राप्त एक स्व-नियामक संगठन है, जिसके पास ग्राहक शिकायत निवारण तंत्र (सीजीआरएम) है। माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र से जो उधार मिलता है, वह जरूरतमंद महिलाओं को पैसा उपलब्ध कराने का औपचारिक जरिया है। यह न केवल कोलेटरल ढंग से निःशुल्क है, बल्कि पूरी तरह से आरबीआई के निरीक्षण में है। इसमें जो ब्याज लगता है, वह भी बैलेंस कम होने के आधार पर लगता है। यह क्षेत्र अब नकद रहित बनने के लिए प्रयासरत है और इसके लिए यह तेजी से डिजिटल तकनीक अपना रहा है। माइक्रोफाइनेंस लोन अल्पकालिक लोन होते हैं।

Publication	Samay Paribartan
Edition	Kolkata
Date	October 17, 2020
Page No.	6

Microfinance Sector: a great support for low-income women borrowers in uncertain times

SP BUREAU

Mumbai, Oct 16: It has now been over two decades that the Micro-finance industry has been helping women from the low income and under-served group, achieve financial independence, empowering them to take the right financial decisions. With over 5.80 crore unique customers as on June 30, 2020, being now served by different entities including the NBFC-MFIs, Banks, the Small Finance Banks or the stand-alone NBFCs, the Indian microfinance sector is undoubtedly changing, especially in these unprecedented Covid-19 times.

Be it the November 2016 Demonetisation and now the 2020 Global Pandemic engulfing the world, the microfinance industry has been playing a stellar role in financial inclusion. In the current situation, where the disbursal of loans has been relatively lower owing to subdued economic activity, most feel there will be a pent-up demand that will be witnessed, and microfinance



would continue to serve the women borrowers, giving a helping hand to bounce back, financially, as well as emotionally.

Microfinance lending is a formal form of financing for women borrowers, which is not only collateral

free, but also there is complete regulatory oversight by RBI, including on the interest charged which is on a reducing balance basis. The sector is now striving to become cashless and rapidly adopting digital technology to achieve this. In contrast is the in-

formal financing where on the loans availed from money lenders, the women borrower keeps on paying interest only and remains obligated for life.

Microfinance loans are shorter-term loans, unlike from money lenders which are of far longer duration, with collateral and levied with high interest ranging between 40 to 60 per cent. One important aspect for women borrowers is MFIN, an RBI-recognised self-regulatory organisation that has a Customer Grievance Redressal Mechanism (CGRM) in place where women borrowers of its member organisations can place their grievance on its toll-free number 1800 102 1080. MFIN CGRM is available in 12 languages, and women customers from any state, anywhere in the country can call on the toll-free number between 9:30 am to 5:30 pm on weekdays. This unique facility is not available for women borrowers if they take a loan from informal sources; in fact, they are at the mercy of those who operate this unregulated and informal lending.

Publication	Sambad Prabha
Edition	Kolkata
Date	October 17, 2020
Page No.	1 & 2

অনিশ্চিত সময়ে কম আয়ের মহিলা ঋণগ্রহীতা'র ক্ষেত্রে একটি বড় সহায়তা, মাইক্রোফিনান্স

নিজস্ব ব্যবসাসহায়তা কম আয়ের এবং সরাসর স্বল্পমূল্যে প্রাপ্যের মহিলাদের আর্থিক দিক দিয়ে অর্থনৈতিক ও সমৃদ্ধ করার লক্ষ্যে ও আর্থিক বিষয়ে তাদের সঠিক সিদ্ধান্ত গ্রহণে সহায়তা করে রোলার লক্ষ্যে মাইক্রোফিনান্স ইনস্টিটিউট দুই নশকেরও বেশি সময় ধরে মহিলাদের সহায়তা করে আসছে।

৩০ জুন ২০২০ এর হিসেব অনুসারে ২.৮৭ কোটিও বেশি প্রাপ্যের এখন এমআইএফসি-এর গ্রাহকসহীএস, ব্যাংক, শ্রম ঋণাঙ্গ বাস অথবা এককভাবে অনিবার্যসিওসির কাছ থেকে পরিষেবা পেয়ে আসছে। এই অবস্থায় ভারতের মাইক্রোফিনান্স ক্ষেত্র নিম্নোক্ত পরিবর্তনের মধ্যে দিয়ে চলেছে, বিশেষ করে এই নিজস্বায়িত্ব কেবল ১৯ পরিষ্কৃতিতে। ২০২০র ডিসেম্বরেই জেশন এবং বর্তমানে, ২০২০তে সারা বিশ্বে ছড়িয়ে পড়া মহামারি পরিষ্কৃতিকে মাইক্রোফিনান্স ইনস্টিটিউট আর্থিক অস্ত্রগুলির নিম্নে



ওকল্পপূর্ণ ভূমিকা পালন করে চলেছে। বর্তমান পরিস্থিতিতে, কেও পড়া অর্থনৈতিক কারণে যেখানে ঋণ গ্রহণের নিয়মটি তুলনামূলকভাবে অনেক কমে গিয়েছে, তখনে পরিষ্কৃতিকে প্রত্যক্ষ করে বেশিরভাগ মানুষ যেখানে মনে করছে, যে চাহিদাও অনেক কমে গিয়েছে, সেই চাহিদা অর্থের পাড়লে এবং মাইক্রোফিনান্স সংস্থাগুলি আর্থিকভাবে ও বৈদ্যসে মনসিকভাবে

পাশে থাকলে অন্য মহিলা ঋণগ্রহীতাদের ঋণপলন পরিষেবাকে চালিয়ে যাবে। মাইক্রোফিনান্স ঋণপলন হল মহিলা ঋণগ্রহীতাদের ঋণপলনের একটি প্রণালী যা বাস, মোটর কেবলমাত্র যে আমদানিকৃত, তাই না, এটি বিভিন্ন সিস্টেম বাসেলের বিভিন্ন সুদের চার্জ সহ সমস্ত কিছুই সম্পূর্ণভাবে আরবিআই হলো নিশ্চিত হয়ে থাকে। এই ক্ষেত্রে এখন নগরায়ন করার চেষ্টা করছে এবং

অন্যত্র লক্ষ ডিজিটাল ট্রান্সেকশনকে আয়ত করার দিকে অগ্রসর হচ্ছে। এই কারণে ঋণগ্রহণের বিপরীত দিকে চলিটি হল—অর্থের বহিরে নিয়ে অনেক ক্ষেত্রে মহিলা ঋণগ্রহীতাদের টকা বার করতে দেখা যায়। সেখানে মহিলারা শুধুমাত্র সুদুষ্কটি পরিষেবা করতে পারে এবং আমদানিকৃতের পরিমাপটি সরাসরি পলনের জন্য দায়বদ্ধ থেকে যায়।

মাইক্রোফিনান্স ঋণ হল কমমোডের ঋণ, অন্যদিকে এই অর্থের বহিরের ঋণ হল ঋণগ্রহীতাদের একা সেখানে আমদানিকৃতের বহিরেও থাকে ও সেই সঙ্গে সুদের হারও অনেক বেশি, ৪০ থেকে ৬০ শতাংশ পর্যন্ত।

মহিলা ঋণগ্রহীতাদের ক্ষেত্রে একটি ওকল্পপূর্ণ বিধায় হল, আরবিআই স্বীকৃত অ-নিয়ন্ত্রিত সংস্থা, এমএফআইএন, যেখানে বর্তমানে অর্থমন্ত্রীর অধীনস্থ রিজিট্রার মেকেনিজম (সিটিজারএম) পাঠ্যক অধিকাংশের গ্রহণের ২ পাঠ্যের

অনিশ্চিত সময়ে কম আয়ের মহিলা ঋণগ্রহীতা

১ পাঠ্যের পর

প্রতিকার বাপস্থা। এখানে এর সদস্য সংস্থার মহিলা ঋণগ্রহীতারা তাদের বিভিন্ন আভিযোগ জানাতে পারে ১৮০০ ১০২ ১০৮০এই টোল ফ্রি নম্বরের মাধ্যমে। এমএফআইএন সিটিজারএম পাঠ্য থাকে ১২টি ভাষায়। এখানে দেশের মেকেনিজম রয়েছে, মেকেনিজম গ্রাহকের মহিলা গ্রাহকরা সন্তুষ্টির কাজে দিনে

সকাল ৯টা ৫০ মিনিট থেকে সন্ধ্যা ৫টা ৫০ মিনিটের মধ্যে টোল নম্বরে ফোন করতে পারেন।। সরাসর সুবিধাটি ওই সমস্ত মহিলা থাকেন না, যাঁরা অর্থের বহিরে থকেন ও উৎসের কাছ থেকে নিয়েছেন। অকল্পপূর্ণ স্বীকৃত সমস্ত অনিয়ন্ত্রিত ও প্রত্যাহার বাই থাকা ঋণপলনকারীদের কাছে কক পাঠ্য হয়েই থাকতে হবে।

Publication	News Mania
Edition	Kolkata
Date	October 19, 2020
Page No.	9

Microfinance Sector: a great support for low-income women borrowers in uncertain times

It has now been over two decades that the Microfinance industry has been helping women from the low income and under-served group, achieve financial independence, empowering them to take the right financial decisions. With over 5.80 Crore unique customers as on June 30, 2020, being now served by different entities including the NBFC-MFIs, Banks, the Small Finance Banks or the stand-alone NBFCs, the Indian microfinance sector is undoubtedly changing, especially in these unprecedented Covid-19 times.

Be it the November 2016 Demonetisation and now the 2020 Global Pandemic engulfing the world, the microfinance industry has been playing a stellar role in financial inclusion. In the current situation, where the disbursal of loans has been relatively lower owing to subdued economic activity, most feel there will be a pent-up demand that will be witnessed, and microfinance would continue to serve the women borrowers, giving a helping hand to bounce back, financially, as well as emotionally. Microfinance lending is a formal form of financing for women borrowers, which is not only collateral free, but also there is complete Regulatory oversight by RBI, including on the interest charged which is on a reducing balance basis. The sector is now striving to become cashless and rapidly adopting digital technology to achieve this. In contrast is the informal Financing where on the loans availed from money lenders, the women borrower keeps on



paying interest only and remains obligated for life. Microfinance loans are shorter-term loans, unlike from money lenders which are of far longer duration, with collateral and levied with high interest ranging between 40 to 60 per cent.

One important aspect for women borrowers is MFIN, an RBI-recognised self-regulatory organisation that has a Customer Grievance Redressal Mechanism (CGRM) in place where women borrowers of its Member organisations can place their grievance on its toll-free number 1800 102 1080. MFIN CGRM is available in 12 languages, and women customers from any state, anywhere in the country can call on the toll-free number between 9:30 am to 5:30 pm on weekdays. This unique facility is not available for women borrowers if they take a loan from informal sources; in fact, they are at the mercy of those who operate this unregulated and informal lending.

Source : Press Release

Tamil Nadu

Publication	Dina Thodar
Edition	Chennai
Date	October 16, 2020
Page No.	3

பாதிநாட்டாட்சியின் துறை: திருவாரூர் காவலரின் குற்றம் அறியப்படவில்லை. மேலும் காவலரின் குற்றம் குறித்து தீர்மானம் எடுக்கப்படும்.

[illegible][illegible]

1. *Polysiphonia* spp.
 2. *Polysiphonia* spp.
 3. *Polysiphonia* spp.
 4. *Polysiphonia* spp.
 5. *Polysiphonia* spp.

[illegible][illegible]

1. *...the ... of ...*
 2. *...the ... of ...*
 3. *...the ... of ...*

Address: 10100 Kingsway, Suite 100, Richmond, BC V6X 1A1, Canada
 Phone: (604) 273-8888
 Fax: (604) 273-8889
 E-mail: info@hawaii.com

[illegible]

Publication	Makkalkural
Edition	Chennai
Date	October 19, 2020
Page No.	3

கய தொழில் துவங்க மகளிர் மேம்பாட்டுக்கு குறைந்த வட்டியில் கடன் வழங்கும் மைக்ரோ பைனான்ஸ் அமைப்பு

குறை தீர்ப்பு அமைப்புக்கு புகார் செய்ய தனிப் பிரிவு துவக்கம்

சென்னை, அக்.18
மகளிர் மேம்பாட்டுக்கு கய தொழில் செய்ய அடமானம் இல்லாமல் குறைந்த வட்டியில் குறுகிய கால கடன் வழங்கி உதவுகிறது மத்திய அரசின் மைக்ரோ பைனான்ஸ் அமைப்பு. இந்த கடனை டிஜிட்டல் முறையில் வழங்க இது நடவடிக்கை எடுத்து வருகிறது. மகளிர் இதன் சேவையில் குறை இருந்தால், புகார் செய்ய தனிப் பிரிவு துவக்கப்பட்டுள்ளது.

20 ஆண்டுகளாக மத்திய அரசின் மைக்ரோ பைனான்ஸ் தொழில்துறை குறைந்த வருமானம் மற்றும் குறைவான சேவைகளைப் பெற்ற பெண்களுக்கு நிதி சுதந்திரத்தை அடையவும், சரிவான நிதி முடிவுகளை எடுக்கவும் கடன் அளித்து உதவி வருகிறது.

கடந்த ஜூன் 30த் தேதி நிலவரப்படி 5,80 கோடிக்கு மேற்பட்ட வாடிக்கையாளர்களுடன், இப்போது

வங்கிகள், சிறு நிதி வங்கிகள் அல்லது தனிப்பட்ட நிதி நிறுவனங்கள் உள்ளிட்ட பல்வேறு நிறுவனங்களால் மைக்ரோ பைனான்ஸ் பணியை சேவையாற்றப்படுகின்றன. இந்திய மைக்ரோ பைனான்ஸ் துறை கோவிட்-19 சூழலில் பெண்களுக்கு உதவுவதில் முன்னணியில் உள்ளது.

2016ம் ஆண்டு தவம்பர் பணமதிப்பீழ்ச்சின் போதும், இப்போது 2020 ஏப்ரல்-ஜூன் உலகளாவிய கொரோனா தொற்றினால் போதும், நிதியியல் உள்ளடக்கத்தில், மைக்ரோ பைனான்ஸ் துறை ஒரு முக்கிய பங்கைக் கொண்டுள்ளது.

மைக்ரோ பைனான்ஸ் கடன் என்பது பெண் கடனாளிகளுக்கான முறையான நிதிவசதி ஆகும். இது அடமானங்கள் ஆற்றதாக இருப்பதோடு மட்டுமில்லி. ரிசர்வ் வங்கியின் முழுமையான ஒழுங்குமுறை மேற்பார்வைக்கும் உட்பட்டுள்ளது. இதில் வட்டியானது

குறையும். இந்தத் துறை இப்போது ரொக்கமற்ற முறைக்கு மாற முயற்சித்து வருகிறது இதை அடைய டிஜிட்டல் தொழில்நுட்பத்தை விளரவாக அமல்படுத்துகிறது. மைக்ரோ பைனான்ஸ் கடன்கள் குறுகிய கால கடன்களாகும்.

பெண் கடனாளிகளுக்கான ஒரு முக்கிய அம்சமாக வாடிக்கையாளர் குறை தீர்ப்பு செயல்முறை அறிமுகம் செய்யப்பட்டுள்ளது. அதன் உறுப்பினர் அமைப்புகளில் கடன் வாங்கியுள்ள பல பெண் கடனாளிகள் தங்கள் குறைகளை அதன் கட்டணமில்லா எண் 1800-102-1080-ல் தெரிவிக்கலாம். மொழிகளில் செயல்படும்.மேலும் எந்த மாநிலத்திலிருந்தும், நாட்டின் எந்த இடத்திலிருந்தும் பெண் வாடிக்கையாளர்கள் வார நாட்களில் காலை 9:30 மணி முதல் மாலை 5:30 மணி வரை இந்த கட்டணமில்லா எண்ணை அழைக்கலாம்.

Publication	Malaimalar
Edition	Chennai
Date	October 17, 2020
Page No.	1

பெண்களுக்கு உதவும் மைக்ரோபைனான்ஸ் சேவை

மைக்ரோபைனான்ஸ் தொழில் துறை குறைந்த வருமானம் மற்றும் குறைவான சேவைகளை பெற்ற பெண்களுக்கு நிதி சுதந்திரத்தை அடையவும், சரியான நிதி முடிவுகளை எடுக்கவும் அதிகாரம் அளித்து உதவி வருகிறது. கடந்த ஜூன் 30 நிலவரப்படி 5.80 கோடிக்கு மேற்பட்ட தனித்துவமான வாடிக்கையாளர்களுடன், இப்போது NBFC-MFI-கள், வங்கிகள், சிறு நிதி வங்கிகள் அல்லது தனிப்பட்ட NBFC-கள் உள்ளிட்ட பல்வேறு நிறுவனங்களால் சேவையாற்றப்படுகின்றன. இந்திய மைக்ரோபைனான்ஸ் துறை கோவிட் 19 சூழலில் பெண்களுக்கு உதவுவதில் பெரும் மாற்றத்தை அடைந்து வருகிறது. மைக்ரோபைனான்ஸ் துறை தொடர்ந்து பெண் கடனாளிகளுக்கு சேவை செய்யும் மற்றும் நிதி ரீதியாகவும், உணர்வு ரீதியிலும் மீண்டெழுவதற்கு பெண் கடனாளிகளுக்கு உதவும். மைக்ரோபைனான்ஸ் கடன்கள் குறுகிய கால கடன்களாகும் முறைசாரா கடன் வழங்குநர்களின் அடைமானத்துடன் கூடிய, 40 முதல் 60 சதவிகிதம் வரையிலான வட்டியை கொண்ட நீண்ட கால கடன்களை போன்றதல்ல. பெண் கடனாளிகளுக்கான ஒரு முக்கிய அம்சம், ரிசர்வ் வங்கியின் அங்கீகரிக்கப்பட்ட சுய ஒழுங்குமுறை அமைப்பான MFIN வாடிக்கையாளர் குறை தீர்ப்பு செயல்முறையாகும். அதன் உறுப்பினர் அமைப்புகளில் கடன் வாங்கியுள்ள பெண் கடனாளிகள் தங்கள் குறைகளை அதன் கட்டணமில்லா எண்.18001021080-ல் தெரிவிக்கலாம்.

Publication	Porputhiya Murasu
Edition	Chennai
Date	October 29, 2020
Page No.	2

வினாழக்கீழமை 29.10.2020

பிளர் புதியுறவு

மைக்ரோஃபைனான்ஸ் துறை: நிச்சயமற்ற காலங்களில் குறைந்த வருமானம் கொண்ட பெண் கடனாளிகளுக்கு ஒரு சிறந்த ஆதரவாகத் திகழ்கிறது

சென்னை, அக்.29: ஏறக்குறைய இரண்டு தசாப்தங்களுக்கும் மேலாக மைக்ரோஃபைனான்ஸ் தொழில்துறை குறைந்த வருமானம் மற்றும் குறைவான சேவைகளைப் பெற்ற பெண்களுக்கு நிதி கதத்திரத்தை அடையவும், சரியான நிதி முடிவுகளை எடுக்கவும் அதிகாரம் அளித்து உதவி வருகிறது. ஜூன் 30, 2020 திவவரப்படி 5.80 கோடிக்கு மேற்பட்ட தனித்துவமான

வாடிக்கை யாளர் களுடன், இப்போது ழிவித்சி விதியிகள், வங்கிகள், சிறு நிதி வங்கிகள் அல்லது தனிப்பட்ட ழிவித்சிகள் உள்ளிட்ட பல்வேறு நிறுவனங்களால் சேவையாற்றப்படுகின்றன, இந்திய மைக்ரோஃபைனான்ஸ் துறை சந்தேகத்திற்கு இடமின்றி பெரும் மாற்றத்தை அடைந்து வருகிறது. குறிப்பாக, இந்த முன்னெப்போதும் கண்டிராத கோவிட் 19 சூழலில் பெண்களுக்கு உதவுவதில்.

நவம்பர் 2016 பணமதிப்பிழப்பின் போதும் மற்றும் இப்போது ஏற்பட்டுள்ள 2020 உலகளாவிய தொற்றுநோயின் போதும், நிதியியல் உண்டக்கலில், மைக்ரோஃபைனான்ஸ் துறை ஒரு முக்கிய பங்கைக் கொண்டுள்ளது. தற்போதைய சூழ்நிலையில், வீழ்ச்சியடைந்துள்ள பொருளாதார நடவடிக்கைகளின் காரணமாக கடன்கள் வழங்கல் ஒப்பீட்டளவில் குறைவாகவே உள்ள

நிலையில், பெரும்பாலானவர்கள் தேவைப்பாடு அநிகரித்துக் காணப்படும் என்று கருதுகின்றனர் மற்றும் மேலும் மைக்ரோஃபைனான்ஸ் துறை தொடர்ந்து பெண் கடனாளிகளுக்கு சேவை செய்யும் மற்றும் நிதி ரீதியாகவும், உணர்வு ரீதியிலும் மீண்டெழுவதற்கு பெண் கடனாளிகளுக்கு உதவும். மைக்ரோஃபைனான்ஸ் கடன் என்பது பெண் கடனாளிகளுக்கான முறையான நிதியுதவி ஆகும், இது

அடைமானங்கள் அற்றதாக இருப்பதோடு மட்டுமின்றி, ரிசர்வ் வங்கியின் முழுமையான ஒழுங்குமுறை மேற்பார்வைக்கும் உட்பட்டுள்ளது. இதில் வட்டியானது குறையும் மீதத்தின் அடிப்படையில் குறைக்கப்படுகிறது. இந்தத் துறை இப்போது ரொக்கமற்ற முறைக்கு மாற முயற்சித்து வருகிறது மற்றும் இதை அடைய டிஜிட்டல் தொழில்நுட்பத்தை விரைவாக அமல்படுத்துகிறது.

Publication	Malaimurasu
Edition	Chennai
Date	October 18, 2020
Page No.	1

அதிக வாட்டியில் இருந்து மீள பெண்களுக்கு உதவும் குறுந்தீ அமைப்பு!

மதுரை, அக்.18-

நவம்பர்.2016 பணமதிப்பீழ்வின் போதும் மற்றும் இப்போது ஏற்பட்டுள்ள 2020 உலகளாவிய தொற்றுநோயின் போதும், நிதியியல் உள்னாக்கலில், மைக்ரோபைனான்ஸ் துறை ஒரு முக்கிய பங்கைக் கொண்டுள்ளது.

தற்போதைய சூழ்நிலையில், வீழ்ச்சியடைந்துள்ள பொருளாதார நடவடிக்கைகளில் காரணமாக கடன்கள் வழங்கல் ஒப்பீட்டளவில் குறைவாகவே உள்ள நிலையில், பெரும்பாலானவர்கள் தேவைப்பாடு அதிகரித்துக் காணப்படும் என்று கருதுகின்றனர். மேலும் மைக்ரோபைனான்ஸ் துறை தொடர்ந்து பெண் கடனாளிகளுக்கு சேவை செய்வும் மற்றும் நிதி ரீதியாகவும் உணர்வு ரீதியிலும் மீண்டெழுவதற்கு பெண் கடனாளிகளுக்கு உதவும்.